CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महर्षिव्यासप्रण

काशीखण्डान्तर्ग

श्रीगङ्गासहस्त्रनामस्तोत्रम्

व्याख्याद्वयोपेतम्

6.2

कुलपति-श्रीविद्यानिवासमिश्रप्रोचनया

समलङ्कृतम्

सम्पादकः

आचार्यश्रीकरुणापतित्रिपाठी

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्ववि

वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ublic Domain. Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

LAGHU-GRANTHAMĀLĀ

[Vol. 50]

GAṄGĀSAHASRANĀMASTOTRA

OF

MAHARṢI VYĀSA

with the Commentaries

'RĀMĀNANDĪ'

By

ŚRĪ RĀMĀNANDĀCĀRYA

&

'NĀRĀYAṆĪ'

By

SRĪ NĀRĀYAṆAPATI TRIPĀṬHĪ

Edited By

ĀCĀRYA ŚRĪ KARUṆĀPATI TRIPĀṬHĪ

Ex-Vice-Chancellor

Sampurnanand Sanskrit University

Varanasi

&

Ex-President

Uttar Pradesh Sanskrit Academy

Lucknow

VARANASI

1992

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Research Publication Supervisor—
Director, Research Institute,
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi.

□

Published by—
Dr. Harish Chandra Mani Tripathi
Publication Officer,
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi-221 002.

□

Available at—
Sales Department,
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi-221 002.

□

First Edition, 500 Copies
Price Rs. 20.00

□

Printed by—
Ratna Printing Works
B 21/42 A, Kamachha
Varanasi-221 010.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऊर्मिला शर्मा
—२०५८—

लघु-ग्रन्थमाला
[५०]

महर्षिव्यासप्रणीतं

काशीखण्डान्तर्गतं

श्रीगङ्गासहस्रनामस्तोत्रम्

श्रीरामानन्दाचार्यकृतया
'रामानन्दी' व्याख्यया

पण्डितश्रीनारायणपतित्रिपाठिकृतया
'नारायणी' व्याख्यया च
समलङ्कृतम्

सम्पादकः
आचार्यश्रीकरुणापतित्रिपाठी
कुलपतिचरः,
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य
वाराणसी,
अध्यक्षचरश्च,
उत्तरप्रदेश-संस्कृताकादम्याः
लखनऊ

वाराणस्याम्
२०४९ तमे वैक्रमाब्दे १९१४ तमे शकाब्दे १९९२ तमे खैस्ताब्दे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुसन्धानप्रकाशनपर्यवेक्षकः —
निदेशकः, अनुसन्धान-संस्थानस्य
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालये
वाराणसी ।

प्रकाशकः —
डॉ० हरिश्चन्द्रमणित्रिपाठी
प्रकाशनाधिकारी,
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य
वाराणसी-२२१ ००२.

प्राप्तिस्थानम्—
विक्रय-विभागः,
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य
वाराणसी-२२१ ००२.

प्रथमं संस्करणम्, ५०० प्रतिरूपाणि
मूल्यम् –२० = ०० रूप्यकाणि

मुद्रकः—
रत्ना प्रिंटिंग वर्क्स,
बी २१/४२ ए, कमच्छा,
वाराणसी-२२१ ०१०.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्ररोचना

स्कन्दमहापुराणस्य "**काशीखण्डे**" एकं '**गङ्गासहस्रनामस्तोत्रं**' विद्यते। इदं स्तोत्रम् अकारादिक्रमेण प्रतिवर्णमारभ्य नाम्नां ग्रथनम्। अथ च गङ्गाभगवत्याः सहस्रनाम्नामद्भुतं पाण्डित्यपूर्णं व्युत्पत्तिप्रदर्शनञ्च। अस्य स्तोत्रस्योपरि **श्रीरामानन्दाचार्याणां** संस्कृतव्याख्या तथा च **पण्डितश्रीनारायणपतित्रिपाठिमहाभागानां** हिन्दीव्याख्याऽपि वर्तते। उभाभ्यां व्याख्याभ्यां स्तोत्रमिदं सौकर्यं भजते।

इदं स्तोत्रं भक्तजनानां महते कल्याणाय पृथक्तया काशीखण्डादुद्धृत्य प्रकाश्यते। अस्य स्तोत्रस्य सम्पादकैः **पण्डितश्रीकरुणापतित्रिपाठिमहोदयैः** स्वकीयायां भूमिकायां नव-नवानि ज्ञातव्यानि तथ्यानि ग्रथितानि। स्तोत्रसाहित्यस्य कियती सुदीर्घपरम्परा संस्कृतसाहित्ये वर्तते, इत्यस्य सोदाहरणं सविमर्शनञ्च निदर्शनं भूमिकायामवलोकनीयम्। एवंविधं सारस्वतकार्यं निरन्तरं विदधानेभ्यः **पण्डितश्रीकरुणापतित्रिपाठिमहोदयेभ्यः** सादरं प्रणामं निवेदयामि।

वाराणस्याम्
विजयदशम्याम्,
२०४९ वैक्रमाब्दे

विद्यानिवासमिश्रः
कुलपतिः,
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सम्पादकीयं निवेदनम्

काशीखण्डोक्तं श्रीगङ्गासहस्रनामातिविशिष्टमतिमहत्पुण्यफलदम् । काश्यां निवासेनात्र तपश्चर्यया, यत्र कुत्रापि विविधव्रतोद्यापन-गङ्गास्नान-दान-यजनोपवास-यात्रा-दर्शन-पूजनानुष्ठानादिभिर्यानि शुभफलानि लभ्यन्ते, तेषामवाप्तिः केवलं नित्यं प्रातः स्नात्वा शुचिर्भूत्वा सन्ध्योपासनादीनि कृत्वा श्रीगङ्गासहस्रनामस्तोत्रपाठेन लभ्यते । येन केनापि कारणेन गङ्गास्नानवञ्चिताः, अप्राप्तगङ्गादर्शनाः, गङ्गाजलस्पर्शविरहिताः, भागीरथीवारिमज्जन-स्नान-पानहीना नरास्तानि सर्वाणि फलानि प्राप्नुवन्ति, निरयं नैव पश्यन्ति ।

अस्य सहस्रनामस्तोत्रस्य यद्वैलक्षण्यं तत्तु श्रीगङ्गासहस्रनामस्तोत्रपरिचयप्रसङ्गे वर्णितम् । श्रद्धालुजनानां पाठाय प्रायशोऽविज्ञातमेतद् सहस्रनामस्तोत्रं पुस्तकाकारेण काशीखण्डादादाय सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य वाराणसीस्थानां कुलपतीनां प्रेरणया प्रकाशनाधिकारिणश्च सत्प्रयासेन पृथक् प्रकाश्यते ।

एतेनैव प्रसङ्गेनान्येषां केषाञ्चन प्रसिद्धानां समुपलब्धानां मुद्रितानां सहस्रनामस्तोत्राणां परिचयोऽपि संक्षेपेणात्र प्रस्तूयते । एतदर्थं विश्वविद्यालयस्य कुलपतिमहाभागाः, डॉ० विद्यानिवासमिश्रा आर्यमिश्राः सर्वतःप्रथमप्रेरणदानस्य कृते भूरिशो धन्यवादार्हाः । संस्कृतविश्वविद्यालयीयसरस्वतीभवनपुस्तकालयाध्यक्षाः श्रीमन्तो डॉ० विजयनारायणमिश्रमहोदया अपि ग्रन्थान् सुलभीकृतवन्तः । तेऽपि मम हार्दिकधन्यवादभाजिनः । आचार्यशिवदत्तमिश्रशास्त्रिणोऽप्यावश्यकसामग्रीप्रदानेनाशीर्वादभाजः । सर्वतोऽधिकञ्च सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य वाराणसेयस्य प्रकाशनाधिकारिणो डॉ० हरिश्चन्द्रमणित्रिपाठिनः खलु साशीर्वादसाधुवादार्हाः, येषां प्रयासेनाद्यन्तीयेनेयं रचना प्रकाश्यतामानीता ।

वाराणसीस्थस्य रत्नामुद्रणालयस्य स्वत्वाधिकारी श्रीयुतो विपुलशङ्करपण्ड्यामहोदयोऽपि धन्यवादार्हः । यतो यतो येषां सहायता गृहीता, तेऽप्यतितरां मदीयाभारभाजः । त्रुटयर्थं च सम्पादकोऽपि क्षमार्ह इति दिक् ।

वाराणस्याम्
अनन्तचतुर्दश्याम्,
वि० सं० २०४९

सम्पादकः
करुणापतित्रिपाठी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रस्तावना

॥ ॐ श्रीगङ्गायै नमः ॥

महर्षि व्यास-प्रणीत स्कन्दपुराणान्तर्गत

काशीखण्ड (अ० २९) का 'गङ्गासहस्रनाम' स्तोत्र

मातः शैलसुता-सपत्नि ! वसुधाशृङ्गारहारावलि !
स्वर्गारोहणवैजयन्ति ! भवतीं भागीरथीं प्रार्थये।
त्वत्तीरे वसतस्त्वदम्बु पिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेङ्खत-
स्त्वन्नामस्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्मे शरीरव्ययः[1] ॥
(महर्षि वाल्मीकिविरचित 'गङ्गाष्टक' से)

'गङ्गासहस्रनामस्तोत्र' की 'काशीखण्ड' में बड़ी महिमा बताई गई है। गङ्गा की महत्ता किसी भी दृष्टि से—आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक, भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक, वैज्ञानिक एवं रासायनिक विचार से—अपार है।

इस सन्दर्भ में प्रास्ताविक दो शब्द लिखने से पहले मैं यहाँ 'सहस्रनामस्तोत्रों' के परिचयात्मक परिवेश पर कुछ निवेदन करना चाहता हूँ।

(क) प्रमुख सहस्रनामस्तोत्रों का संक्षिप्त परिचय

[१]

श्रीविष्णुदिव्यसहस्रनामस्तोत्र

'श्रीविष्णुदिव्यसहस्रनामस्तोत्र' सम्भवतः इस विधा का प्रथम स्तोत्र है। यह उपलब्ध है महर्षि व्यास-प्रणीत, शतसाहस्री-संहिता अर्थात् 'महाभारत' में। उक्त महाग्रन्थ के अनुशासन पर्व के अन्तर्गत भीष्म और युधिष्ठिर-संवाद रूप में यह गुंफित है। अतः अनुमान किया जा सकता है कि यह सहस्रनामस्तोत्र अतिप्राचीन है।

'श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्र' प्राचीन भी है और दिव्य भी है, प्रामाणिक भी है और प्राचीनतर भी है। संवत् १९८१ में मुद्रित एवं गुटका श्रीमद्भगवद्गीता के अन्त में प्रकाशित इस स्तोत्र के अन्त में लिखा है—

---

१. (शिव के सिर की जटा पर चढ़ी रहने से) हे पार्वती की सपत्नी (सौत) ! हे धरती के शृङ्गार की हारमाला ! हे स्वर्गारोहणरूप सोपान की विजयवैजयन्ती ! आप भागीरथी से मैं विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि आपके निकटस्थ तीर में मुझे वास करने का सौभाग्य मिले। मुझे सदा गङ्गाजल पीने को मिले। आपकी तरङ्गावली को निहारता रहूँ। सदा आपके नामों का स्मरण करता रहूँ और आपको निहारता-निहारता मेरा यह शरीर छूटे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्रयां संहितायां वैयासिक्यामनुशासनिके पर्वणि भीष्मयुधिष्ठिरसंवादे श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रम्"[१]।

इससे इतना तो प्रमाणित हो ही जाता है कि उक्त स्तोत्र 'महाभारत' के अनुशासन पर्व से उद्धृत है।

इस 'दिव्यश्रीविष्णुसहस्रनाम' की एक विशेषता है कि इसे 'दिव्य' विशेषण से आख्यात किया गया है।

दूसरी एक और भी विशेषता है। उसका इस सन्दर्भ में संकेत मात्र किया जा रहा है। परमाद्वैतवादी, शाङ्कराद्वैत के उन्नायक, आचार्य गोविन्दपाद के शिष्य, अद्वैताचार्य, श्रीशङ्कराचार्य ने इस पर भाष्य लिखा है। इस 'भाष्य' को अथवा व्याख्या को उतना ही महत्त्व प्राप्त है, जितना कर्म-भक्ति-ज्ञानयोगमण्डित 'श्रीमद्-भगवद्गीता' के भाष्य को। इस विषय में जिज्ञासुगण स्वयं मनन-चिन्तन-अध्ययन करें। इस विषय का उपसंहार करते हुए इतना ही कथ्य है। 'विष्णुसहस्रनामस्तोत्र' की अवतरणिका में बताया गया है कि मुनि वैशम्पायन ने भीष्म-युधिष्ठिर-संवादरूप इस स्तोत्र का अनुशासन पर्व में वर्णन किया है।

भारत राष्ट्र में सर्वाधिक प्रचलित 'सहस्रनामस्तोत्र' श्रीविष्णुदिव्यसहस्रनामस्तोत्र है। यह दिव्य भी है, पूज्य भी है, प्रशस्त भी है और समस्त वैष्णव-सम्प्रदायों या 'भागवत-सम्प्रदाय' की समस्त शाखाओं, उपशाखाओं में आदर के साथ इसका पाठ प्रचलित है, 'माध्वसम्प्रदाय', 'विशिष्टाद्वैतसम्प्रदाय', 'केवलाद्वैतसम्प्रदाय', 'शुद्धाद्वैतसम्प्रदाय', 'अचिन्त्यभेदाभेदसम्प्रदाय' तथा समस्त 'राधावल्लभ'; 'हरिदासी टट्टी' आदि सम्प्रदायों में समान रूप से आदृत है[२]।

---

१. इसके पूर्व और पश्चात् भी यह विष्णुसहस्रनामस्तोत्र अनेक प्रकाशकों, संस्थाओं आदि द्वारा मुद्रित/प्रकाशित है। पुस्तकागारों, ग्रन्थालयों और विद्वानों एवं श्रद्धालु जनों के घर में इसकी सहस्रों पाण्डुलिपियाँ, मुद्रित प्रतियाँ बिखरी पड़ी हैं। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व-विद्यालय, वाराणसी के हस्तलिखित और मुद्रित ग्रन्थागारों में भी सैकड़ों प्रतियाँ विद्यमान हैं।

यह भी अपने आप में अनुसन्धान का एक बिन्दु है कि इस 'दिव्यसहस्रनामस्तोत्र' का प्राचीनतम हस्तलेख कौन और कहाँ है? [सम्पादक]

२. 'श्रीविष्णुदिव्यसहस्रनामस्तोत्र' के अन्त में एकत्र बताया गया है श्रीवासुदेव श्रीकृष्ण के मुख से—

'ये मां नामसहस्रेण स्तोतुमिच्छन्ति मानवाः।
सोऽहमेकेन श्लोकेन भविष्यामि न संशयः'॥

[अर्थात् जो मनुष्य सहस्रनामों से मेरी स्तुति करते हैं, वे (किसी कारणवश वैसा करने में असमर्थ होने पर) निम्नोक्त एक श्लोक के पाठ से 'सहस्रनाम-पाठ' का फल पा सकते हैं।] वह श्लोक है—

'नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्त्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः॥'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'गीताप्रेस, गोरखपुर' से प्रकाशित तथा कतिपय अन्य प्रकाशनों में 'महाभारत' के श्रीविष्णुदिव्यसहस्रनामस्तोत्र में केवल पद्यात्मक सहस्रनाम और फलश्रुति के साथ माहात्म्य मात्र है। वह भीष्म-युधिष्ठिर-संवादात्मक है। भीष्मपितामह वक्ता हैं तथा युधिष्ठिर श्रोता हैं।

परन्तु अनेक अन्य संस्करणों में ध्यान और विनियोग भी है, जो निम्नोक्त प्रकार से उपलब्ध है (जो वैष्णवों की परम्परा में प्रचलित है)—

ऋषिर्नाम्नां सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः।
छन्दोऽनुष्टुप् तथा देवो भगवान् देवकीसुतः॥
अमृतांशूद्भवो बीजं शक्तिर्देवकिनन्दनः।
त्रिसामा हृदयं तस्य शान्त्यर्थे विनियुज्यते॥
विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्।
अनेकरूपदैत्यान्तं नमामि पुरुषोत्तमम्॥'

अर्थात् विनियोग का स्वरूप होगा—

'अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य वेदव्यासो भगवानृषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीविष्णुः परमात्मा श्रीमन्नारायणो देवता, अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम्, देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तिः, त्रिसामासामगः सामेति हृदयम्, शङ्खभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम्, शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम्, रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य इति कवचम्, उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मन्त्रः, श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः'।

इसी भाँति अङ्गुल्याद्यङ्गन्यास-शिरसादिन्यास भी हैं। ध्यान के मन्त्र (छन्द) अनेक हैं—

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥ १॥

क्षीरोदन्वत्प्रदेशे शुचिमणिविलसत्सैकते मौक्तिकानां
मालाक्लृप्तासनस्थः स्फटिकमणिनिभैर्मौक्तिकैर्मण्डिताङ्गः।
शुभ्रैरभ्रैरदभ्रैरुपरिपरिचितैर्मुक्तपीयूषवर्षै-
रानन्दी नः पुनीयादरिनलिनगदाशङ्खपाणिर्मुकुन्दः॥ २॥

भूः पादौ यस्य नाभिर्वियदसुरनिलश्चन्द्रसूर्यौ च नेत्रे
कर्णावाशाः शिरो द्यौर्मुखमपि दहनो यस्य वास्तेयमब्धिः।
अन्तस्थं यस्य विश्वं सुर-नर-खग-गो-भोगि-गन्धर्वदैत्यै-
श्चित्रं रंरम्यते तं त्रिभुवनवपुषं विष्णुमीशं नमामि॥ ३॥

मेघश्यामं पीतकौशेयवासं श्रीवत्साङ्कं कौस्तुभोद्भासिताङ्गम्।
पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं वन्दे विष्णुं सर्वलोकैकनाथम्॥ ४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।
सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ॥ ५ ॥

वैष्णव या भागवत सम्प्रदाय वालों के अनुष्ठानों में विशेष रूप से और पञ्चदेवोपासक स्मार्तों के अनुष्ठानों में सामान्य रूप से उपर्युक्त विनियोग और ध्यान प्रचलित है।

[२]

श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्र

श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्र (नारदपञ्चरात्रोक्त)—

श्रीकृष्णदासात्मज खेमराज द्वारा 'श्रीवेङ्कटेश्वर स्टीम्-प्रेस, बम्बई' से संवत् २०२९ वि० में 'शाक्तप्रमोद' नामक एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ मुद्रित एवं प्रकाशित हुआ। इसका संग्रहण एवं संग्रथन किया है, शिवहरराजराजधानो के राजा श्रीराजा देवनन्दन सिंह महाराज ने। इसमें दश महाविद्याओं की दशाङ्ग उपासना-अर्चना-पद्धति आदि के साथ सबके सहस्रनामस्तोत्र भी हैं। तदतिरिक्त पञ्चायतन, स्मार्त्त पंचदेवों की पूजाविधि और उनके सहस्रनामस्तोत्र भी संकलित हैं। इसमें कुल सत्रह तन्त्र हैं।

उसमें एक अन्य 'श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्र' भी है। उसके अन्त में मुद्रित है—'इति श्रीनारदपञ्चरात्रोक्तं श्रीविष्णोर्नामसहस्रं समाप्तम्'। यह श्रीविष्णु-सहस्रनामस्तोत्र उपस्थापित है श्रीमहादेव और श्रीभगवान् के संवाद-माध्यम से। द्वितीयवक्ता और श्रोता हैं महादेव शंकर और महादेवी गिरिराजनन्दिनी। इस विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का विनियोग है—

'अस्य श्रीविष्णोः सहस्रनाममन्त्रस्य महादेव ऋषिः, परमात्मा देवता, सूर्य-कोटिप्रतीकाश इति बीजम्, गङ्गातीर्थोत्तमा शक्तिः, प्रपन्नाशनिपञ्जर इति कीलकम्' इत्यादि। एतदनन्तर अङ्गुष्ठादि न्यास है। तदनन्तर 'सर्वपापक्षयार्थं सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थम्, श्रीविष्णोर्नामसहस्र-जपे विनियोगः'।

ध्यान है—

'विष्णुं भास्वत्किरीटाङ्गदवलयगणाकल्पहारोदराङ्घ्रि-
श्रोणीभूषं सुवक्षोमणिमकरमहाकुण्डलं मण्डितासम्।
हस्तोद्यच्चक्रशङ्खाम्बुजगदममलं पीतकौशेयवासो
विद्युद्भासं समुद्यद्दिनकरसदृशं पद्महस्तं नमामि॥'

ध्यानानन्तर सहस्रनामस्तोत्र है—

'ॐ वासुदेवः परब्रह्म परमात्मा परात्परम्।
परं धाम परं ज्योतिः परं तत्त्वं परम्पदम्'॥ ११॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आरम्भ है ११वें 'अनुष्टुप्' से तथा समाप्ति है १८३ वें पद्य से—

'सिंहो मृगेन्द्रो नागेन्द्रो वासुकिः भूधरो नृपः।
वर्णेशो ब्राह्मणश्चान्तःकरणाग्रयं नमो नमः' ॥ १८३ ॥

२२२ वें पद्य तक महिमा-फलश्रुति आदि के अनन्तर प्रसिद्ध एक पद्य—

'राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥

बताया गया है। स्तोत्र का स्रोत आरम्भ में ही (नारद-पञ्चरात्र) बता दिया गया है।

[३]

श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्र

वृन्दावनबिहारी, गोवर्द्धनधारी, निखिलगोपीजन-वल्लभ राधामाधव की उपासना में इस स्तोत्र की विशिष्ट और जागरूक महिमा है। इस स्तोत्र की मुख्य श्रोता पार्वती हैं और मुख्य वक्ता हैं पार्वतीवल्लभ शिव। वृन्दावनबिहार के लिए गोपालरूपधारी निराकार-निरञ्जन, प्रभु नारायण इसके उपास्य हैं। राधामाधव की युगुलोपासनामयी प्रेमाश्रित भक्ति इसका केन्द्र है। 'राधावल्लभ'-सम्प्रदाय, 'चैतन्य'-सम्प्रदाय, 'टट्टी'-सम्प्रदाय, 'सखी'-सम्प्रदाय, और 'माध्व', 'वल्लभ' आदि कृष्णभक्ति के नाना सम्प्रदायों में इस सहस्रनामस्तोत्र की विशेष भक्तप्रियता है। इस सहस्रनाम-स्तोत्र के एक द्रष्टा नारद ऋषि भी हैं।

श्रीगोपालसहस्रनाम स्तोत्र का विनियोग निम्नोक्त है—

'अस्य श्रीगोपाल-सहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीगोपालो देवता, कामो बीजम्, माया शक्तिः, चन्द्रः कीलकम्, श्रीकृष्णचन्द्रभक्तिप्राप्तये श्रीगोपालसहस्रनाम-स्तोत्रजपे विनियोगः'। इस स्तोत्र के अङ्गुल्यादि और हृदयादि न्यास भी अनुष्ठानोपासना में प्रचलित हैं।

इसके ध्यानात्मक नीचे उद्धृत दो छन्द परम प्रसिद्ध हैं—

'कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः ॥ १ ॥

फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गो-गोपसंघावृतं
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस सहस्रनामस्तोत्र का आरम्भ होता है—

'ॐ क्लीं देवः कामदेवः कामबीजशिरोमणिः ।
श्रीगोपालो महापालो वेदवेदान्तपारगः ॥ १ ॥

और समापन है १४२ श्लोक की अर्द्धाली से—

'अपारकरुणासिन्धुर्भगवान् भक्ततत्परः' ॥ १४२ ॥

आरम्भ में प्रस्तावनात्मक, पीठिकात्मक २३ पद्य हैं और अन्त में माहात्म्य-फलश्रुति आदि परक २६ श्लोक हैं। इसका स्रोत बताया गया है "सम्मोहनतन्त्र"—

'ॐतत्सदिति संमोहनतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रम्' ।

[४]

पुरुषोत्तमसहस्रनामस्तोत्र[1]

यह सहस्रनामस्तोत्र विशिष्ट है। इसके संकलयिता हैं 'महाप्रभु वल्लभाचार्य'। वे पुष्टि मार्ग के प्रवर्त्तक हैं। इसकी विशेषता यह है (जैसा स्तोत्रोपक्रम में निर्दिष्ट है—)

'पुराणपुरुषो विष्णुः पुरुषोत्तम उच्यते ।
नाम्नां सहस्रं वक्ष्यामि यस्य भागवतोद्धृतम्' ॥ १ ॥

अर्थात् इस सहस्रनामस्तोत्र में परिगणित भगवान् पुरुषोत्तम के सहस्रनाम 'श्रीमद्भागवतमहापुराण' के प्रथम स्कन्ध से लेकर क्रमशः—यथा तत्रादौ प्रथमस्कन्धीयनामानि। इसी क्रमानुसार अन्त में—'अतः परं द्वादशस्कन्धीयनामानि' है। इसका विनियोग पद्यात्मक दिया गया है—

'कृष्णनामसहस्रस्य ऋषिरग्निर्निरूपितः ।
गायत्री च तथा छन्दो देवता पुरुषोत्तमः ॥

विनियोगः समस्तेषु पुरुषार्थेषु वै मतः ।
बीजं भक्तप्रियः शक्तिः सत्यवागुच्यते हरिः ॥

भक्तोद्धरणयत्नस्तु मन्त्रोऽथ परमो मतः ।
अवतारितभक्तांशः कीलकं परिकीर्तितम् ॥

अस्त्रं सर्वसमर्थश्च गोविन्दः कवचं मतम् ।
पुरुषो ध्यानमात्रोक्तं सिद्धिः शरणसंस्मृतिः ॥

१. यह सहस्रनामस्तोत्र 'पुष्टिमार्गीय स्तोत्ररत्नाकर' में मुद्रित है। प्रकाशक है—'संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'। इसका तृतीय संस्करण सन् १९८२ ई० का है। वहीं से इसे लिया गया है। प्रथम संस्करण नहीं मिला।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपर्युक्त विनियोग के पश्चात् उपर्युक्त क्रम से सहस्रनामों का संकलन है। लम्बे-लम्बे नाम अधिक हैं। यथा—

'वसुदेवज्ञाननिष्ठसमजोवनिवारकः'। आदि।

आरम्भ है—

"श्रीकृष्णः सच्चिदानन्दो नित्यलीलाविनोदकृत्।
सर्वागमविनोदी च लक्ष्मीशः पुरुषोत्तमः" ॥ (श्लो० सं० ९ से)

और अन्त है—

"आदित्यान्तर्गतः कालो द्वादशात्मसुपूजितः।
श्रीभागवतरूपश्च सर्वार्थफलदायकः" ॥ (श्लो० सं २४८ से)

इसके विषय में कहा गया है—

"हृर्यावेशितचित्तेन श्रीभागवतसागरात्।
समुद्धृतानि नामानि चिन्तामणिनिभानि हि" ॥ २५२ ॥

अन्त में मुद्रित है स्रोत के रूप में—

'इति श्रीभागवतसारसमुच्चये वैश्वनरोक्तपुरुषोत्तमनामसहस्रं सम्पूर्णम्'।

[५]

श्रीरामसहस्रनामस्तोत्र एवं रामसहस्रनामावली

पं० श्रीशिवदत्त मिश्र द्वारा सम्पादित 'श्रीरामरहस्य' 'श्रीरामसहस्रनाम-स्तोत्र' है। इसका विनियोग है—

"अस्य श्रीरामसहस्रनाममालामन्त्रस्य भगवानीश्वर ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीरामः परमात्मा देवता, श्रीमन्महाविष्णुरिति बीजम्, गुणभृन्निर्गुणो महानिति शक्तिः, संसारतारको राम इति मन्त्रः, सच्चिदानन्दविग्रह इति कीलकम्, अक्षयः पुरुषः साक्षीति कवचम्, अजेयः सर्वभूतात्मा इत्यस्त्रम्। राजीवलोचनः श्रीमानिति ध्यानम्, श्रीरामप्रीत्यर्थे दिव्यसहस्रनामजपे विनियोगः"। (इसे भी दिव्यसहस्रनाम कहा गया है।)

इसके ध्यानात्मक दो पद्य हैं—

'विज्ञानहेतुं विमलायताक्षं प्रज्ञानरूपं स्वसुखैकहेतुम्।
श्रीरामचन्द्रं हरिमादिदेवं परात्परं राममहं भजामि ॥

तत्त्वस्वरूपं पुरुषं पुराणं स्वतेजसा पूरितविश्वमेकम्।
राजाधिराजं रविमण्डलस्थं विश्वेश्वरं राममहं भजामि' ॥

यह सहस्रनामस्तोत्र पद्यात्मक है। ध्यान के अनन्तर ही इसका प्रारम्भ है—

'ॐ रामः श्रीमान् महाविष्णुर्जिष्णुर्देवहितावहः।
तत्त्वात्मा तारकं ब्रह्म शाश्वतः सर्वसिद्धिदः' ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समापन है—१२० वें पद्य से—

'श्रीशः शरण्यो भूतानां संश्रिताभीष्टदायकः।
अनन्तः श्रीपती रामो गुणभृन्निर्गुणो महान्' ॥ १२० ॥

अन्त में कहा गया है—

'एवमादीनि नामान्यसंख्यात्यपराणि च'।

तदनन्तर सात पद्यों में फलश्रुति के साथ यह समाप्त होता है। इसका स्रोत बताया गया है—'शिवपुराण' का उमा-महेश्वर-संवाद।

रामसहस्रनामावली—('रामरहस्य' में ही है।) उपर्युक्त सहस्रनामस्तोत्र से भिन्न है यह 'रामसहस्रनामावली'।

इसमें राम के चतुर्थी विभक्त्यन्त एवं 'नमः' से युक्त सहस्रनाम हैं। यह 'सहस्रनामावली' भिन्न है। पूर्वोक्त 'सहस्रनामस्तोत्र' पर यह आधारित नहीं है। इसका विनियोग है—'ॐ श्रीरामचन्द्रसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य भगवान् शिव ऋषिः, अनुष्टुप्-छन्दः, श्रीरामसीतालक्ष्मणा देवताः, चतुर्वर्गप्राप्त्यर्थं विनियोगः'। इसके पश्चात् अङ्गुल्यादि और हृदयादि न्यास हैं। ध्यान है (रामरक्षास्तोत्र के आरम्भ वाला)—

'ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशर-धनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्द्धिनेत्रं प्रसन्नम्।
वामाङ्कारूढसीता-मुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम्' ॥

एतदतिरिक्त भी दो प्रसिद्ध छन्द ध्यान के उल्लिखित हैं। ध्यान के पश्चात् तुरन्त 'नमः' अन्त वाले सहस्रनाम दिये गये हैं।

इस 'सहस्रनामावली' की भी वही विशिष्टता है, जो 'श्रीगङ्गासहस्रनामस्तोत्र' की है। अर्थात् अकारादि क्रम से आरम्भ होकर 'ज्ञ'कारादि नाम अन्तिम है। यथा—(१) 'ॐ अनादये नमः, (२) ॐ अधिवासाय नमः' से आरम्भ होकर (९९९) ॐ क्षेमप्रदाय नमः, (१०००) ॐ ज्ञानप्रदाय नमः'।

इस सहनस्रामावली का स्रोत है 'रुद्रयामल' नामक तन्त्रशास्त्र का अतिप्रसिद्ध ग्रन्थ।

[६]

हनुमत्सहस्रनामस्तोत्र

रामसहस्रनामस्तोत्र के साथ ही कदाचित् रामभक्त 'हनुमत्सहस्रनाम' की चर्चा कर देना अप्रासंगिक न होगा।

'हनुमत्सहस्रनामस्तोत्र' 'ब्रह्माण्डपुराण' के उत्तर खण्ड में आता है। 'ब्रह्माण्ड-पुराण' के अनुसार इसका उपस्थापन भी पौराणिक शैली में किया गया है। इसके प्रश्नकर्त्ता (श्रोता) हैं ऋषिगण और वक्ता (उत्तरदाता) हैं महर्षि वाल्मीकि—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'ऋषे ! लोहगिरिं प्राप्तः सीताविरहकातरः।
भगवान् किं विधाद्रामस्तत्सर्वं ब्रूहि सत्वरम्' ॥

अर्थात्—'सीता के विरह से दुःखी श्रीराम ने लोहगिरि (ऋष्यमूक पर्वत) के पास पहुँच कर क्या किया—इसका पूर्ण विवरण कृपया सुनाइये'।

इसके उत्तर में—('वाल्मीकिरुवाच') वाल्मीकि महर्षि ने बताया—

"मायामानुषदेहोऽयं ददर्शाग्रे कपीश्वरम्।
हनुमन्तं जगत्स्वामी बालार्कसमतेजसम् ॥
स सत्वरं समागम्य साष्टाङ्गं प्रणिपत्य च।
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा हनुमान् राममब्रवीत्" ॥

हनुमानुवाच—

"धन्योऽस्मि कृतकृत्योऽस्मि दृष्ट्वा त्वत्पादपङ्कजम्।
योगिनामप्यगम्यं च संसारभयनाशनम् ॥
पुरुषोत्तम ! देवेश ! कर्त्तव्यं तन्निवेद्यताम्" ॥

सारांश यह है—"परात्पर ब्रह्म श्रीराम ने, दाशरथि ने, हनुमान् को अपनी माया से धारण किये हुए मानुष देह का दर्शन कराया। हनुमान् भी प्रातःकालीन सूर्य-सम तेज वाले शरीरधारी थे। कपीश्वर को उस मूल और मायामय रूप की पहचान हो गई। उन्होंने समीप आकर साष्टाङ्ग प्रणिपात किया और हाथ जोड़कर राम से कहा—'भगवन्, मेरा धन्यभाग्य है, मैं कृतकृत्य हो गया हूँ (जो आपके दर्शन मिले, आपके चरणकमलों का साक्षात्कार हुआ)। यह चरणकमल-दर्शन योगिजनदुर्लभ भी है और भवभीति का नाशक भी है। अतः हे पुरुषोत्तम ! अब मुझे क्या करना है, इसकी आज्ञा दें"।

इस पर श्रीराम ने अपना वृत्तान्त बताते हुए कहा—

"जनस्थानं कपिश्रेष्ठ कोऽप्यागत्य विदेहजाम्।
हृतवान् विप्रसंवेशो मारीचानुगते मयि ॥
गवेष्य साम्प्रतं वीर ! जानकीहरणे वर !।
त्वया गम्यो न को देशस्त्वं च ज्ञानवतां वरः ॥
सप्तकोटिमहामन्त्र-मन्त्रितावयवः प्रभुः" ॥

भाव यह है कि श्रीराम ने जनस्थान निवास-काल की उस घटना से हनुमान् को अवगत कराया, जब वे मृगरूपधारी मारीच का पीछा करते हुए दूर चले गये थे। इसी बीच ब्राह्मणवेशधारी 'कोई' जानकी का हरण कर ले गया। अतः श्रीराम ने हनुमान् से सीता को ढूंढ़ने का आग्रह किया; क्योंकि हनुमान् 'ज्ञानिनामग्रगण्य' थे, सात कोटि महामन्त्रों से उनका कलेवर अभिमन्त्रित था और कोई भी ऐसा स्थान नहीं था, जहाँ हनुमान् की गति न हो।

ख

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इसी प्रसंग में भुक्तिमुक्तिदायक हनुमन्महामन्त्रानुष्ठान के विकल्प के रूप में दुःखपुञ्जविध्वंसक 'हनुमत्सहस्रस्तोत्र' का उपस्थापन हुआ है। यह सहस्रनामस्तोत्र १२५ श्लोकों का है । इसका विनियोग है—

'अस्य श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीहनुमान् महारुद्रो देवता, ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां बीजम्, श्रीं शक्तिः, किलिकिलिबुबुकारेणेति कीलकम्, लङ्काविध्वंसन इति कीलकम्, मम सर्वोपद्रवशान्त्यर्थे सर्वकामसिद्ध्यर्थे च जपे विनियोगः' । ध्यानमन्त्र है—

'प्रतप्तस्वर्णवर्णाभं संरक्तारुणलोचनम् ।
सुग्रीवादियुतं ध्यायेत् पीताम्बरसमावृतम् ।।
गोष्पदीकृतवारीशं पुच्छमस्तकमीश्वरम् ।
ज्ञानमुद्रां च बिभ्राणं सर्वालङ्कारभूषितम्' ।।

इसके पश्चात् 'श्रीरामचन्द्र उवाच' के तुरन्त अनन्तर 'सहस्रनामस्तोत्र' का (१५वें पद्य से) प्रारम्भ यों है—

'हनुमान् श्रीपदो वायुपुत्रो रुद्रोऽनघोऽजरः ।
अमृत्युर्वीरवीरश्च ग्रामवासो जनाश्रयः' ।

और अन्त है (१३९वें पद्य द्वारा)—

"उत्तमः श्रीपरीवारः श्रितरुद्रश्च कामधुक्" ।।

इस स्तोत्र से स्वयं श्रीराम ने वायुपुत्र हनुमान् का स्तवन किया। पद्य १४१ से १५२ तक माहात्म्य और फलश्रुति है। इसे 'श्रीरामकृत' कहा गया है। 'आचार्य शिवदत्त मिश्रकृत 'हनुमद्रहस्य' भी प्रकाशित है ।

[७]

श्रीशिवसहस्रनामस्तोत्र

सर्वप्रथम प्रपितामह पद्मयोनि ब्रह्मा ने यह शिवनामावली के दशसहस्रनामों का प्रवचन किया था। उसके मन्थनस्वरूप नवनीतवत् 'शिवसहस्रनामस्तोत्र' का संकलन किया गया[1] । इस स्तोत्र के अवतरण की परम्परा भी शिवसहस्रनामस्तोत्र में बताई गई है।

---

१. शृणु नाम्नां चयं कृष्ण ! यदुक्तं पद्मयोनिना ।
दश नामसहस्राणि यान्याह प्रपितामहः ।।
तानि निर्मथ्य मनसा दध्नो घृतमिवोद्धृतम् ।
गिरेः सारं यथा हेम पुष्पसारं यथा मधु ।।
घृतात्सारं यथा मण्डस्तथैतत्सारमुद्धृतम् ।
[शिवसहस्रनामस्तोत्रम्, गीताप्रेस, संवत् २०१५ वि०, श्लो० १३–१५]

आगे भी— ब्रह्मलोकादयं स्वर्गे स्तवराजोऽवतारितः ।
यतस्तण्डिः पुरा प्राप तेन तण्डिकृतोऽभवत् ।
स्वर्गाच्चैवात्र भूर्लोकं तण्डिना ह्यवतारितम् ।। [वही० श्लो० २२-२३]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"एतद्रहस्यं परमं ब्रह्मणो हृदि संस्थितम् ।
ब्रह्मा प्रोवाच शक्राय शक्रः प्रोवाच मृत्यवे ॥

मृत्युः प्रोवाच रुद्रेभ्यो रुद्रेभ्यस्तण्डिमागमत् ।
महता तपसा प्राप्तस्तण्डिना ब्रह्मसद्मनि ॥

तण्डिः प्रोवाच शुक्राय गौतमाय च भार्गवः ! ।
वैवस्वताय मनवे गौतमः प्राह माधव ॥
नारायणाय साध्याय समाधिष्ठाय धीमते । (पा. मनुरिष्टाय धीमते ।)

यमाय प्राह भगवान् साध्यो नारायणोऽच्युतः ॥

नाचिकेताय भगवानाह वैवस्वतो यमः ।
मार्कण्डेयान्मया प्राप्तो नियमेन जनार्दन ! ॥

तवाप्यहममित्रघ्न स्तवं दद्यां ह्यविश्रुतम्" ।
[शिवसहस्रनामस्तोत्रम्, गीताप्रेस, गोरखपुर, २०१५ वि०, श्लो० १७५–१८०]

[भावार्थ—शिवसहस्रनाम का रहस्य ब्रह्मा के हृदय में संस्थित था । ब्रह्मा ने इन्द्र को, इन्द्र ने यम को, मृत्यु ने रुद्रगण को, रुद्र ने तण्डि को (अथवा कृष्णतण्डि को), तण्डि ने शुक्र को, भृगुपुत्र शुक्र ने गौतम को, गौतम ने वैवस्वत मनु को, इसी प्रकार इस स्तोत्र के अन्यान्तरण की धारा प्रवाहित होती रही, वैवस्वत यम ने नचिकेता और नचिकेता ने मार्कण्डेय मुनि को इस सहस्रनाम के रहस्य से अवगत कराया और वही ऋषि तण्डि ने शिवसहस्रनाम का लोकावतारण किया ।] इस 'सहस्रनामस्तोत्र' में अष्टोत्तरसहस्र 'शिवनाम' हैं ।

गीताप्रेस से मुद्रित और प्रकाशित इस सहस्रनाम के अतिरिक्त यह अन्यत्र भी प्रकाशित है । 'चौखम्भा अमरभारती प्रकाशन' (के० ३७।१३०, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी) से प्रकाशित 'बृहत्स्तोत्ररत्नाकरः' (द्वि० संस्करण, १९८१ ई०) में भी यह 'शिवसहस्रनामस्तोत्र' मुद्रित है, पर इस मुद्रण में वे आरम्भिक प्रस्तावनात्मक पद्य नहीं हैं, जो 'गीताप्रेस' संस्करण में हैं । इस स्तोत्र के स्रोत ग्रन्थ के रूप में केवल 'आर्ष' कहा गया है । इस सहस्रनाम के प्रसङ्ग में यहाँ इतना ही निवेदन पर्याप्त है । 'गीताप्रेस' के प्रकाशन में इसका स्रोत बताया गया है—'महाभारत' का अनुशासनपर्व ।

'शाक्तप्रमोद' में भी इसका स्रोत कहा गया है—'इति श्रीमहाभारते अनुशासन-पर्वणि दानधर्मे सप्तदशाध्याये शिवसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्' ।

अर्थात् 'शाक्तप्रमोद' के अनुसार भी महाभारत के 'अनुशासनपर्वस्थ' दानधर्मप्रकरण के सप्तदशाध्याय से यह लिया गया है ।

'शाक्तप्रमोद' में 'नमः'युक्त चतुर्थ्यन्त अष्टोत्तरसहस्र शिवनामावली भी मुद्रित है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[८]

श्रीगणेशसहस्रनामस्तोत्र

इस गणेशसहस्रनामस्तोत्र का स्वयं गणेश ने श्रीमहादेव को उपदेश दिया, जब श्रीत्रिपुरारि त्रिपुरासुर और त्रिपुर के विजयार्थ सन्नद्ध हो रहे थे। इसका प्रारम्भ होता है 'व्यास के प्रश्न' से—

व्यास उवाच—

"कथं नाम्नां सहस्रं स्वं गणेश उपदिष्टवान्।
शिवाय तन्ममाचक्ष्व लोकानुग्रहतत्पर" ॥

ब्रह्मोवाच—

"देवदेवं पुरारातिः पुरत्रयजयोद्यमे।
अनर्चनाद्‌गणेशस्य जातो विघ्नाकुलः किल ॥

मनसा स विनिर्द्धार्य ततस्तद्विघ्नकारणम्।
महागणपतिं भक्त्या समभ्यर्च्य यथाविधि ॥

विघ्नप्रशमनोपायमपृच्छदपराजितः ।
सन्तुष्टः पूजया शम्भोर्महागणपतिः स्वयम् ॥

सर्वविघ्नैकहरणं सर्वकामफलप्रदम्।
ततस्तस्मै स्वकं नाम्नां सहस्रमिदमब्रवीत्" ॥

अर्थात् पुरत्रय के विजयार्थ युद्ध के उद्यम में, गणेश के अर्चनाभाववश भगवान् शङ्कर विघ्नों से व्याकुल हो गये थे। तदनन्तर ध्यान लगाकर कार्यारम्भ में गणेश का (विघ्नहर का) पूजन न करने के फलस्वरूप विघ्नों के आ पड़ने के कारण को समझ कर महागणपति की शिव ने पूजा की और विघ्नों के उपशमन का उपाय पूछा। उत्तर में स्वयं गजानन विघ्नविनाशकारक ने श्रीगणेशसहस्रनाम-पाठ को सर्वकामप्रद एवं निखिलप्रत्यूहपुञ्जविनाशक बताया और अपने सहस्रनामों का उपदेश किया—

'ॐ गणेश्वरो गणक्रीडो गणनाथो गणाधिपः'।

से आरम्भ कर—

"अनन्तदेवता सेव्यो ह्यनन्तमुनिसंस्तुतः।
अनन्तनामानन्तश्रीरनन्तानन्तसौख्यदः ॥
इति वैनायकनाम्नां सहस्रमिदमीरितम्" ॥

पर्यन्त सहस्रनाम बताये गये हैं।

इस सहस्रनाम की फलश्रुति और फलों का भी बड़े भक्तिभावाभिनिवेश के साथ लम्बा-चौड़ा विवरण (३८ पद्यों में) दिया गया है। यथा—

"इदं ब्राह्मे मुहूर्त्ते वै यः पठेत्प्रत्यहं नरः।
करस्थं तस्य सकलमैहिकामुष्मिकं फलम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आयुरारोग्यमैश्वर्यं धर्मः शौर्यं बलं यशः ।
मेधा प्रज्ञा धृतिः कान्तिः सौभाग्यमतिरूपिता ॥
सत्यं दया क्षमा शान्तिर्दाक्षिण्यं धर्मशीलता ।
जगत्संयमनं विश्वसंवादो वादपाटवम् ॥
सभापाण्डित्यमौदार्यं गाम्भीर्यं ब्रह्मवर्चसम् ।
औन्नत्यं च कुलं शीलं प्रतापो वीर्यमार्यता" ॥ इत्यादि ।

(आशय स्पष्ट है ।) इस प्रकार इस सहस्रनामस्तोत्र के पाठ की महिमामय फलश्रुति भी अपूर्व है ।

कहीं-कहीं अत्यन्त काव्यलालित्यमय छन्द में भी इस स्तोत्र की महिमा बताई गई है—

"एतन्नाम्नां सहस्रं पठति दिनमणौ प्रत्यहं प्रोज्जिहाने
सायं मध्यन्दिने वा त्रिषवणमथवा सन्ततं वा जनो यः ।
स स्यादैश्वर्यधुर्यः प्रभवति वचसां कीर्तिमुच्चैस्तनोति
प्रत्यूहं हन्ति विश्वं वशयति सुचिरं वर्द्धते पुत्रपौत्रैः" ॥

अन्तिम पद्य भी इसी प्रकार काव्यमय और ललित छन्द में निबद्ध है—

"किङ्किणीगणरणितस्तव चरणः प्रकटितगुरुमिति चारित्रगणः ।
मदजललहरिकलितकपोलः शमयतु दुरितं गणपतिनृपनामा" ॥

फलश्रुति प्रभृति में ललित छन्दों की अनेक रचनाएँ इसमें हैं और भी अनेक विशेषताएँ इस स्तोत्र में हैं—

(१) ६१ पद्य से प्रारम्भ कर ११९ पद्य तक के नाम वर्णमाला क्रम से हैं ।

(२) १३५ पद्य से लेकर १७४ तक के पद्यों के अन्तर्गत परिगणित नामों में संख्यापरक वैशिष्ट्य है ।

(३) फलश्रुति के साथ अनुष्ठान के विधि-विधान भी वर्णित हैं ।

(४) यह भी सूचित किया गया है कि यद्यपि उमाशंकरसुत गणेश हैं, तथापि अनादि काल से पौराणिक युग में सर्वानुष्ठान एवं शुभ कार्यों में उनकी आदि-पूजा होती रही है । स्रोत ज्ञात न हो सका ।

इस स्तोत्र का विनियोग है—

"अस्य श्रीमहागणपतिनाममालामन्त्रस्य गणेश ऋषिः, महागणपतिर्देवता, नानाविधानि च्छन्दांसि, गमिति बीजम्, तुण्डमिति शक्तिः, स्वाहेति कीलकम्, सकलविघ्ननाशनद्वारा महागणपतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः" ।

'शाक्तप्रमोद' में यह सहस्रनामस्तोत्र मुद्रित है । अन्यत्र भी पृथक् रूप में 'गणेशसहस्रनामस्तोत्र' मुद्रित और प्रकाशित है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[९]

श्रीसूर्यसहस्रनामस्तोत्र

'श्रीसूर्यसहस्रनामस्तोत्र' अतीव महत्त्वपूर्ण सहस्रनाम है। महत्त्वपूर्ण इसलिए कि श्रीसूर्यदेव पञ्चदेवों में—(१) श्रीगणेश, (२) श्रीविष्णु, (३) श्रीशिव, (४) श्रीसूर्य और (५) श्रीदेवी (पार्वती या लक्ष्मी या सरस्वती या दुर्गा इत्यादि) में एकमात्र प्रत्यक्ष देवता हैं। वे हमारे नित्यकर्म में प्रमुख उपास्य हैं। 'सौरमण्डल' की सृष्टि-स्थिति-संहार के आधिदैविक द्युस्थानीय देव हैं—धार्मिक-पौराणिक दृष्टि से भी और वैज्ञानिक दृष्टि से भी।

अतः सूर्य रूप प्रमुख देवता के रूप को केन्द्र में रखकर अनेक पुराणोपपुराण रचित हैं। 'भविष्यमहापुराण' में 'नारदपुराण' के अनुसार पाँच पर्व हैं। उनमें एक पर्व ही है 'सूर्यपर्व'। वैसे सम्पूर्ण 'भविष्यपुराण' और 'भविष्योत्तरपुराण' में सूर्योपासना का अत्यधिक प्रसार है। 'उपपुराणों में 'साम्बपुराण', 'सौरपुराण' अथवा 'सूर्यपुराण' के नाम भी लिये जाते हैं।

'सूर्य' आधिदैविक द्युस्थानीय देव तो हैं ही, अनेक दृष्टियों से आध्यात्मिक और आधिभौतिक भी हैं। उनके वैज्ञानिक महत्त्व पर, विश्व की समस्त विकसित भाषाओं में 'ढेर सारी पोथियाँ' (शतशः पुस्तकें) लिखी जा चुकी हैं। यहाँ इनके विवरणात्मक निरूपण का न प्रसङ्ग है, न अवसर। इतना ही संकेत पर्याप्त है कि 'ऋग्वेदसंहिता' के काल से आज तक हिन्दी का 'सूर्यपुराण' (छोटा-सा), सूर्य की महिमा, कीर्ति और वैज्ञानिक गुणों की प्रशस्ति गायी जाती है। 'शुक्लयजुर्वेदीय' रुद्राष्टाध्यायी का चतुर्थ अध्याय भी सूर्यपरक है।

'शाक्तप्रमोद' में सूर्य-ध्यान मन्त्र है—वही प्रसिद्ध मन्त्र, जो 'भविष्योत्तरपुराण' के 'आदित्यहृदय' स्तोत्र का है—

'भास्वद्रत्नाढ्यमौलिः स्फुरदधररुचा रञ्जितश्चारुकेशो
भास्वान्यो दिव्यतेजाः करकमलयुतः स्वर्णवर्णप्रभाभिः।
विश्वाकाशावकाशो ग्रहगणसहितो[1] भाति यश्चोदयाद्रौ
सर्वानन्दप्रदाता हरिहरनमितः पातु मां विश्वचक्षुः' ॥

इस 'सहस्रनाम'स्तोत्र के वक्ता 'सुमन्तु' हैं और श्रोता हैं—'शतानीक' राजा। इसका विनियोग निम्नोक्त है—

'ॐ अस्य श्रीसूर्यसहस्रनाम्नां (स्तोत्रस्य) भगवान् पाराशर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसूर्यो देवता सकलाभीष्टप्राप्त्यर्थं जपे विनियोगः'।

प्रारम्भ में श्रोता-वक्ता का प्रसंग बताते हुए कहा गया है—

शतानीक उवाच—

"केन मन्त्रेण जप्तेन दर्शनं भगवान् व्रजेत्।
स्तोत्रेण वापि सविता तन्मे कथय सुव्रत" ! ॥

---

१. 'विश्वाकाशावकाशग्रहपतिशिखरे' इति पाठान्तरम्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुमन्तुरुवाच—

"स्तुतो नामसहस्रेण यदा भक्तिमता मया ।
तदा मे दर्शनं यातः साक्षाद्देवो दिवाकरः" ॥ इत्यादि ।

इस 'सहस्रनामस्तोत्र' का प्रथम पद्य है—

"ॐ विश्वविद्विश्वजित् कर्त्ता विश्वात्मा विश्वतोमुखः ।
विश्वेश्वरो विश्वयोनिर्नियतात्मा जितेन्द्रियः" ॥ १ ॥

अन्तिम पद्य (११७वाँ—षट्पदवाला) है—

"भक्तदुःखक्षयकरो भवसागरतारकः ।
भयापहर्त्ता भगवानप्रमेयपराक्रमः ॥
मनुस्वामी मनुपतिर्मान्यो मन्वन्तराधिपः" ॥ ११७ ॥

सबसे विशिष्ट महत्त्वपूर्ण फल है एतत्सहस्रनामस्तोत्र के पाठ का—रोगों से पूर्णमुक्ति, जैसा कि बताया गया है—

"नाम्नां सहस्रमिदमंशुमतं पठेद्यः प्रातः शुचिर्नियमवान् सुसमाधियुक्तः ।
द्वारेण तं परिहरन्ति सदैव रोगा भीताः सुपर्णमिव सर्वमहोरगेन्द्राः" ॥

सूर्यसहस्रनामस्तोत्र का स्रोत है—'श्रीभविष्यपुराण' के सप्तम कल्प में सुमन्तु-शतानीक-संवाद ।

[१०]

देवीसहस्रनामस्तोत्र

(क) ललितासहस्रनामस्तोत्र

सहस्रनामस्तोत्रों की शृंखला में 'ललितासहस्रनामस्तोत्र' अद्भुत है । वायुप्रोक्त ब्रह्माण्डपुराण के उत्तरभाग में चार अध्यायों तक 'ब्रह्माण्डावर्त्त' का प्रसंग है । पंचम अध्याय से उसी उत्तर भाग में 'ललितोपाख्यान' प्रारम्भ होता है । इसका प्रसार चौवालीसवें अध्याय के अन्त तक, चालीस अध्यायों में है । इसी के साथ ब्रह्माण्ड-पुराण भी समाप्त हो जाता है । यह चतुर्थ अध्याय 'अथ ललितोपाख्यानम्' से प्रारम्भ होता है । वहाँ प्रथम मंगलश्लोक ध्यानपरक है—

'चतुर्भुजे चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुङ्कुमरागशोणे ।
पुण्ड्रेक्षुपाशाङ्कुशपुष्पबाणहस्ते नमस्ते जगदेकमातः' ॥

'ब्रह्माण्डपुराण' के 'ललितोपाख्यान' के सम्बन्ध में अनेक मत-मतान्तर हैं; परन्तु यहाँ उन सबका प्रसङ्ग उपस्थित नहीं है । यहाँ केवल कतिपय प्रमुख सहस्रनामों की चर्चा मात्र अपेक्षित है । 'नानपेक्षितमुच्यते' की मल्लिनाथी मान्यता को ध्यान में रखकर, 'ललितासहस्रनामस्तोत्र' से सम्पृक्त कुछ निम्नांकित पक्ष प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यहाँ इतना बता देना आवश्यक है कि यह 'ललितासहस्रनामस्तोत्र' आता है 'ब्रह्माण्डपुराण' के 'ललितोपाख्याना'ख्य अन्तिम अंश में 'हयग्रीव' और 'अगस्त्य' के संवाद में।

आरम्भ में इस स्तोत्र को 'अद्भुत' कहा गया है। अन्य सहस्रनामस्तोत्रों की अपेक्षा इसकी अनेक विलक्षणताएँ हैं।

(१) ऐसा कहा जा सकता है कि यह 'स्तोत्र' तान्त्रिक प्रभाव से समृद्ध है।

(२) 'श्रीचक्र' और 'चक्रराज' से यह सम्बद्ध है।

(३) 'ललिता', 'त्रिपुरसुन्दरी', 'त्रिपुरा', 'कामाक्षी', 'श्रीदेवी', 'श्रीविद्या', 'कामेश्वरी' आदि सभी नाम पर्यायरूप में यत्र-तत्र मिलते हैं।

(४) इस सहस्रनामस्तोत्र का आकार बड़ा है। इसमें श्लोकसंख्या भी ३२० है।

(५) यह स्तोत्र कलाओं में विन्यस्त है। प्रथमा उपोद्घाताख्या कला है और द्वादशी क्षमाख्या कला में—फलश्रुति और माहात्म्य आदि हैं। 'अनेन सदृशं स्तोत्रं न भूतो न भविष्यति'—इत्यादि। प्रथमा 'उपोद्घाताख्या कला' वस्तुतः प्रस्तावनात्मक, विधिनिर्देशमुखेन स्तोत्र-पाठ का उपक्रम है।

(६) द्वितीया 'तापिनी कला' से प्रारम्भ होकर 'एकादशीधारिणी कला' तक ललिता-सहस्रनामस्तोत्र है।

(७) परिगणित सहस्रनाम भी विशिष्ट, सार्थक, व्याख्यासापेक्ष और रहस्योन्मुख हैं।

(८) विनियोग में कहा गया है—**'ललितात्रिपुरसुन्दरीप्रसादचिन्तित-फलावाप्त्यर्थम्'** इत्यादि। स्तोत्रारम्भ में मंगलपरक ध्यान का श्लोक गृहीत है—

'सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्
तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम् ॥
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं
सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् ॥

'ललितासहस्रनाम' के प्रसंग में इतना ही निवेदन पर्याप्त है। इतना ही और निवेद्य है कि इस स्तोत्र की 'उपोद्घाताख्या प्रथमा कला' निम्नलिखित श्लोक से आरम्भ होती है—

'त्रिपुरां कुलनिधिमीडेऽरुणश्रियं कामराजविद्धाङ्गीम्।
त्रिगुणैर्देवैर्नुतामेकान्तां बिन्दुगां महारम्भाम्' ॥

इस सहस्रनामस्तोत्र का विनियोग है—

'अस्य श्रीललितास्तोत्रनामहामन्त्रस्य वशिन्यादयो वाग्देवता ऋषयः, अनुष्टुप् छन्दः, महात्रिपुरसुन्दरी देवता, श्रीमद्वाग्भवकूटेति बीजम्, मध्यकूटेति शक्तिः, शक्तिकूटेति कीलकम्, मूलप्रकृतिरिति स्वरूपम्, श्रीललितात्रिपुरसुन्दरीप्रसादसिद्धिद्वारा चिन्तितफलावाप्त्यर्थं जपे विनियोगः'।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्यान का छन्द ऊपर दिया गया है। एकादशीधारिणी कला का अन्तिम पद्य कुछ विचित्र है—

"निधिरात्मा दम्भोलिः शेवधिरिति नाम पुल्लिङ्गम्।
तद्ब्रह्मधाम साधुज्योतिः क्लीबेऽव्ययं स्वाहा स्वधा" ॥

जैसा ऊपर बताया गया है 'ललितासहस्रनामस्तोत्र' का स्रोत है, 'ब्रह्माण्ड-पुराण' का 'ललितोपाख्यान' और वक्ता-श्रोता हैं—'हयग्रीव' एवं 'अगस्त्य'। सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र महापण्डित भास्करराय का इस सहस्रनाम पर महत्त्वपूर्ण भाष्य भी है।

(ख) दकारादि दुर्गासहस्रनामस्तोत्र

विलक्षण सहस्रनामस्तोत्रों में दकारादि दुर्गासहस्रनामस्तोत्र की गणना करनी चाहिए। इस सहस्रनामस्तोत्र का नाम ही 'दकारादि दुर्गासहस्रनामस्तोत्र' इसकी विशेषता को सूचित कर देता है। २३० वाँ पद्य है—

"दूर्वा दूर्वादलश्यामा दूर्वादलसमद्युतिः।
नाम्नां सहस्रं दुर्गाया दादीनामिति कीर्तितम्" ॥

'दादीनाम्' का अर्थ है 'द' है आदि में जिनके, अर्थात् 'दकारादि' 'दुर्गानाम-सहस्र' स्तोत्र है।

इस स्तोत्र में २३६ पद्य हैं। यह 'कुलार्णवतन्त्र' के अन्तर्गत आया है। आचार्य पं० शिवदत्तमिश्र ने इसे अपने 'दुर्गातन्त्र' नामक लिखित एवं सम्पादित ग्रन्थ में उद्धृत किया है। अनुमान है कि उन्होंने 'शाक्तप्रमोद' से इसे संकलित किया है। इस 'स्तवराज' में संकल्प, विनियोग, षडङ्गन्यास एवं ध्यान लिखा है। तदनन्तर प्रणव-सहित चतुर्थ्यन्त 'नमः' अन्त में सहस्रनामावली भी दी है, यथा—१. ॐ दुं दुर्गायै नमः, २. ॐ दुर्गतिहरायै नमः, ३. ॐ दुर्गाचलनिवासिन्यै नमः.........इत्यादि। इस क्रम से प्रारम्भ कर १००० 'ॐ दुर्गादलसमद्युतये नमः' हजारवें नाम के द्वारा दकारादि दुर्गासहस्रनामावली समाप्त की है।

इस 'दकारादि दुर्गासहस्रनामस्तोत्र की वक्ता श्रीदेवी हैं और श्रोता हैं देवगण। बताया गया है कि भगवान् शिव ने इसका निर्माण किया। उसी 'दकारादि-दुर्गासहस्रनामस्तोत्र' का प्रवचन किया। 'शाक्तप्रमोद' के अनुसार इसका स्रोत है—'कुलार्णवतन्त्र'।

इस स्तोत्र में समस्त दुर्गा के सहस्रनाम दकारादि हैं 'दु'कारादि या दुर्गादि नहीं। यह सहस्रनामस्तोत्र महाफलदायक है। 'शाक्तप्रमोद' में इसका आरम्भ है—

देव्युवाच—

'मम नाम सहस्रं च शिवपूर्वविनिर्मितम्।
तत्पठ्यतां विधानेन तदा सर्वं भविष्यति ॥ १ ॥

इत्युक्त्वा पार्वती देवी श्रावयामास तच्च तान्।
तदेव नामसाहस्रं दकारादि वरानने ! ॥ २ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रोगदारिद्र्यदौर्भाग्यशोकदुःखविनाशकम् ।
सर्वासां पूजितं नाम श्रीदुर्गादेवता मता ॥ ३ ॥
निजबीजं भवेद् बीजं मन्त्रं कीलकमुच्यते ।
सर्वाशापूरणे देवी विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ४ ॥

तदनन्तर प्रारम्भ हो जाता है 'सहस्रनाम'—

"दुं दुर्गा दुर्गतिहरा दुर्गाजलनिवासिनी' इत्यादि । अन्त है—'दूर्वा दूर्वादल-श्यामा दूर्वादलसमद्युतिः' इत्यादि (श्लो० २३०)। संक्षिप्त फलश्रुति भी छः श्लोकों में है।

(ग) दशमहाविद्यासहस्रनामस्तोत्र

कालीसहस्रनामस्तोत्र (प्रथम महाविद्या का)

विशिष्ट सहस्रनामस्तोत्रों में 'ककारादि'-कालीसहस्रनाम का उल्लेख अनुचित न होगा। सर्वप्रमुख विशेषता तो यही है कि काली के ये सहस्रनाम 'शाक्तप्रमोद' में 'ककारादि' गिनाये गये हैं। दूसरी विशेषता यह है कि 'दश महाविद्याओं' में 'श्रीकाली' का प्रथम नामोल्लेख है[1]। इस सहस्रनामस्तोत्र की यह भी विशेषता है कि महाविद्याओं में सृष्टि, स्थिति एवं लयकारिणी काली आद्याशक्ति हैं। 'दुर्गासप्तशती' के चरित्रत्रय में 'महाकाली' का चरित्र सर्वप्रथम है। 'पद्मनाभ' विष्णु, जिनके नाभिकमल से सृष्टिकर्त्ता हिरण्यगर्भ भी समुद्भूत हैं, वे भी योगनिद्रारूपी महामाया, महाविद्या काली के वश में रहकर निश्चेष्ट पड़े रहते हैं और उस जगद्धात्री विश्वेश्वरी की शक्ति से मुक्ति पाकर ही विष्णु भगवान् महामायाविमोहित 'मधु-कैटभ' का वध कर पाते हैं।

इसी कारण 'शाक्तप्रमोद' नामक ५८२ पृष्ठात्मक ग्रन्थ के समस्त १७ तन्त्रों में 'कालीतन्त्र' प्रथम और ११५ पृष्ठात्मक है, शेष १६ तन्त्रों की चर्चा संक्षिप्त है।

महाविद्या-महामाया काली आद्यन्त-रहित हैं, वे ब्रह्मस्वरूपिणी हैं। वे निरा-कारा होते हुए भी साधकों की सपर्या ग्रहण करने में साकाररूप से ध्यान-गम्य हैं। उनके ध्यान का स्वरूप है—

---

१. शैव, शाक्त और आगम ग्रन्थों में दश महाविद्याओं के, अर्थात् दश सिद्ध-महादेवियों के नाम मिलते हैं—

(१) काली, (२) तारा महाविद्या, (३) षोडशी, (४) भुवनेश्वरी ।
(५) भैरवी, (६) छिन्नमस्ता च, (७) विद्या धूमावती तथा ॥
(८) बगला सिद्धविद्या च, (९) मातङ्गी, (१०) कमलात्मिका ।
एता दश महाविद्याः "सिद्धिविद्याः प्रकीर्तिताः" ॥ (आगमसंग्रहे)

इनकी बड़ी महिमा गाई गई है। ये सभी सिद्धिदायिनी कही गई हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजां खड्गमुण्डवराभयकरां शिवाम् ॥
मुण्डमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम्।
एवं संचिन्तयेत् कालीं श्मशानालयवासिनीम्" ॥

इस काली के अनेक उपभेद हैं। उनमें प्रमुख आठ हैं—

(१) चिन्तामणि-काली, (२) स्पर्शमणि-काली, (३) शान्तिप्रदा-काली, (४) सिद्धिदा-काली, (५) दक्षिणा-काली, (६) कामकला-काली, (७) हंस-काली और (८) गुह्य-काली। इनमें 'दक्षिण-काली' या 'दक्षिणा-काली' पंचम हैं। उन्हीं दक्षिणा काली की महिमा में 'शाक्तप्रमोद' के सम्पादक ने 'कालीसहस्रनामस्तोत्र' की चर्चा की है—

"दक्षिणस्यां दिशि स्थानं संस्थितश्च रवेः सुतः।
कालो नाम्ना पलायेत भीतियुक्तः समन्ततः।
अतः सा दक्षिणा काली त्रिषु लोकेषु गीयते" ॥

(महानिर्वाणतन्त्र)

'तन्त्रशास्त्र' के ग्रन्थों में 'काली' (कालिका = महाकाली) को महाविद्या-रूपा कहा गया है। वे शरणागतों की मुक्तिदात्री हैं। आगमशास्त्र के ग्रन्थों में इनकी महिमा भरी पड़ी है। ज्ञान, विद्या और तपश्चर्या की अवाप्ति के लिए वे सर्वोत्तम हैं। कलियुग में काली की उपासना सर्वसिद्धिदायिनी है।

'कालीसहस्रनामस्तोत्र' के सहस्रसंख्यक कालीनाम ककारादि हैं। यद्यपि 'काली-सहस्रनामस्तोत्र' 'दक्षिणा-काली'-समाश्रित है, तथापि यत्र तत्र दक्षिणेतरमार्गीय सपर्या-विधि से भी संस्पृष्ट है—

"कालौ कालीमहाविद्या कलौ काली च सिद्धिदा।
कलौ काली च सिद्धा च कलौ काली वरप्रदा ॥
कलौ काली साधकस्य दर्शनार्थं समुद्यता।
कलौ काली केवला स्यान्नात्र कार्या विचारणा ॥
नान्यविद्या नान्यविद्या नान्यविद्या कलौ भवेत्।
कलौ कालीं विहायाऽथ न यः कश्चित् सिद्धिमिच्छति ॥
सा तु शक्तिं विना देवि ! रतिसम्भोगमिच्छति"।

[कालीसहस्रनामस्तोत्र, श्लो० १७९-१८३]

'शाक्तप्रमोद' में चतुर्थ्यन्त—नमोयुक्त ककारादि 'सहस्रनामावली' है, यथा—(१) 'ॐ क्रीं काल्यै नमः, (२) क्रूं कराल्यै नमः' इत्यादि और अन्तिम दो नामावली है—९९९ क्रीं ह्रीं ह्रूं फट् नमस्स्वधायै नमः, १००० क्रीं क्रों ह्रीं ह्लीं तथा ह्रूं ह्रूं फट् स्वाहामन्त्ररूपिण्यै नमः"। इसी भाँति 'कालीसहस्रनामस्तोत्र' का प्रारम्भ है—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"ॐ क्रीं काली क्रूं कराली कल्याणी कमला कला।
कलावती कलाढ्या च कलापूज्या कलात्मिका" ॥ १ ॥

और अन्त है—

"क्रौं क्रौं ह्रीं ह्रीं तथा ह्रूं ह्रूं फट् स्वाहामन्त्ररूपिणी।
इति श्रीसर्वसाम्राज्ये—मेधानामसहस्रकम्" ॥ १८२ ॥

नीचे इस स्तोत्र का तथ्यात्मक विशिष्टता-प्रकाशक विनियोग उद्धृत किया जा रहा है। 'कालीसहस्रनामावली' में तथा प्रायः यही विनियोग पद्यमय रूप से सहस्रनाम-स्तोत्र में भी है—

"अस्य श्रीसर्वसाम्राज्यमेधानामकालीरूप-ककारात्मक-सहस्रनामस्तोत्रस्य महाकाल ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीदक्षिणाकाली देवता, ह्रीं बीजम्, ह्रूं शक्तिः, क्रीं कीलकम्, कालीवरदानाद्यखिलेष्टार्थे विनियोगः"।

इस सहस्रनामस्तोत्र के यामलीय शैली वाले वक्ता हैं महादेव शिव और श्रोता हैं देवी भवानी। यह स्तोत्र १८२ पद्यों में प्रसृत है। इसकी पूजा-अर्चा-सपर्या-अनुष्ठान-उपासना आदि भी आदि और अन्त में विस्तार के साथ 'शाक्तप्रमोद'[१] में मिलती है।

विषय को देखते हुए एवं 'शाक्तप्रमोद' में इसके विस्तार के कारण यहाँ कालीसहस्रनामस्तोत्र के सन्दर्भ में विस्तृत चर्चा करनो पड़ी है।

(घ) श्रीतारा-तकारादिसहस्रनाम

(महाविद्या-द्वितीय)

५८२ पृष्ठात्मक 'शाक्तप्रमोद'-नामक ग्रन्थ में 'कालीतन्त्र' सर्वप्रथम है। यह अंश बृहत्तर है और सब तन्त्रों की अपेक्षा विशिष्ट भी है। इसी कारण इस 'श्रीमहाकालीसहस्रनामस्तोत्र' का किंचित् विस्तृत विवरण दिया गया है।

'शाक्तप्रमोद' के तन्त्रों के सहस्रनामों का अतिसंक्षिप्त परिचय दिया जायगा। केवल तारा-महाविद्या का कुछ विशिष्ट विवरण लिखा जायगा।

तारा-(अथवा उग्रतारा) सहस्रनामस्तोत्र

श्रीतारा-महाविद्या (या उग्रतारा-महाविद्या) किंचित् अल्प-प्रसिद्ध हैं। बौद्ध-तान्त्रिकों में भी इनकी उपासना अधिक प्रचलित है। इनके ध्यान के तीन पद्य नीचे 'शाक्तप्रमोद' से उद्धृत हैं—

---

१. शिवहरराजधानीनृपति, श्रीराजदेवनन्दनसिंहबहादुर महोदय द्वारा संगृहीत कर विरचित 'शाक्तप्रमोद' ग्रन्थ है। इसके मुद्रक-प्रकाशक हैं—'खेमराज श्रीकृष्णदास,स्टीम प्रेस, बम्बई के स्वत्वाधिकारी। प्रकाशन-संवत् २०२९ वि०।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'प्रत्यालीढपदार्प्पिताङ्घ्रिशवहृद्घोराट्टहासापरा
खड्गेन्दीवरकर्त्रिखर्परभुजा हुङ्कारबीजोद्भवा।
खर्वा नीलविशालपिङ्गलजटाजूटैकनागैर्य्युता
जाड्यं न्यस्य कपालकर्तृजगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम्॥ १॥

विश्वव्यापकवारिमध्यविलसच्छ्वेताम्बुजन्मस्थितां
कर्त्रीं खड्गकपालनीलनलिने राजत्करामिन्दुभाम्।
काञ्चीकुण्डलहारकङ्कणलसत्केयूरमञ्जीरता-
माप्तैर्नागवरैर्विभूषिततनूमारक्तनेत्रत्रयाम् ॥ २॥

पिङ्गोग्रैकजटां लसत्स्वरसनान्दंष्ट्राकरालानना-
ञ्चर्मद्वैपिवराङ्कटौ विदधतीं श्वेतास्थिपट्टालिकाम्।
अक्षोभ्येण विराजमानशिरसं स्मेराननाम्भोरुहां
तारा शावहृदासनां दृढकुचामम्बां त्रिलोक्याः स्मरेत्॥ ३॥

'तारासहस्रनामस्तोत्र' में ध्यान के श्लोक भिन्न हैं।

यही तारा महाविद्या 'नीलसरस्वती' नाम से भी विख्यात हैं। तारास्तोत्र में यह रहस्य बताया गया है कि यही अधिक ख्यात हैं—

मातर्नीलसरस्वति प्रणमतां सौभाग्यसम्पत्प्रदे
प्रत्यालीढपदस्थिते शवहृदि स्मिताननाम्भोरुहे।
फुल्लेन्दीवरलोचने त्रिनयने कर्त्री कपालोत्पले
खड्गं चादधती त्वमेव शरणं त्वामीश्वरीमाश्रये॥

वाचामीश्वरि भक्तकल्पलतिके सर्वार्थसिद्धीश्वरि!
गद्यप्राकृतपद्यजातरचनासर्वार्थसिद्धिप्रदे!।
नीलेन्दीवरलोचनत्रययुते कारुण्यवारान्निधे!
सौभाग्यामृतवर्द्धनेन (वर्षणेन) कृपया सिञ्चेत्त्वमस्मादृशम्॥

यह तारासहस्रनामस्तोत्र[1], 'ब्रह्मयामल' नामक यामल-ग्रन्थ से संकलित है—'इति ब्रह्मयामले तारायाः तकारादि सहस्रनामस्तोत्रम्'।

इस सहस्रनाम की विशेषता है कि सभी सहस्रसंख्यक नाम 'तकारादि' हैं। यथा—

'तारा तारादिपञ्चार्णा तारान्या वेदवीर्यजा।
तारा तारहिता वर्णा ताराद्या ताररूपिणी'॥

११वें पद्य से प्रारम्भ होकर २४४ पद्यात्मक इस सहस्रनामस्तोत्र के २०६ वें श्लोक में यह सहस्रनामस्तोत्र समाप्त होता है—

---

१. तारासहस्रनामस्तोत्र के पाठ की फलश्रुति भी लम्बी चौड़ी है। यहाँ तक कहा गया है कि "गङ्गाप्रवाहवत्प्राणी प्रलापादपि जायते"।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"तन्त्रस्था तन्त्रजा तन्त्री तन्त्रभृत्तन्त्रमन्त्रदा।
तन्त्राद्या तन्त्रगा तन्त्रा तन्त्रार्च्या तन्त्रसिद्धिदा" ॥

इसके पश्चात् फलश्रुति एवं विधिविधान-उपासना-पद्धति आदि है। इसके प्रवक्ता पितामह ब्रह्मा हैं और श्रोता (प्रश्नकर्त्ता) वशिष्ठ मुनि हैं। विनियोग निर्दिष्ट है—

"ऋषिच्छन्दादिकं ध्यानं मूलवत् परिकीर्तितम्।
नियोगो मात्रसिद्धौ च पुरुषार्थचतुष्टये" ॥

(तारासहस्रनामस्तोत्र—१०)

(ङ) त्रिपुरसुन्दरीसहस्रनामस्तोत्र (तृतीय)

षोडशीसहस्रनामस्तोत्र

षोडशी महाविद्या का ही दूसरा नाम 'त्रिपुरसुन्दरी' महाविद्या है। अद्वैत-वेदान्तसिद्धान्त के सर्वप्रमुख प्रतिष्ठापयिता, गोविन्दाचार्यपाद के दीक्षाशिष्य आद्य-शङ्कराचार्य का 'त्रिपुरसुन्दरी'-शतक-स्तोत्र अत्यन्त विख्यात है। इसका प्रसिद्ध नाम है—"सौन्दर्यलहरी"। इसके रचयिता आद्यशङ्कराचार्य हैं। तान्त्रिकों में यह परमप्रसिद्ध और प्रचलित है। यही 'त्रिपुरसुन्दरी' विख्यात हैं 'षोडशी महाविद्या' के नाम से। अनेक कारणों में इस नाम का एक कारण यह भी है कि 'त्रिपुरसुन्दरी' देवी में सौन्दर्य की समग्र कलाएँ अपनी पूर्ण उत्फुल्लता के साथ वर्तमान हैं। इसके अतिरिक्त शैवदर्शन में 'कलातत्त्व' का जो प्रतिमान है—वह षोडश कलाओं के साथ 'त्रिपुरसुन्दरी' अथवा 'षोडशी' किं वा 'ललिता' में समग्र भास्वरता के साथ सन्निविष्ट एवं देदीप्यमान है। इसी रहस्यात्मक तत्त्व का सङ्केत करते हैं 'सौन्दर्यलहरी' के प्रथम दो पद्य (मन्त्र)—

'शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं
न चेदेवो देवं न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि।
अतस्त्वामाराध्यां हरिहरविरिञ्च्यादिभिरपि
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति ॥ १ ॥

तनीयांसं पांसुं तव चरणपङ्केरुहभवं
विरिञ्चिः सञ्चिन्वन् विरचयति लोकानविकलम्।
वहत्येनं शौरिः कथमपि सहस्रेण शिरसा
हरः संक्षुभ्यैनं भजति भासितोद्धूलनविधिम् ॥ २ ॥

यहाँ तान्त्रिकों की रहस्यात्मक व्याख्या के उद्धरण का अवकाश नहीं है। केवल इतना संकेत किया जाता है—'शिव' यदि शक्तित्रय—ज्ञानशक्ति, इच्छाशक्ति और क्रियाशक्ति—से विरहित होता है, तो वही 'इ'काररूप शक्ति से हीन होकर 'शव'-स्वरूप 'स्पन्दन'-हीन हो जाता है। यही 'स्पन्द' सौन्दर्य का चपल-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूपात्मक समाकलन है। वही 'षोडशी' महामाया में अनन्त लोल-ललित-लहरियाँ बनकर 'त्रिपुरसुन्दरी' से विकीर्ण होता है। वही निर्माणात्मक क्रियाशक्ति है, जिसकी चरणधूलि के प्रभाव से ब्रह्मा सम्पूर्ण विश्व का निर्माण करते हैं—इत्यादि।

'शाक्त-प्रमोद' के षोडशीतन्त्रान्तर्गत पूजन-विधि में—मन्त्र, अङ्गन्यास, मुद्रा, पूजादि-वरिवस्यादिसमर्चा विशेष उल्लेख के साथ बताई गई है। प्राणप्रतिष्ठा का विधान और उपासनानुष्ठान आदि जिज्ञासु पाठक 'शाक्तप्रमोद' में देखें। 'षोडशी-कल्याणी-स्तोत्र' भी वहीं देखना चाहिए।

षोडशीसहस्रनामस्तोत्र 'श्रीवामकेश्वरतन्त्र' से लिया गया है। 'चूर्णिका' में कहा गया है—"इति श्रीवामकेश्वरतन्त्रे हरकुमारसंवादे महात्रिपुरसुन्दर्याः षोडश्याः सहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्।

अर्थात् श्रीवामकेश्वरतन्त्रान्तर्गत 'श्रीषोडशी=त्रिपुरसुन्दरी' का यह सहस्र-नामस्तोत्र शशिभूषण शंकर और षडानन उमाकुमार के संवाद द्वारा वर्णित है। इस 'सहस्रनामस्तोत्र' के वक्ता श्रीशंकर हैं और प्रश्नकर्ता (श्रोता) कार्तिकेय हैं।

फलश्रुति भी अन्त में है। आरम्भ में 'त्रिपुरसुन्दरी' की महिमा है। उसमें श्रीशंकर ने बताया है—

"इच्छा-ज्ञान-क्रियाशक्तिब्रह्मविष्णुशिवादयः।
त्रिधा शक्तिस्वरूपेण सृष्टिस्थितिविनाशिनी॥

सृज्यते ब्रह्मरूपेण विष्णुरूपेण पाल्यते।
संहरेद्रुद्ररूपेण जगदेतच्चराचरम्॥"

अर्थात् वही 'षोडशी-त्रिपुरसुन्दरी' इच्छा-ज्ञान-क्रियारूप शक्तित्रयात्मिका है। उन्हीं शक्तियों के उद्भूत प्रकट रूप ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र-स्वरूप में हैं। वे ही चराचर, स्थावर-जंगम विश्व का सृष्टि-स्थिति-संहरण करते रहते हैं।

इस 'सहस्रनामस्तोत्र' का विनियोग भी विशिष्ट है—"अस्य त्रिपुरमहासुन्दरी-सहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीभगवान् दक्षिणामूर्त्तिर्ऋषिः, जगतीच्छन्दः, समस्तप्रकट-गुप्तसम्प्रदायकुलकौलोत्तीर्णनिर्गर्भरहस्यप्रभावती देवता, ॐ बीजम्, माया शक्तिः, कामराजबीजकीलकम्, जीवो बीजम्, सुषुम्ना नाडी, सरस्वती शक्तिः, धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः"।

इस विनियोग में 'षोडशी-त्रिपुरसुन्दरी' का तान्त्रिक-परम्परावादी वैभव झलक उठता है। तदनन्तर ध्यानात्मक पद्य है—

'आधारे तरुणार्कबिम्बरुचिरं हेमप्रभावाग्भवं
बीजं मन्मथमिन्दुगोपसदृशं हृत्पङ्कजे संस्थितम्।
विष्णुब्रह्मपदस्थशक्तिकलितं सोमप्रभाभासुरं
ये ध्यायन्ति पदत्रयं तव शिवे ते यान्ति सौख्यं पदम्'॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस सहस्रनाम का आरम्भ है—

'कल्याणी कमला काली कराली कामरूपिणी।
कामाख्या कामदा काम्या कामना कामचारिणी'॥

समापन का अनुष्टुप् पद्य है—

'त्रिकोटरस्था त्रिविधा त्रिपुरा त्रिपुरात्मिका।
'त्रिपुरा श्रोत्रिजननी त्रिपुरा त्रिपुरसुन्दरी'॥

तदनन्तर विशिष्ट फलश्रुति के साथ यह समाप्त होता है।

इस सहस्रनामस्तोत्र के सन्दर्भ में कुछ विस्तृत चर्चा का कारण है कि 'आद्य-शंकराचार्य'-विरचित 'सौन्दर्यलहरी'-स्तोत्र बहुचर्चित है। अनेक बातें यहाँ कथ्य होने पर भी अप्रासंगिक होने से उन्हें लिखने का लोभ संवरण कर प्रसंग यहीं समाप्त करता हूँ।

(च) भुवनेश्वरीसहस्रनामस्तोत्र (चतुर्थ)

(भकारादि-भुवनेश्वरीसहस्रनामस्तोत्र)

यह सहस्रनामस्तोत्र (भुवनेश्वरी-भकारादिसहस्रनामस्तोत्र) 'महार्णवतन्त्र' के अन्तर्गत आया है। भुवनेश्वरी महाविद्या का ध्यान-पद्य वही है, जो दुर्गासप्तशती के एकादश अध्याय के आरम्भ में ध्यान का छन्द है—

"बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां (= उद्यद्दिनद्युतिमिन्दुकिरीटाम्[1])
तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशा-
भीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्"॥

इस सहस्रनामस्तोत्र का विनियोग है—

"भुवनेश्वरीसहस्रनाममन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, भुवनेश्वरी देवता, लज्जा बीजम्, कमला शक्तिः, वाग्भवं कीलकम्, सर्वार्थसाधने जपे विनियोगः"।

इस सहस्रनामस्तोत्र का प्रथम पद्य है—

"भुवनेशी भुवाराध्या भवानी भयनाशिनी।
भवरूपा भवानन्दा भवसागरतारिणी"॥ १॥

इस सहस्रनामस्तोत्र की सहस्रनामावली में १८४ वाँ पद्य अन्तिम है। उसी से 'सहस्रनाम' समाप्त होते हैं। वह पद्य है—

१. गीताप्रेस, गोरखपुर के संस्करण के ११वें अध्याय में पद्य का आरम्भ है—'बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटाम्' और 'शाक्तप्रमोद' के ध्यान में प्रथम चरण है—'उद्यद्दिनद्युतिमिन्दुकिरीटाम्'।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"भवदानन्दरमणी भवदानन्ददायिनी ।
भवदानन्दजननी भवदानन्दरूपिणी" ॥ १८४ ॥

इसके अनन्तर संक्षिप्त विधि-विधान है और सहस्रनामस्तोत्र पाठ की फलश्रुति के साथ २०३वें पद्य में इसकी समाप्ति है ।

ईश्वर सदाशिव इसके वक्ता हैं और जगदम्बिका पार्वती इसकी श्रोता है । स्वयं ईशान ने २०२वें पद्य में कहा है—

"विष्णवे कथितं पूर्वं ब्रह्मणेऽपि प्रियंवदे ।
अधुनापि तव स्नेहात् कथितं परमेश्वरि !"[1] ॥ २०२ ॥

(छ) छिन्नमस्ता (पञ्चम)

(छिन्नमस्तासहस्रनामस्तोत्र)

सारगर्भित तीन पद्यों के अधोलिखित ध्यानात्मक ललित छन्दों से महाविद्या 'छिन्नमस्ता' का स्वरूप और क्रिया का रहस्य ज्ञात हो जाता है । इन्हीं 'छिन्नमस्ता' का नाम 'प्रचण्डचडिण्का' भी है ।

"प्रत्यालीढपदां सदैव दधती च्छिन्नं शिरोकर्तृकां
दिग्वस्त्रां स्वकबन्धशोणितसुधाधारां पिबन्तीं मुदा ।
नागाबद्धशिरोमणिं त्रिनयनां हृद्युत्पलालङ्कृतां
रत्यासक्तमनोभवोपरिदृढां ध्यायेज्जपासन्निभाम् ॥

दक्षे चातिसिताविमुक्तकबरीकर्त्रीं तथा खप्परं
हस्ताभ्यां दधती रजोगुणभवा नाम्नापि सा वर्णिनी ।
देव्याश्छिन्नकबन्धतः पतदसृग्धारां पिबन्तीं मुदा
नागाबद्धशिरोमणिर्मनुविदा ध्येया सदा सा सुरैः ॥

प्रत्यालीढपदा कबन्धविगलद्रक्तं पिबन्ती मुदा
सैषा या प्रलये समस्तभुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी ।
शक्तिः सापि परात्परा भगवती नाम्ना परा डाकिनी
ध्येया ध्यानपरैः सदा सविनयं भक्तेष्टभूतिप्रदा" ॥

छिन्नमस्ता-सहस्रनामस्तोत्र की श्रोता देवी पार्वती हैं और वक्ता हैं भगवान् देवाधिदेव महादेव । श्रीछिन्नमस्तादेवी का दूसरा नाम 'श्रीप्रचण्डचण्डिका' या 'प्रचण्डिका' भी है, जैसा कि इसके विनियोग में कहा गया है—

---

१. बताया जाता है कि विन्ध्यवासिनी-धाम (मिर्जापुर, उ० प्र०) से ९-१० किलोमीटर दूर 'श्रीभुवनेश्वरीपीठ' का स्थान है । उसी के नाम पर एक संस्कृत महाविद्यालय भी है । 'समाज, धर्म और दर्शन' नाम की एक अनुसन्धान-पत्रिका वहाँ से प्रकाशित होती है । उसके किसी अंक में 'भुवनेश्वरी-महाविद्या' पर आचार्य श्रीबलदेव उपाध्याय का एक शोध-निबन्ध प्रकाशित है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'अस्य श्रीप्रचण्डचण्डिकासहस्रनामस्तोत्रस्य भैरव ऋषिः, सम्राट्च्छन्दः, प्रचण्ड-चण्डिका देवता, धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः'। इसके पूर्व श्रीदेवी की जिज्ञासा में है—"इदानीं छिन्नमस्ताया नाम्नां साहस्रकं शुभम्। मे प्रकाशय देवेश" इत्यादि। ध्यान और 'प्रचण्डचण्डिका' नाम से आभासित है कि मुख्यतः यह महाविद्या 'वामोपासना' की देवी हैं। इस सहस्रनामस्तोत्र का आरम्भ है—'प्रचण्डचण्डिका चण्डा चण्डदेव्यविनाशिनी'। और समापन है—'सर्वविश्वेश्वरीशक्तिः सर्वानन्दविधायिनी'॥

मध्य में कुछ ही पद्यों के अनन्तर अनेक नाम स्पर्श-वर्णों के (ककारादि से मकारादि तक) क्रम से भी हैं। अन्त में माहात्म्य और फलश्रुति भी है।।

'छिन्नमस्तासहस्रनाम-स्तोत्र' का अन्तिम पद्य है—

"मालामन्त्रमयी मन्त्रजपमाता मदालसा।
सर्वविश्वेश्वरीशक्तिः सर्वानन्दप्रदायिनी"॥

विधि-विधान से अनुष्ठित 'छिन्नमस्ता' का 'सहस्रनामस्तोत्र' एवं महाविद्या 'छिन्नमस्ता' उग्रफलदायिनी हैं।

(ज) त्रिपुरभैरवी (षष्ठ)

(त्रिपुराभैरवीसहस्रनामस्तोत्र)

'शाक्तप्रमोद' के आरम्भ में महाविद्या 'त्रिपुरभैरवी' के ध्यान का जो पद्य दिया गया है—वह प्रसिद्ध श्लोक है— दुर्गासप्तशती के तृतीय अध्याय का ध्यान-मन्त्र—

उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम्॥

काशी में अत्यन्त प्रसिद्ध 'त्रिपुराभैरवी' का मन्दिर है। वहाँ सहस्रों व्यक्ति दर्शन के 'नेमी' (नियमवान्) हैं। वे देवी का नित्य दर्शन करते हैं। मुहल्ले का नाम भी 'त्रिपुराभैरवी' है। कहीं-कहीं इन्हीं 'त्रिपुरभैरवी' या 'त्रिपुराभैरवी' का नाम 'भैरवी' भी मिलता है।

इस 'त्रिपुरभैरवीसहस्रनामस्तोत्र' के वक्ता हैं 'महाकाल भैरव', श्रोता हैं—महादेवी 'महेशानी'। इस 'सहस्रनामस्तोत्र' में १००८ 'भैरवी' देवी के नाम हैं—

"रुक्मिणी राधिका चैव भैरव्याः परिकीर्त्तितम्।
अष्टाधिकसहस्रं तु देव्या नामानुकीर्त्तनात्।
महापातकयुक्तोऽपि मुच्यते नात्र संशयः"॥

आदि स्तोत्र का माहात्म्य है। विनियोग है—

'अस्य श्रीत्रिपुरभैरवीसहस्रनामस्तोत्रस्य भगवानृषिः, पङ्क्तिच्छन्दः, आद्या शक्तिः, भगवती त्रिपुरभैरवी देवता, सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थे विनियोगः'।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस 'सहस्रनामस्तोत्र' का प्रारम्भ है—'त्रिपुरा परमेशानी योगसिद्धिनिवासिनी' से और अन्त होता है—उपर्युक्त 'रुक्मिणी राधिका.....' इत्यादि से। तदनन्तर कुछ लम्बी 'फलश्रुति' है। अन्त में है—

'श्रीविश्वसारे महाभैरवविरचितं श्रीमत्त्रिपुरभैरवीसहस्रनामस्तोत्रम्'।
इससे लगता है कि इसका स्रोत है—"श्रीविश्वसारतन्त्र"।

(झ) महाविद्या धूमावती देवी (सप्तम)

'शाक्तप्रमोद' में महाविद्या 'धूमावती' देवी का ध्यान आरम्भ में निम्नांकित रूप से दिया गया है—

'विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा।
विमुक्तकुन्तला रुक्षा विधवा विरलद्विजा॥
काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा।
शूर्पहस्तातिरुक्षाक्षा धूतहस्ता वरान्विता॥
प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा॥

इस स्वरूप के ध्यान से ही लगता है कि 'धूमवाती' 'भीमरूपा' हैं। 'छिन्नमस्ता', अंशतः त्रिपुरभैरवी और 'धूमावती' (महाकाली भी) आदि महाविद्याएँ 'वामोपासना' की मुख्य महाविद्याएँ हैं। पर इनकी 'दक्षिणोपासना' भी होती है और सहस्रनामस्तोत्र दक्षिणपन्थीय उपासना में अधिक प्रचलित हैं। 'छिन्नमस्ता' एवं 'धूमावती' महाविद्याओं के रूप भी भयोत्पादक एवं भैरव हैं। 'सहस्रनामस्तोत्र' से अन्यत्र इस महाविद्या के प्राणप्रतिष्ठापक सन्न्यास-बीजात्मक मन्त्र भी विकट हैं, अङ्गन्यास भी बृहत् और विचित्र है। इनकी पूजाविधि और स्तोत्र भी मननीय हैं।

काशी में धूमावती देवी का भी मन्दिर है। अनेक भक्त नित्य दर्शन करते हैं। 'धूपचण्डी' एक मुहल्ले के नाम से लगता है। 'धूमावती' का एक नाम 'धूपचण्डी' या 'धूमचण्डी' भी है।

इस सहस्रनामस्तोत्र के वक्ता हैं 'श्रीभैरव' और श्रोता या प्रश्नकर्ता हैं 'श्रीभैरवी'। इसका प्रारम्भ होता है—

'धूमा धूमावती धूमा धूमपानपरायणा।
धौता धौतगिरा धाम्नी धूमेश्वरनिवासिनी'॥

श्लोक-संख्या ३ से और अन्त है—

'साङ्गसायुधसर्वारि-सर्वसम्पत्तिनाशिनी ।
साङ्गसायुधसर्वारि-देहगेहप्रदाहिनी' ॥

श्लोक-संख्या १६९ से। तदनन्तर फलश्रुति है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इसके स्रोत का 'शाक्तप्रमोद' में कोई उल्लेख नहीं है। एक तन्त्रविशेषज्ञ का कथन है कि 'रुद्रयामल' का यह 'सहस्रनाम' है। 'रुद्रयामल' भी समग्र अनुपलब्ध है। इसका विनियोग है—

'ॐ अस्य श्रीधूमावतीसहस्रनामस्तोत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः, पङ्क्तिश्छन्दः, धूमावती देवता, शत्रुविनिग्रहे पाठे विनियोगः'। विस्तार देखें 'शाक्तप्रमोद' में।

(ञ) बगलामुखी-सहस्रनामस्तोत्र (अष्टम)

'शाक्त-प्रमोद' के 'बगलामुखी तन्त्र' के प्रारम्भ में ही 'बगलामुखी' के ध्यानात्मक जो दो पद्य हैं, उनसे देवी के ध्यान का ही नहीं, शक्ति और उपासना के फल का भी परिचय मिल जाता है। द्वितीय पद्य तो परमप्रसिद्ध है। वह प्रायः विख्यात 'बगलामुखी' स्तोत्र में उपलब्ध है।

इन्हीं महाविद्या को 'पीताम्बरा'[1] भी कहते हैं।

'बगलामुखी'-स्तोत्र के पाठ का और 'बगलामुखी' मन्त्र के सपादलक्ष-संख्यक या लक्ष-संख्यक जपानुष्ठान का बड़ा प्रचलन है। जपानुष्ठान हरिद्रा की माला से होता है। शत्रु या विरोधी के पराजय और वाक्स्तम्भ, असफलता और शत्रुबुद्धिनाश के निमित्त भी इनका अनुष्ठान अतीव लोकप्रिय है। ध्यानात्मक पद्य नीचे अंकित हैं—

'मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेदीं सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीं देवीं नमामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम्॥

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि॥

इनका प्रणामात्मक छन्द, जो बगलामुखीस्तोत्र का छठाँ पद्य है, 'बगलामुखी' के प्रभाव को अत्यन्त स्पष्ट रूप में रेखांकित करता है। 'बगलामुखी' की साधना और उपासना का अपार विस्तार है—

'वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति
क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति।
गर्व्वी खर्व्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रणायन्त्रितः
श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः॥

---

१. (क) काशी के विख्यात तान्त्रिक, स्व० रमानाथ व्यास द्वारा निर्मित 'पीताम्बरा' मन्दिर, सिद्धेश्वरी महाल में है। यहाँ की अनेक किंवदन्तियाँ हैं। मन्दिर भव्य और दर्शनीय है। चित्रों से समलङ्कृत है।

(ख) 'मध्य-प्रदेश' के 'दतिया' स्थानान्तर्गत महासिद्ध स्व० स्वामी जी ने बड़ा ही भव्य 'पीताम्बरा'-पीठ स्थापित किया है। वहाँ से अनेक प्रकाशन भी हुए हैं। वह 'सिद्धपीठ' माना जाता है। 'पीठ' दर्शनीय है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'बगलामुखीस्तोत्र' के समस्त पद्यों में महाविद्या के प्रभावसंपृक्त पद्य भरे पड़े हैं। बगलामुखी (पीताम्बरी = पीताम्बरा) के सहस्रनामपाठ का विनियोग है— 'ॐअस्य श्रीपीताम्बरीसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य भगवान् सदाशिव ऋषिरनुष्टुप् छन्दः' श्रीजगदीश्वरी पीताम्बरी देवता, सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः'। इस 'बगलामुखी-सहस्रनामस्तोत्र' को—

'रोधिनो विघ्नसङ्घानां मोहिनो परयोषिताम्।
स्तम्भिनी राजसैन्यानां वादिनी परवादिनाम्' ॥ कहा गया है।

यह 'बगलामुखीसहस्रनामस्तोत्र' का छठाँ-सातवाँ पद्य है।

इस सहस्रनामस्तोत्र की शैलाधिराजतनया उमा भवानी प्रमुख श्रोता हैं और प्रधान परमेश्वर प्रमुख वक्ता हैं। श्रीभगवान् भी द्वितीय वक्ता हैं। १८ वें पद्य के उत्तरार्ध—"ब्रह्मास्त्रब्रह्मविद्या च ब्रह्ममाता सनातनी" से प्रारम्भ होकर "परारूपवती देवी त्रैलोक्याकर्षकारिणी" (पद्य १७६) में यह सहस्रनामस्तोत्र समाप्त होता है। तत्पश्चात् संक्षिप्त फलश्रुति और माहात्म्य आदि हैं। १८८वाँ श्लोक अन्तिम है।

इसका स्रोत 'उत्कट शम्बर' का 'नागेन्द्रप्रयाणतन्त्र' है—जैसा की चूर्णिका में बताया गया है—"इति श्री-उत्कटशम्बरे नागेन्द्रप्रयाणतन्त्रे षोडशसाहस्रे विष्णुशङ्कर-संवादे श्रीपीताम्बरीसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्"।

(ट) महाविद्यामातङ्गीसहस्रनामस्तोत्र (नवम)

'मातङ्गीतन्त्र' के प्रारम्भ में 'महाविद्या-मातङ्गी' का ध्यानपरक एक विशिष्ट पद्य है—

"देवीं षोडशवार्षिकीं शवगतां माध्वीरसाघूर्णितां
श्यामाङ्गीमरुणाम्बरां पृथुकुचां गुञ्जावलीशोभिताम्।
हस्ताभ्यां दधतीं कपालममलं तीक्ष्णां तथा कर्तृकां
ध्यायेन्मानसपङ्कजे भगवतीमुच्छिष्टचाण्डालिनीम्" ॥

दुर्गासप्तशती के अध्याय सप्तम के आरम्भ के पूर्व भी 'मातङ्गी' देवी का ध्यानपरक श्लोक है—

'ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्।
कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां
'मातङ्गीं' शङ्खपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिमालाम्' ॥
(गीताप्रेस, गोरखपुर)

'रुद्रयामल' नामक प्रसिद्ध तान्त्रिक ग्रन्थ में 'मातङ्गी-महाविद्या' का स्तुतिपरक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक स्तोत्र है। उसके पठन से आभास होता है कि 'मातङ्गी' की उपासना से गूढ़ातिगूढ़ आम्नायादिकों का अर्थबोध सुलभ होता है—

"नमामि देवीं नवचन्द्रमौलेर्मातङ्गिनीं चन्द्रकलावतंसाम्।
आम्नायप्राप्तिप्रतिपादितार्थं प्रबोधयन्तीं प्रियमादरेण" ॥ २२ ॥

इस सहस्रनाम के प्रवक्ता स्वयं साक्षात् ईश्वर हैं और श्रोता हैं देवी माता सुमुखी। विनियोग भी पद्यात्मक है—

'मातङ्गोऽस्य ऋषिश्छन्दोऽनुष्टुब्देवी समीरिता।
सुमुखी विनियोगः स्यात्सर्वसम्पत्तिहेतवे' ॥

'मातङ्गीसहस्रनामस्तोत्र' का प्रारम्भ है—

'ॐ सुमुखी शेमुषीसेव्या सु-रसा शशिशेखरा'।

परन्तु ३-४ पद्यों के पश्चात् ही ककारादि नागरी-वर्णमालाक्रमानुकूल नाम हैं। अन्त में है—

"क्षया क्षयकरी क्षीरा क्षीरदा क्षीरसागरा।
क्षेमङ्करी क्षयकरी क्षयकृत् क्षणदा क्षतिः ॥
क्षुद्रिका क्षुद्रिका क्षुद्रा क्षुत्क्षामा क्षीणपातका।
मातुः सहस्रनामेदं सुमुख्याः सिद्धिदायकम्" ॥

तदनन्तर लम्बी फलश्रुति, पूजापाठ-विधिविधान आदि हैं। अन्तिम ललित छन्द है—

"वन्दे श्रीसुमुखीं प्रसन्नवदनां पूर्णेन्दुबिम्बाननां
सिन्दूराङ्कितमस्तकां मधुमदोल्लोलाञ्च मुक्तावलीम्।
श्यामाङ्कुञ्जलिकाकराङ्करगतां चाध्यापयन्तीं शुकं
गुञ्जापुञ्जविभूषणां सकरुणामामुक्तवेणोलताम्" ॥

'मातङ्गी'-सहस्रनामस्तोत्र का स्रोत बताया गया है—श्रीनन्द्यावर्त्ततन्त्र का उत्तर खण्ड।

(ठ) कमलात्मिका महाविद्या-सहस्रनामस्तोत्र (दशम)

कमलात्मिका (कमला = लक्ष्मी) देवी के ध्यान का स्वरूप 'शाक्तप्रमोद' के अनुसार निम्नांकित है—

'कान्त्या काञ्चनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजै-
र्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघटैरासिच्यमानां श्रियम्।
बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां
क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बललितां वन्देऽरविन्दस्थिताम्' ॥

इस 'सहस्रनाम' के आरम्भ में 'सनत्कुमार' ने इस स्तोत्र के आविर्भाव का पुरातन इतिहास बताया है। तदनुसार 'कमलात्मिका-सहस्रनामस्तोत्र' के वक्ता हैं श्रीभगवान्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कमलापति विष्णु और श्रोता हैं सृष्टिकर्ता हिरण्यगर्भ ब्रह्मदेव। प्रस्तुत 'सहस्रनामस्तोत्र' का उपक्रम करते हुए सृष्टिपालक विष्णु ने बताया है कि—

'देव्याख्या स्मृतिमात्रेण दारिद्र्यं याति भस्मताम्'।

एतदनन्तर सहस्रनामस्तोत्र उपक्रमित होता है—

'श्रीः पद्मा प्रकृतिः सत्त्वा शान्ता चिच्छक्तिरव्यया।
केवला निष्कला शुद्धा व्यापिनी व्योमविग्रहा'॥

उपर्युक्त ३२वें पद्य से और समापन है निम्नोक्त १५७वें पद्य से—

'परा निर्म्महिमा देवी हरिवक्षःस्थलाश्रया।
'सा देवी पापहन्त्री च सान्निध्यं कुरुतां मम॥ १५७॥

तत्पश्चात् १७६वें पद्य तक फलश्रुति आदि हैं।

'कमलात्मिका-सहस्रनामस्तोत्र' की समाप्ति के अनन्तर 'शाक्तप्रमोद' में स्तोत्र-स्रोत का परिचय देते हुए बताया गया है—

'इत्यादि ब्रह्मपुराणे कश्मीरवर्णने हिरण्यगर्भहृदये सर्वकामप्रदायकं पुरुषोत्तमेन प्रोक्तं लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्'।

इनके अपर नाम हैं—'कमला', 'लक्ष्मी' आदि।

उपर्युक्त पंक्तियों में कतिपय प्रमुखतर सहस्रनामस्तोत्रों की शृंखला का संक्षिप्त वर्णन दे दिया गया है। इनके अतिरिक्त अन्य प्रमुखाप्रमुख सहस्रनामों के उल्लेख मिलते हैं—जैसे (क) गायत्रीसहस्रनाम, (ख) देवीसहस्रनाम, (ग) लक्ष्मी-सहस्रनाम और (घ) सरस्वती-(या शारदा) सहस्रनाम आदि।

सन् १९७९ (द्वितीय-संस्करण) में 'ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुक्सेलर' द्वारा प्रकाशित 'देवीसहस्रनामावलिः' (सम्पादक-आचार्य शिवदत्त मिश्र शास्त्री) में 'देवी-सहस्रनामावली' और 'गायत्री-सहस्रनामावली' का उल्लेख है। इसमें सहस्रनामस्तोत्रों का संग्रह नहीं है।

अतः विस्तारभय से इतना ही यहाँ लिखकर प्रस्तुत प्रकरण समाप्त किया जा रहा है।

(ख) गङ्गा के सन्दर्भ में

संस्कृत के प्राचीन वाङ्मय में गङ्गा का उल्लेख

सामान्य रूप में यह सर्वमान्य मत है कि भारतीय पुरातन संस्कृत-वाङ्मय में 'ऋग्वेदसंहिता' प्राचीनतम है। उसके प्रसिद्ध नदीसूक्त में एक अत्यन्त प्रसिद्ध ऋचा है—

"इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकोये शृणुह्या सुषोमया"॥

(ऋग्वेदसंहिता, १०।७५।५)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इसमें सर्वप्रथम नाम लिया गया है 'गङ्गा' का। इससे 'गङ्गा' नदी की वैदिक आर्यों में सर्वोच्च महत्ता का आभास तो मिलता ही है—इससे यह भी सूचित होता है कि 'ऋग्वेद'-संहिता-काल से ही—अति प्रत्नयुग से ही—गङ्गा की सर्वोच्च महिमा सर्वमान्य है। उक्त संहिता (६।४५।३१) में 'गाङ्गय' पद का भी प्रयोग मिलता है।

'शतपथ-ब्राह्मण' (१३।५।११ तथा १३) में एवं 'ऐतरेय-ब्राह्मण' (३९।९) में 'गङ्गा' एवं 'यमुना' के तटों की चर्चा है। वहाँ बताया गया है कि दुष्यन्तपुत्र 'भरत' ने विजयप्राप्ति के पश्चात् 'अश्वमेध-यज्ञ' किया था।

'वाल्मीकिरामायण' में भी रामवनगमन के प्रसंग में गंगा की चर्चा तो है ही, आदिकवि का 'गङ्गाष्टक' भी अत्यन्त विख्यात है।

महाभारत के अनेक प्रसंगों में गङ्गा की महिमा गाई गई है। वनपर्व के ८५वें अध्याय में गङ्गा के महत्त्व की अनेक श्लोकों में (८८-९७) कीर्ति मिलती है। वहाँ बताया गया है कि गङ्गा में कहीं भी यदि स्नान किया जाय, तो वह 'कुरुक्षेत्र' में स्नान के समान फलद है। [यतः द्वापर में 'कुरुक्षेत्र' तीर्थ का अतिविशिष्ट माहात्म्य था—अतः उपर्युक्त कथन हुआ है।] वहीं 'कनखल' और 'प्रयाग' तीर्थों को क्रमशः श्रेष्ठ और श्रेष्ठतर कहा गया है। यह भी बताया गया है कि सैकड़ों पापों का कर्त्ता, गङ्गा में अभिषेचन कर ले, तो उसके पापपुञ्ज भस्मसात् हो जाते हैं। इसी प्रसङ्ग में उक्त है कि 'सत्ययुग' में सभी तीर्थ अपने-अपने स्थान पर पवित्र हैं, 'त्रेता' में 'पुष्कर' की विशिष्ट महिमा है, 'द्वापर' में 'कुरुक्षेत्र' और 'कलियुग' में 'गङ्गा' का माहात्म्य वर्णनातीत है।

इसी 'महाभारत' के अनुशासन पर्व (अध्याय—३६।२६,३०-३१) में 'गङ्गा' की महिमा का स्तवन किया गया है। श्रीमद्भगवद्गीता में तो भगवान् ने स्वयं अपने आपको 'जाह्नवीस्वरूप' ['स्रोतसामस्मि जाह्नवी' (अ० १०, श्लो० ३१)] बताया है। 'मनुस्मृति' के भी आठवें अध्याय के बानबेवें पद्य में गङ्गा की चर्चा करते हुए कहा गया है—

'तेन चेदविवादस्ते मा गङ्गां मा कुरून् गमः'।

अनेकानेक पुराणों, उपपुराणों, निबन्ध-ग्रन्थों, त्रिस्थलीसेतु एवं तीर्थमाहात्म्य-परक ग्रन्थों में गङ्गा की महिमा भरी पड़ी है। (१) 'विष्णुपुराण' (२।८।१०९ तथा २।८।१२०-१२१) में, (२) 'पद्मपुराण' के अनेक खण्डों में (५।२५।१८८; ६।२६७।४७; १।३।६५-६६) एवं काशीमाहात्म्यपरक तृतीय-खण्ड में प्रसंगतः तथा अन्यत्र भी, (३) 'मत्स्यपुराण' (१२१।३८-४१) तथा अन्य 'काशी' या 'वाराणसी' की महिमा से संपृक्त वर्णनों में, (४) 'ब्रह्माण्डपुराण' (२।१८।३९-४१), (५) 'कूर्मपुराण' (१।४६।३१; १।३७।३४), (६) 'ब्रह्मपुराण' (६३।६८-६९), (७) 'नारदीयपुराण' (३९।१६-१७,३०-३१), (८) 'वराहपुराण' (अध्याय—८२-गद्य में), (९) 'गरुडपुराण'—पूर्वार्ध (८१।१-२) इत्यादि। यहाँ कुछ पुराणों के नामोल्लेखमात्र किये गये हैं, सन्दर्भ भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिये गये हैं। इन्हीं पुराणों में गङ्गा का अनेक प्रसङ्गों में अन्यत्र भी वर्णन है। इनके अतिरिक्त 'लिङ्गपुराण', 'शिवपुराण', 'श्रीमद्भागवतपुराण', 'भविष्यपुराण' आदि में विविध प्रसङ्गों में 'गङ्गा' की पुण्यशीलता, पावनता, पापविमोचन-क्षमता, मुक्ति-प्रदायकता-प्रभृति माहात्म्य के वर्णन भरे पड़े हैं। उन सबको एकत्र किया जाय, तो विशाल ग्रन्थ लिखा जा सकता है। यहाँ स्वल्प संकेत मात्र कर क्षमा चाहता हूँ। इतना ही कहूँगा कि स्कन्दपुराणान्तर्गत 'काशीखण्ड' में काशी, विश्वनाथ और उत्तर-वाहिनी 'गङ्गा' का कीर्तिगान आद्यन्त भरा पड़ा है। पुराणकार उनकी महिमा गाते नहीं अघाते। वहाँ परोक्षरूप से गङ्गा-माहात्म्य तो ओत-प्रोत है ही, प्रत्यक्षतः भी २७वें अध्याय से २९वें अध्याय तक गङ्गामाहात्म्य गुम्फित है। इसकी कुछ चर्चा की जा चुकी है। शेष 'गङ्गासहस्रनाम' की अवतरणिका में होगी।

संस्कृत के कतिपय प्रवन्ध-ग्रन्थों और अनेक स्वतन्त्र ग्रन्थों में गङ्गाकीर्तन एवं उसकी महिमा भरी पड़ी है। कुछ ग्रन्थों के उल्लेख नीचे किये जाते हैं—

(१) लक्ष्मीधर के 'तीर्थकल्पतरु' (रचनाकाल–१११० ई० से ११२० ई० के आसपास) में वाराणसी-चर्चा के प्रसङ्ग में 'गङ्गामाहात्म्य' मिलता है।

(२) तीर्थमाहात्म्य-परक परमप्रसिद्ध 'त्रिस्थलीसेतु'-शीर्षक ग्रन्थ में प्रायः समस्त प्रमुख तीर्थों और वहाँ के अनुष्ठेय कृत्यों का वर्णन है। पर आगे चलकर (क) प्रयाग, (ख) काशी और (ग) गया से सम्बद्ध तीन तीर्थों और वहाँ विधेय कृत्यों की विस्तृत चर्चा है। प्रसङ्गतः वहाँ काशी के साथ गङ्गा का माहात्म्य भी मिलता है।

(३) वाचस्पति मिश्र-रचित पाँच प्रकाश वाला 'तीर्थचिन्तामणि' ग्रन्थ विशिष्ट महत्त्व का है। उसमें भी (पृ० १९८) गङ्गा-महिमा-प्रसङ्ग में कहा है—

"दर्शनात् स्पर्शनात्पानात्तथा गङ्गेति कीर्त्तनात्।
स्मरणादेव गङ्गायाः सद्यः पापैः प्रमुच्यते"॥

लगभग इसी आशय के पद्य 'गङ्गावाक्यावली' एवं 'गङ्गाभक्तितरङ्गिणी' में भी हैं। इस वर्ग के अनेक ग्रन्थों में अनेकानेक ऐसे वचन बिखरे पड़े हैं, जिन्हें विज्ञ जन देख सकते हैं।

केवल गङ्गा के माहात्म्य और पावनकारिता को केन्द्र में रखकर छोटे-बड़े बहुत से ग्रन्थ भी—भारत की सभी संस्कृत और प्रादेशिक भाषाओं में निर्मित हैं। अनुशीलक इस वर्ग की रचनाओं को ढूँढ़ सकते हैं। यहाँ संस्कृत की कतिपय प्रमुख गङ्गामाहात्म्यपरक कृतियों का नामोल्लेख नीचे किया जा रहा है—

(१) गङ्गाधरपद्धति—गङ्गाधररचित।

२. गङ्गाकृत्यविवेक—कहा जाता है कि इसका निर्माण ई० सन् १४५०–१५०० के मध्य वर्धमान ने किया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३. **गङ्गाभक्तितरङ्गिणी** (प्रथम)—धारेश्वर के पुत्र गणपति द्वारा संवत् १७६६ (सन् १७१० ई०) के लगभग इसका निर्माण किया गया।

४. **गङ्गाभक्तितरङ्गिणी** (द्वितीय)—के निर्माता चतुर्भुजाचार्य हैं। (इसका निर्माण-काल ज्ञात न हो सका।)

५. **गङ्गामृत**—इसके रचनाकारों में दो संयुक्त नाम हैं—(१) वर्धमान, (२) रघुनन्दन। समय वही वर्धमान का (सन् १४५०–१५००) के मध्य।

६. **गङ्गावाक्यावली**—भर्वसिंह, देवसिंह, शिवसिंह के वंशज मिथिलाराज पद्मसिंह की महिषी विश्वासदेवी के लिए विद्यापति द्वारा विरचित।

७. **गङ्गाभक्तिप्रकाश** रचना-काल संवत् १८५२, (सन् १७९५-९६)। केवल कुछ प्रमुख संस्कृत-भाषा की उन कृतियों के केवल नामोल्लेख करते हुए प्रसंग का उपसंहार करता हूँ, जो विशिष्ट हैं।

संस्कृत-भाषा के अतिरिक्त उत्तर और दक्षिण की प्राचीन-नवीन-भाषाओं में गङ्गामाहात्म्य के आधार पर अनेकानेक स्वतन्त्र ग्रन्थ रचित हैं। उन सबकी न तो कहीं एकत्र जानकारी मिली और न उनके विवरण-प्रस्तवन का यहाँ अवसर ही है।

गङ्गामाहात्म्य से ही सम्बद्ध सैकड़ों स्तोत्र संस्कृत में और सहस्रों संस्कृतेतर भाषाओं में हैं। 'वाल्मीकि' का 'गंगाष्टक' कदाचित् लौकिक संस्कृत का आदि स्तव है। कालिदास, शंकराचार्य के गंगाष्टक भी प्रायः सभी स्तोत्र-संग्रहपरक ग्रन्थों में हैं। अनेकानेक पुराणादि एवं आगम-ग्रन्थों में भी गंगास्तोत्र बिखरे पड़े हैं। पंडितराज जगन्नाथ की 'गंगालहरी' अनुपम, इक्यावन ललित श्लोकों की है। हिन्दी में भी महाकवि 'पद्माकर' और 'रत्नाकर' के स्तोत्र सुन्दर हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी बहुत कुछ लिखा है।

भौगोलिक दृष्टि और वैज्ञानिक दृष्टि—

गङ्गा, भारतवर्ष की एक प्रधानतम नदी है। वह हिमालय की हिमगुफा से निकलकर १५६० मील पूर्व को बहकर बंगाल की खाड़ी के गङ्गासागर स्थान में गिरती है। इसका जल-मार्ग, भारत का सबसे बड़ा नदी-जलमार्ग है, संसार के भी लम्बे जल-मार्गों में से एक है।

भारतीयों के लिए यह नदी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। हिन्दू-धर्म में इसकी व्यापक महत्ता वर्णित है। हिन्दू इस नदी को परम पवित्र मानते हैं। इसमें स्नान करना पुण्य समझते हैं। वे इसे माता का स्थान देते हैं। प्रति वर्ष दूर-दूर से लाखों यात्री वाराणसी, प्रयाग तथा हरिद्वार आदि पवित्र नगरों में गङ्गास्नान के लिए आते हैं। गङ्गा नदी के किनारे प्रायः सभी नगरों के समीप मन्दिरों तथा सीढ़ीदार घाटों की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पंक्तियाँ हैं। हिन्दुओं का यह दृढ़ विश्वास है कि गङ्गास्नान से सभी प्रकार के पापों से मुक्ति हो जाती है तथा जिन लोगों का दाह-संस्कार इस नदी के तट पर होता है, वे सभी स्वर्ग या मोक्ष प्राप्त करते हैं।

पुराणों के अनुसार गङ्गा, हिमालय की पुत्री हैं। इनकी माता का नाम मनोरमा है। वह सुमेरु की कन्या थीं। कहते हैं, गङ्गा पहले स्वर्ग में थीं। जब सगर के साठ हजार पुत्रों को कपिल जी ने भस्म कर डाला, तब उनके उद्धार के लिए भगीरथ, गङ्गा जो को स्वर्ग से धरती पर ले आये। इसीलिए गङ्गा को 'भागीरथी' कहते हैं।

गङ्गा जब स्वर्ग से गिरी थीं, तब शिव जी ने उन्हें जटा में धारण किया था। इसी से भगवान् शिव को गङ्गाधर भी कहते हैं और गङ्गा को 'शिवजटाविहारिणी'। पुराणानुसार गङ्गा की तीन धाराएँ हैं—एक स्वर्ग में है। उसे आकाशगङ्गा या मन्दाकिनी कहते हैं। दूसरी धरती पर और तीसरी पाताल में।

गङ्गा का उद्गम उत्तर भारत में १३,८०० फीट ऊँची हिमाच्छादित गंगोत्री के समीप एक हिम-गुफा में है। यहाँ इसे भागीरथी कहते हैं। गङ्गा की धारा जिस स्थान से निकलती है, उसे 'गंगोत्री' कहते हैं। 'गामुखी' जैसी प्रणालिका से गङ्गा गिरती हैं। बाद में मन्दाकिनी और अलकनन्दा से मिलकर गङ्गा के नाम से अभिहित होती हैं। अलकनन्दा और भागीरथी के संगम पर देव-प्रयाग नामक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है। इस नदी को संसार की ऊँची चोटियों—नन्दा देवी, गुरला, मान्धाता, धौलागिरि, कंचनजंघा और एवरेस्ट—की पिघली हुई बर्फ से जल प्राप्त होता है। 'सुखी' स्थान के निकट हिमालय से निकल कर यह मैदान में प्रवेश करती है। दक्षिण-पश्चिम हरिद्वार की ओर, जो अतिप्राचीन और पवित्र स्थान है, मुड़ जाती है। हरिद्वार के पूर्व 'हृषीकेश' प्रसिद्धतीर्थ स्थान है। 'हरिद्वार' के पास ही सटा हुआ 'कनखल' भी है, जिसका उल्लेख महाकवि 'कालिदास' के 'मेघदूत' नामक खण्डकाव्य में है। इसके बाद देहरादून, मुजफ्फरनगर, बुलन्दशहर और फर्रुखाबाद आदि जिलों में टेढ़ी-मेढ़ी बहती हैं। अन्तिम जिले में इससे रामगङ्गा मिलती हैं। प्रयाग में यह यमुना से मिलती हैं।

यहाँ के संगम का जिह्वाकार भाग हो प्रयाग का वास्तविक तीर्थस्थान है। यहाँ लाखों धर्मनिष्ठ हिन्दू प्रति-वर्ष माघ-मेला और कुम्भपर्व के अवसर पर स्नान करते हैं। हर १२वें वर्ष यहाँ कुम्भ का और ६ठें वर्ष अर्धकुम्भ का मेला लगता है। इसके बाद दक्षिण-पूर्व से पूर्व की ओर बहती हुई तथा मिर्जापुर से होती हुई यह वाराणसी की पवित्र नगरी में प्रवेश करती हैं।

यहाँ इसके किनारे सुन्दर घाटों का आकर्षक दृश्य अनुपम है। ऐसा दृश्य विश्व में अन्यत्र दुर्लभ है। वाराणसी में ही दक्षिण की ओर 'असि' (वर्त्तमान नाला और प्राचीन छोटी नदी) मिलती है। उत्तर में 'आदिकेशव' के पास 'वरणा' नदी का संगम है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यहीं 'वारुणी' स्नान का मेला—चैत्र-कृष्ण त्रयोदशी को—लगता है। सहस्रों लोग वहाँ संगम पर स्नान करते हैं। 'असि' और 'वरणा' नदियों के मध्य स्थित होने से ही काशीखण्ड में इसे वाराणसी कहा गया है। आगे जाने पर इसमें गोमती मिल जाती है। तत्पश्चात् यह गाजीपुर-बलिया जिले से होती हुई बिहार में प्रवेश करती हैं। यहाँ उत्तर-प्रदेश और बिहार की सीमा पर बलिया जिले में घाघरा नदी इसमें मिलती है। बिहार में प्रवेश करने के कुछ दूर पश्चात् दक्षिण से आकर 'सोन' नद इसमें मिल जाता है। पटना के सम्मुख नेपाल से निकली हुई 'गण्डक' नदी इससे मिल जाती है। पूर्व में कोसी से मिलने के बाद राजमहल की पहाड़ियों के किनारे-किनारे बहती हुई दक्षिण की ओर मुड़कर बंगला-देश से होती हुई यह बंगाल की खाड़ी में गिरती है। गिरने से पूर्व 'ब्रह्मपुत्र' महानद भी इसमें आ मिलता है।

गंगा नदी की घाटी उपजाऊ एवं घनी जनसंख्यावाली है। इसका पर्याप्त जल सिंचाई के लिए भी प्रयुक्त होता है। भारत के कुछ प्रमुख नगर जैसे—कलकत्ता, पटना, वाराणसी, इलाहाबाद एवं कानपुर आदि इस नदी के किनारे स्थित हैं।

व्यापार के लिए गङ्गा की सर्वप्रमुख 'डेल्टायी' शाखा हुगली हैं। इसके मुहाने से लगभग ९० मील की दूरी पर स्थित कलकत्ता प्रमुख व्यावसायिक नगर एवं पत्तन है। नदी के मुहाने पर सुन्दर वन का प्रसिद्ध एवं विस्तृत डेल्टा है, जहाँ सदाबहार एवं सघन जंगल हैं। यहाँ के वनों में सुन्दरी नामक पेड़ अधिकता से उगते हैं।

गङ्गा का अपवाह क्षेत्र उत्तर में हिमालय को ७०० मील लम्बी श्रेणियों, दक्षिण में विन्ध्याचल पर्वत और पूर्व में बंगाल (अविभाजित) और ब्रह्म-देश को विभाजित करने वाली श्रेणियों द्वारा घिरा हुआ है। इसका क्षेत्रफल ४,३२,४८० वर्ग मील है। इसकी ढ़ाल लगभग समान है। सर्वाधिक ढ़ाल (औसत ६ इञ्च प्रति मील) प्रयाग और वाराणसी के बीच है। इस नदी से अनेक प्रमुख नहरें निकाली गयी हैं। उनमें ऊपरी गङ्गा नहर और निचली गङ्गा नहर का उद्गम-स्थल हरिद्वार में हैं।

वैज्ञानिक दृष्टि—

वैज्ञानिक दृष्टि से भी 'गङ्गाजल' का अत्यन्त महत्त्व है। 'फ्रांस' देश के रसायन-विज्ञान और भौतिक-विज्ञान के एक पण्डित ने आज से साठ-सत्तर वर्षों पूर्व 'गङ्गाजल' शुद्ध शीशे के पात्र में एक वर्ष तक रखकर देखा कि उसमें कीड़ियाँ नहीं पड़ीं। मिलों के रासायनिक प्रदूषणों को जब से प्रत्यक्षतः वा अप्रत्यक्षतः गङ्गा में विसर्जित किया जाने लगा है, तब से ही 'गङ्गाजल' प्रदूषित होने लगा है। अतः आज पूर्वकाल की स्थिति नहीं है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के रसायन-विज्ञान के एक प्रोफेसर ने वाराणसी और अन्यत्र से दस-पन्द्रह वर्ष पूर्व गङ्गाजल के पचासों 'सेम्पुल' लेकर रासायनिक परीक्षण किया था। निष्कर्ष निकला था प्रदूषित गङ्गा का पानी प्रवाहशील

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जल में ५०-६० फीट तक जाते-जाते प्रायः प्रदूषण-रहित हो जाता है। उनके एक शोध-छात्र ने इस विषय पर शोध-प्रबन्ध लिखकर शोधोपाधि भी अर्जित की है।

हम लोग भी पचास-साठ वर्षों पूर्व काशी में बीच गङ्गा के जल से बोतल भर कर वर्ष-पर्यन्त रखते थे। उसमें चक्षुर्दृश्य कृमि दृष्टिगोचर नहीं होते थे—जब कि कूपजल में १५-२० दिन बाद ही कीड़े दिखाई देने लगते थे। आज 'गङ्गाजल' की वह वैज्ञानिक महिमा प्रदूषित और कलुषित कर दी है—रासायनिक और नागरिक 'सीवर'-प्रणालिका से विसर्जित मल-कीचड़-कचरा आदि ने। गङ्गाजल की वैज्ञानिक महत्ता का विशेष विश्लेषण करने का पूर्ण अधिकारी विज्ञानवेत्ता ही हो सकता है। मैं उसका अनधिकारी हूँ। अतः प्रस्तुत प्रसंग यहीं समाप्त करता हूँ।

(ग) श्रीगङ्गासहस्रनामस्तोत्र और उसकी अवतरणिका
(गंगादशहरास्तोत्र)

'काशीखण्ड' के सत्ताईसवें अध्याय में 'गङ्गादशहरा'-स्तोत्र है। वह अग्रिम पंक्तियों में उद्धृत किया जा रहा है। इसी सत्ताईसवें अध्याय से गंगा की महिमा, पार्वतीनन्दन 'स्कन्द' ने अगस्तमुनि को सुनाई है। 'अविमुक्त' क्षेत्र की महिमा के प्रसंग में वह सुनायी गयी है। 'अविमुक्त' क्षेत्र के माहात्म्य के वक्ता—कुमार स्कन्द के अनुसार—महादेव हैं और श्रोता हैं त्रैलोक्य-सुन्दर विष्णुभगवान्।

इसी प्रसंग में कुछ पद्यों में 'गंगावतरण' की कथा का संकेत मात्र किया गया है। पद्य हैं—

"निर्दग्धान् सागरान् श्रुत्वा कपिलक्रोधवह्निना।
अश्वमेधाश्वसंयुक्तान् पूर्वजान् स्वान् भगीरथः॥

सूर्यवंशे महातेजा राजा परमधार्मिकः।
आरिराधयिषुर्गङ्गां तपसे कृतनिश्चयः॥

हिमवन्तं नागश्रेष्ठममात्यन्यस्तराज्यधूः।
जगाम यशसां राशिरुद्दिधीर्षुः पितामहान्॥

ब्रह्मशापाग्निनिर्दग्धान् महादुर्गतिगानपि।
विना त्रिमार्गगां विष्णो! को जन्तूंस्त्रिदिवं नयेत्"[1]॥

[काशीखण्ड, अध्याय २७, पद्य ३-६]

---

१. 'सूर्यवंश के महातेजस्वी राजा भगीरथ ने सुना कि अश्वमेध के घोड़े-सहित उनके पूर्वज सगरपुत्र 'कपिलमुनि' की क्रोधाग्नि में भस्मीभूत हो चुके हैं। यह सुनकर गंगा की आराधना की कामना से तपस्या करने का उन्होंने निश्चय किया। राज्यभार को अमात्यों को सौंपकर (अपने भस्मीभूत पितरों का) उद्धार करने की, तारने की इच्छा से—पर्वतश्रेष्ठ हिमालय पर वे चले गये। हे विष्णो! ब्रह्मशापाग्नि से दग्ध और महादुर्गति को प्राप्त (अभागे) प्राणियों को स्वर्ग पहुँचाने में गंगा के अतिरिक्त भला अन्य कौन समर्थ हो सकता है" !!

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस प्रकार भगवान् शंकर ने स्वयं श्रीमुख से गंगा का सर्वलोक-विलक्षण माहात्म्य सुनाया। यहाँ तक कहा कि लोक में जितने पुरुषार्थ, जितनी शक्तियाँ हैं, वे सभी गंगा में सूक्ष्मरूप से संस्थित हैं तथा उसने समस्त तीर्थों में नहा लिया है, वह सब यज्ञों में दीक्षा ले चुका है, वह सब व्रतों का अनुष्ठान पूर्ण कर चुका है, जो केवल एकमात्र गंगा का सेवन करता रहता है। (काशीखण्ड, अ० २७, पद्य-१३) यह भी बताया गया है—

'कृते सर्वत्र तीर्थानि त्रेतायां पुष्करं परम्।
द्वापरे तु कुरुक्षेत्रं कलौ गङ्गैव केवलम्'[1] ॥

[काशी०, अ० २७, पद्य–१७]

अर्थात् 'सत्ययुग में तो सर्वत्र तीर्थ थे, त्रेतायुग में सर्वश्रेष्ठ केवल पुष्कर तीर्थ था, द्वापर युग में कुरुक्षेत्र मात्र वैसा तीर्थ था और 'कलियुग' में एक श्रेष्ठ गंगा ही तीर्थ है'।

इसी क्रम से २७वें अध्याय में गंगा के भजन, दर्शन, स्नान आदि की प्रभूत महिमा गाई गई है। गंगा के तट पर पूजन, दान, आराधना, तपस्या, अनुष्ठान, यज्ञ-यागादि एवं श्राद्ध करना, ब्राह्मण-भोजन कराना आदि अनन्त फलदायक हैं। गंगा सर्वपापनाशिनी और रोगव्याधिविध्वंसिनी तथा परमपुरुषार्थ-रूप मोक्ष को भी देने वाली हैं।

यहाँ गंगा के रम्य पुलिन पर पुण्यानुष्ठान के लिए सभी काल शुभ हैं, सभी अशेष देश (स्थान) शुभ हैं और सभी लोग दान के पात्र हैं। (वहीं, पद्य-६९) इसके आगे ७३ वें पद्य मे कहा गया है—"तथा सर्वेषु तीर्थेषु गङ्गातीर्थं विशिष्यते" [वैसे ही समस्त तीर्थों में गंगा ही सर्वश्रेष्ठ है]। इसीलिए पितरलोक में पुरखे (पितृ-गण) सदा गाथा कहते रहते हैं कि न जाने कब हमारे कुल में कोई गंगास्नायी, अर्थात् गंगास्नान करने वाला उत्पन्न होगा ?

इसीलिए काशीखण्ड में काशी की अपार महिमा बताई गई है। कहा गया है—

'अकामो वा सकामो वा तिर्यग्योनिगतोऽपि वा।
गङ्गायां यो मृतो मर्त्यो नरकं स न पश्यति'॥

(वही, पद्य—७९)

---

१. कूर्मपुराण में यह अनुष्टुप् छन्द तनिक भिन्न है—

"कृते तु नैमिषं तीर्थं त्रेतायां पुष्करं परम्।
द्वापरे तु कुरुक्षेत्रं कलौ गङ्गा विशिष्यते"॥

रेखाङ्कित अंशमात्र पाठान्तर है। और कृतयुग में सन्तभूमि नैमिष को तीर्थं कहा गया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[अर्थात्—'बिना कामना के अथवा कामनापूर्वक कोई भी मनुष्य या तिर्यग्योनि में जनमा हुआ समस्त प्राणिमात्र गंगा में मृत्यु पा जाने पर नरक नहीं देखता।]

इसके पश्चात् काशीखण्डकार ने नाना रूपों में गंगास्नान का माहात्म्य बताते हुए कहा है—"जो मर्त्य, यावज्जीवन प्रतिदिन गंगास्नान करता रहता है, उसे निश्चयं ही मोक्ष प्राप्त होता है"। (वही, पद्य—८८)

'गंगा' की प्रतिमा स्थापित कर जो मन्दिर बनवाता है, वह भी गंगालोक प्राप्त करता है। गंगा की महिमा सादर नित्य सुनने या कहने मात्र से गंगास्नान का फल मिलता है। गंगातट पर या गंगा में खड़े होकर सन्ध्योपासना, सूर्य को गंगाजल-जुष्ट अष्टांगार्घ आदि की अपरम्पार महिमा बताई गई है। अन्यत्र तो यहाँ तक कहा गया है—

"गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं च गच्छति"॥

[अर्थात् (गंगा से) सौ योजन दूर रहते हुए भी जो व्यक्ति—'गंगा, गंगा' कहता हुआ गंगा का नाम लेता रहता है, वह गंगा के माहात्म्य प्रभाव के कारण सभी पापों से छुटकारा पाकर, अन्त में विष्णुलोक प्राप्त करता है।] इसी कारण कहा गया है कि कलियुग के कल्मष को नष्ट करने वाला गंगा के समान कोई भी अन्य तीर्थ नहीं है। गंगातट पर सवत्सा गोदान की बड़ी महिमा बताई गई है। इसी प्रकार भूमिदान, अन्नदानादि वहाँ देने पर महाफल प्राप्त होता है। सुवर्ण-दान भी वहाँ महत्फल-दायक बताया गया है।

वैशाखमास, कार्तिकमास और माघमास—इन तीनों महीनों में विधिविधाना-नुसार गङ्गास्नान करने से महत्पुण्यलाभ होता है। इसी प्रसङ्ग में अनेक रूपों में गङ्गा की महिमा गाते हुए पुराणकार अघाते नहीं। यहाँ तक कह दिया गया है कि चार या पाँच महापातकों में 'ब्रह्महत्यारूप' जो महापातक है, उससे भी गङ्गास्नायी को मुक्ति मिल जाती है, अन्य पातक करने वालों की क्या बात?

"श्रद्धया भक्तियुक्तस्तु गङ्गां स्नात्वा विधानतः।
ब्रह्महाऽपि विशुद्ध्येत किम्पुनस्त्वन्यपातकी"॥
[वही, पद्य—१३३]

इसके अनन्तर काशीखण्डकार ने 'गङ्गादशहरा'-स्नान, अनुष्ठानादि का विवरण देते हुए 'दशविधपापनाशक' दशहरास्तोत्र का उपक्रम किया है। कहा गया है कि—'ज्येष्ठ मास के शुक्लपक्ष में दशमी तिथि के हस्तनक्षत्रयुक्त होने पर (बुधवार भी हो तो और उत्तम) गङ्गा-तट पर रात में 'रतजग्गा' (रात्रिजागरण) करते हुए दूसरे दिन में दश प्रकार के पुष्प, सुगन्ध, नैवेद्य, फल आदि एवं दश-दीपक, दशाङ्गधूप आदि से दश प्रसृति (पसर) सघृत तैल से गङ्गा का विंशाक्षर मन्त्र से पूजन करना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन्त्र है—

"ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गङ्गायै स्वाहा" ।

इसी मन्त्र से पूजन, दान, जप, हवन—सब कुछ करना चाहिए ।

इस पूजन में गङ्गा की सोने या चांदी की प्रतिमा बनाकर और वस्त्र से आच्छादित कर, पूर्णकुम्भ के ऊपर प्रतिष्ठापित कर पञ्चामृत से पहले ही विशोधित प्रतिमा का पूजनादि करने के पूर्व चतुर्भुजवाली, त्रिनेत्रवाली और नदी-नदों से सेवित गङ्गा का काशीखण्डोक्त (अध्याय २७, पद्य—१४२-१४५) रूप से ध्यान करने के पश्चात् यथोक्त विधिविधान द्वारा गङ्गा-पूजन, अनन्तपुण्यदायक, मोक्षदायक भी होता है। इस स्तोत्र की फलश्रुति भी बहुत है।

काशीखण्डोक्त उक्त 'गङ्गादशहरा'-स्तोत्र आगे दिया जा रहा है। उसके पूर्व यहाँ एक विशेष पक्ष लिख देना चाहता हूँ। काशीखण्ड के सत्ताईसवें अध्याय के अन्त में स्वयं भगवान् शङ्कर ने बताया है कि शिव, विष्णु, उमा और गङ्गा—इन चारों मूर्त्तियों में कोई भेद नहीं हैं, वे एक हैं—

"यथाऽहं त्वं तथा विष्णो यथा त्वं तु तथा ह्युमा ।
उमा यथा तथा गङ्गा चतूरूपं न भिद्यते ॥
विष्णुरुद्रान्तरं चैव श्रीगौर्योरन्तरं तथा ।
गङ्गागौर्यन्तरं चैव यो ब्रूते मूढधीस्तु सः" ॥

(काशीखण्ड, अध्याय २७, श्लो० १८४-१८५)

(घ) काशीखण्डोक्त-गङ्गादशहरास्तोत्र

एवं कृत्वा विधानेन वित्तशाठ्यविवर्जितः ।
उपवासी वक्ष्यमाणैर्दशपापैः प्रमुच्यते ॥ १ ॥

अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः ।
परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं स्मृतम् ॥ २ ॥

पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चैव सर्वशः ।
असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् ॥ ३ ॥

परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसाऽनिष्टचिन्तनम् ।
वितथाऽभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम् ॥ ४ ॥

एतैर्दशविधैः पापैर्दशजन्मसमुद्भवैः ।
मुच्यते नात्र सन्देहः सत्यं सत्यं गदाधर ॥ ५ ॥

उद्धरेन्नरकात्पूर्वान् दश घोरान् दशावरान् ।
वक्ष्यमाणमिदं स्तोत्रं गङ्गाऽग्रे श्रद्धया जपेत् ॥ ६ ॥

वित्तशाठ्य से विवर्जित होकर इस विधान से उपवास करने पर वह जन इन दश प्रकार के पापों से छूट जाता है ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(१) विना दिये हुए किसी की वस्तु को ले लेना, (२) यज्ञादिविधि के विना हिंसा, (३) परस्त्री-सेवन, ये तीनों शारीरिक पाप हैं ॥ २ ॥

(१), कठोर वचन (२), असत्य भाषण (३) सब प्रकार की पिशुनता (चुगली), (४) निष्प्रयोजन प्रलाप (बकवाद), ये चारों ही वाचिक पाप हैं ॥ ३ ॥

(१) परद्रव्यों पर अभिध्यान, (२) मन ही मन (दूसरों का) अनिष्ट-चिन्तन, और (३) असत्य वस्तुओं में आग्रह, ये तीनों मानसिक पाप हैं ॥ ४ ॥

हे गदाधर ! दश-जन्मार्जित इन दशविध पापों से निश्चय मुक्त हो जाता है, (जो आगे कथित दशहरास्तोत्र का पाठ करता है) यह भूरिशः सत्य है ॥ ५ ॥

इस दशमी के व्रत को करने वाला, दश पूर्व और दश पर (बाद के) पुरुषों (पीढ़ियों) का घोर नरक से उद्धार करता है। यदि श्रद्धापूर्वक इस वक्ष्यमाण स्तोत्र को गङ्गा के आगे जपे ॥ ६ ॥

गङ्गादशहरास्तोत्र

ॐ नमः शिवायै गङ्गायै शिवदायै नमो नमः ।
नमस्ते विष्णुरूपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै शाङ्कर्यै ते नमो नमः ।
सर्वदेवस्वरूपिण्यै नमो भेषजमूर्त्तये ॥ २ ॥

सर्वस्य सर्वव्याधीनां भिषक्श्रेष्ठ्यै नमोऽस्तु ते ।
स्थास्नुजङ्गमसम्भूतविषहन्त्र्यै नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

संसारविषनाशिन्यै जीवनायै नमोऽस्तु ते ।
तापत्रितयसंहन्त्र्यै प्राणेश्यै ते नमो नमः ॥ ४ ॥
शान्तिसन्तानकारिण्यै नमस्ते शुद्धमूर्त्तये ।
सर्वसंशुद्धिकारिण्यै नमः पापारिमूर्त्तये ॥ ५ ॥

शिवस्वरूपा, मंगलदात्री, गङ्गा को बारम्बार नमस्कार है। विष्णुस्वरूपा आपको नमस्कार है। ब्रह्मरूपिणी आपको नमस्कार है ॥ १ ॥

रुद्रस्वरूपा, आपको नमस्कार, शांकरी को नमस्कार, सर्वदेवस्वरूपिणी, संसार रोग की औषधिमूर्ति आपको नमस्कार है ॥ २ ॥

सब किसी के सकलव्याधिनाशन में उत्तम वैद्यरूपा आपको नमस्कार है। स्थावर, जंगम से उत्पन्न विषों का नाश करने वाली आपको नमस्कार है ॥ ३ ॥

संसाररूपी जरा-मरण के विष की विघातिनी, जीवनरूपा, आपको नमस्कार है। दैहिक, दैविक, भौतिक—त्रिविध तापहन्त्री, प्राण की ईश्वरी, आपको बारम्बार नमस्कार है ॥ ४ ॥

शान्तिसन्तानकारिणी, शुद्धमूर्ति आपको नमस्कार है। प्राणिमात्र—सब किसी की शुद्धिविधायिनी, पापों की शत्रुस्वरूपा आपको नमस्कार है ॥ ५ ॥

च

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भुक्तिमुक्तिप्रदायिन्यै भद्रदायै नमो नमः।
भोगोपभोगदायिन्यै भोगवत्यै नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥

मन्दाकिन्यै नमस्तेऽस्तु स्वर्गदायै नमो नमः।
नमस्त्रैलोक्यभूषायै त्रिपथायै नमो नमः ॥ ७ ॥

नमस्त्रिशुक्लसंस्थायै क्षमावत्यै नमो नमः।
त्रिहुताशनसंस्थायै तेजोवत्यै नमो नमः[1] ॥ ८ ॥

नन्दायै लिङ्गधारिण्यै सुधाधारात्मने नमः।
नमस्ते विश्वमुख्यायै रेवत्यै ते नमो नमः ॥ ९ ॥

बृहत्यै ते नमस्तेऽस्तु लोकधात्र्यै नमोऽस्तु ते।
नमस्ते विश्वमित्रायै नन्दिन्यै ते नमो नमः ॥ १० ॥

पृथ्व्यै शिवामृतायै च सुवृषायै नमो नमः।
परापरशताढ्यायै तारायै ते नमो नमः ॥ ११ ॥

भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनी कल्याणकर्त्री आपको नमस्कार है। ऐहिक और पारलौकिक भोग एवं उपभोगों की दात्री, भोगवती-नाम्नी पातालगङ्गारूपा आपको नमस्कार है ॥ ६ ॥

मन्दाकिनीरूपा स्वर्गगङ्गा को नमस्कार है। स्वर्गदात्री आपको नमस्कार है। त्रैलोक्यभूषणमूर्ति आपको नमस्कार है। त्रिमार्गगामिनी (आप) को बारम्बार नमस्कार है ॥ ७ ॥

गङ्गाद्वार, प्रयाग और सागरसंगम—इन तीनों उज्ज्वल स्थानों में विशेष स्थिति-शालिनी आपको नमस्कार है। क्षमावती को नमस्कार है। गार्हपत्य, दक्षिण और आहवनीय नामक तीनों अग्नियों की वासभूमिरूपा तेजस्वती, आपको नमस्कार है ॥ ८ ॥

अलकनन्दा, शिवलिंगधारिणी, अमृतस्रोतःस्वरूपा को नमस्कार है। ब्रह्माण्ड-श्रेष्ठा को नमस्कार है। रेवती-नक्षत्ररूपा को नमस्कार है ॥ ९ ॥

परिपूर्ण (बृहती) को नमस्कार है। लोकधात्री को नमस्कार है। संसारमात्र की मित्ररूपा आपको नमस्कार है। नन्दिनी को बारम्बार नमस्कार है ॥ १० ॥

पृथिवीस्वरूपा, निर्मलजला, उत्तमधर्ममूर्त्ति, आपको नमस्कार है। सेकड़ों ही ब्रह्मादि देवगण एवं अस्मदादि अपरगण से सेविता, तारिणी, आपको अनेकानेक नमस्कार है ॥ ११ ॥

---

१. तुलना कीजिए—"हरिद्वारे प्रयागे च गङ्गासागरसङ्गमे।
त्रिस्थानदुर्लभा गङ्गा काश्यां चैवातिदुर्लभा ॥
(सुभाषितम्)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाशजालनिकृन्तिन्यै अभिन्नायै नमोऽस्तु ते ।
शान्तायै च वरिष्ठायै वरदायै नमो नमः ॥ १२ ॥

उग्रायै सुखजग्ध्यै च सञ्जीविन्यै नमोऽस्तु ते ।
ब्रह्मिष्ठायै ब्रह्मदायै दुरितघ्न्यै नमो नमः ॥ १३ ॥

प्रणतार्तिप्रभञ्जिन्यै जगन्मात्रे नमोऽस्तु ते ।
सर्वापत्प्रतिपक्षायै मङ्गलायै नमो नमः ॥ १४ ॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १५ ॥

निर्लेपायै दुर्गहन्त्र्यै दक्षायै ते नमो नमः ।
परापरपरायै च गङ्गे निर्वाणदायिनि ॥ १६ ॥

गङ्गे ममाऽग्रतो भूया गङ्गे मे तिष्ठ पृष्ठतः ।
गङ्गे मे पार्श्वयोरेधि गङ्गे त्वय्यस्तु मे स्थितिः ॥ १७ ॥

आदौ त्वमन्ते मध्ये च सर्वं त्वं गाङ्गते[1] शिवे ।
त्वमेव मूलप्रकृतिस्त्वं पुमान् पर एव हि ॥
गङ्गे त्वं परमात्मा च शिवस्तुभ्यं नमः शिवे ॥ १८ ॥

(संसार के) पाशजाल को काटने वाली, भेदों से हीन, आपको नमस्कार है। परमशान्ता, सर्वश्रेष्ठा, वरदायिनी, आपको नमस्कार है ॥ १२ ॥

उग्रस्वरूपा, सुखभोगकारिणी, सञ्जीवनीरूपा, आपको नमस्कार है। आप ब्रह्मिष्ठा, मुक्तिदायिनी एवं दुरितविनाशिनी हैं, आपको बारम्बार नमस्कार है ॥ १३ ॥

प्रणत-जन की दुःखहारिणी, जगत् की माता, आपको नमस्कार है। समस्त आपत्तियों की शत्रु, मंगलमूर्ति आपको बारम्बार नमस्कार है ॥ १४ ॥

हे नारायणि ! देवि ! शरण में प्राप्त दीन-दुःखियों की रक्षा करने में तत्पर हो, आप सब किसी के दुःखों का हरण करती हैं, नारायणीरूपा, आपको नमस्कार है ॥ १५ ॥

निर्लेप-(अविद्या) रहिते, दुर्गविनाशिनि, परमदक्षे ! सर्वोत्तमोत्तमे, मुक्तिप्रदे ! गंगे ! आपको बारम्बार नमस्कार है ॥ १६ ॥

गंगे ! आप मेरे सन्मुख रहें। गंगे ! आप मेरे पीछे स्थिति करें। गंगे ! आप मेरे दोनों ओर बनी रहें। गंगे ! मेरा निवास आप ही में होवे ॥ १७ ॥

हे भूतलवासिनि ! शिवे ! आदि, अन्त और मध्य में सब कुछ आप ही हो। आप ही मूलप्रकृति और आप ही परम-पुरुष हैं। गंगे ! आप ही परमात्मा शिव हैं, शिवे ! आपको नमस्कार है ॥ १८ ॥

१. 'गाङ्गते' हे गङ्गे—इत्यर्थः (रामानन्दी संस्कृत-टीका में)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

य इदं पठते स्तोत्रं शृणुयाच्छ्रद्धयाऽपि यः।
दशधा मुच्यते पापैः कायवाक्चित्तसम्भवैः ॥ १९ ॥
रोगस्थो रोगतो मुच्येद् विपद्भ्यश्च विपद्युतः।
मुच्यते बन्धनाद् बद्धो भीतो भीतेः प्रमुच्यते ॥ २० ॥

जो कोई श्रद्धापूर्वक इस 'गंगादशहरास्तोत्र' का पाठ करता है, अथवा सुनता है, वह कायिक, वाचिक और मानसिक (उक्त) दशविध पापों से उन्मुक्त हो जाता है ॥ १९ ॥

(इस स्तोत्र को पढ़ने या सुनने से) रोगी का रोग जाता रहे, विपन्न की विपत्ति हट जावे, बद्ध (बँधुआ) का बंधन टूटे और डरे हुए का भय दूर होवे[1] ॥ २० ॥

(ङ) गङ्गा-माहात्म्य

काशीखण्ड का अट्ठाईसवाँ अध्याय—पूरा का पूरा गङ्गा-माहात्म्यमय है। इसी प्रसंग में बहुत कुछ कहने के अनन्तर यह कह दिया गया है कि विश्व में मनोरथपूरक जितने तीर्थ हैं, वे सब उत्तरवाहिनी गङ्गा का सेवन करते हैं।

"कामप्रदानि तीर्थानि त्रैलोक्ये यानि कानिचित्।
तानि सर्वाणि सेवन्ते काश्यामुत्तरवाहिनीम् ॥
स्वः सिन्धुः सर्वतः पुण्या ब्रह्महत्यापहारिणी।
काश्यां विशेषतो विष्णो! यत्र चोत्तरवाहिनी" ॥

'वाहीक' का आख्यान—

इसी प्रसंग में 'वाहीक'-नामक लवणविक्रयी ब्राह्मण की कथा अवतरित है। इस कथा में बताया गया है कि समस्त ब्राह्मणाचरण से हीन 'वाहीक' बड़ा ही नीचाचार था। उसने एक युवती और विधवा कोविन्दी (तन्तुवाय-पत्नी = जोलाहिन) से विवाह कर लिया था।

देश में एक बार घोर अकाल—सूखा पड़ने पर वह घूमता-घामता दण्डक-वन पहुँचा। वहाँ उसे एक बाघ मारकर खाने लगा। इतने में ही एक गिद्ध 'वाहीक' की एक समांस बाएँ पाँव की हड्डी उठाकर आकाश में उड़ गया। वहीं आकाश में दूसरे मांसलोभी गिद्ध के साथ लड़ते हुए पूर्व गिद्ध के चंगुल से छूटकर वाहीक के पाँव की वह हड्डी गंगा की जलधारा में गिर गई।

यमराज की धर्मसभा में चित्रगुप्त ने उस अनाचारी द्विज के कर्मों का लेखा-जोखा उपस्थित (पेश) करते हुए बताया कि अपने समस्त जीवन में 'वाहीक' ने केवल पाप

---

१. 'काशीखण्ड' के हिन्दी-टीकाकार मेरे स्वर्गीय पिता जी ने 'गंगादशहरास्तोत्र' की पाँच सहस्र प्रतियाँ मुद्रित कराकर तत्कालीन गंगादशहरोत्सव में—जो 'मानमन्दिर' घाट (वर्तमान राजेन्द्रप्रसाद घाट) में तीन दिन धूमधाम से होता था—वितरित की थीं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हो पाप किया है। भूल-चूक से भी उसके द्वारा कोई धर्मकार्य कभी सम्पन्न नहीं हुआ। यमराज ने निर्णय सुनाया कि 'वाहीक' को घोर से घोर यातना वाले अठारह नरकों में एक-एक सहस्रवर्ष रखकर पीड़ा पहुँचायी जाय।

सबसे पहले रौरव-नामक प्रथम नरक के यातनागार में वह ज्यों ही पहुँचा और वहाँ की पीड़ा से आर्त्तनाद प्रारम्भ ही किया था कि त्यों ही देवलोक से विमान के साथ आकर देवदूत उसे लेकर स्वर्गलोक चले गये।

इसका कारण था कि गृद्ध के चञ्चुपुट से छूटकर 'वाहीक' की कीकस = हड्डी गंगाधारा में जा गिरी थी और उसी क्षण 'वाहीक' के समस्त पापों और पापफलों का प्रध्वंस हो गया था।

अगस्त्य मुनि को इसका कारण बताते हुए षडानन ने कहा था—"यह गङ्गा जलरूप में बहनेवाली 'सादाशिवी पराशक्ति' हैं। करुणावरुणालय देवदेव शम्भु ने जगदुद्धार की भावना से इसको प्रवर्त्तित किया है—

"वस्तुशक्तिविचारोऽयमद्भुतः कोऽपि कुम्भज।
द्रवरूपेण काप्येषा शक्तिः सादाशिवी परा॥
करुणामृतपूर्णेन देवदेवेन शम्भुना।
एषा प्रवर्त्तिता गङ्गा जगदुद्धरणाय वै"॥

(का० ख० २८। ८४-८५)

यह गङ्गा वेदमन्त्रों के सार का गलित रस है और योग-उपनिषद् के सारतत्त्व का द्रवसार है। इसी प्रसंग में काशीखण्ड में गंगामाहात्म्य का मुक्तकण्ठ से कीर्त्तन हुआ है। कहा गया है कि पापतापतप्त दुःखियों की पीड़ा और ताप को दूर करने वाली गङ्गा के समान कोई नहीं है—

"पापतापाभितप्तानां भूतानामिह जाह्नवी।
पापतापहरा यद्वद् गङ्गा नान्यत्तथा कलौ"॥ [वही, श्लो० ९५]

इन गङ्गा की महिमा का कीर्त्तन करने, उनका दर्शन-स्पर्शन-पान और स्नान करने से क्रमशः दशोत्तर गुण पुण्य होता है—

"कीर्त्तनाद् दर्शनात्स्पर्शाद् गङ्गापानाऽवगाहनात्।
दशोत्तरगुणा ज्ञेया पुण्याऽपुण्यर्धिनाशयोः"॥ [वही, श्लो० १००]

यहाँ बहुत कुछ कहा गया है। पर नीचे तीन पद्यों के उद्धरण से यह प्रकरण समाप्त किया जा रहा है—

"ज्ञात्वाऽज्ञात्वा च गङ्गायां यः पञ्चत्वमवाप्नुयात्।
अनात्मघाती स्वर्गीयान्नरकान् न स पश्यति॥

गङ्गैव सर्वतीर्थानि गङ्गैव च तपोवनम्।
गङ्गैव सिद्धिक्षेत्रं हि नात्र कार्या विचारणा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यत्र कामफला वृक्षा मही यत्र हिरण्मयी।
जाह्नवीस्नायिनस्तत्र निवसन्ति घटोद्भव !"[1] ॥
[का०ख० २८।१२०-१२३]

(च) 'गङ्गासहस्रनामस्तोत्र' की उपक्रमणिका

पूर्व पृष्ठ में गङ्गा के कीर्त्तन, स्पर्श, गङ्गाजल का आचमन और गङ्गा में अवगाहन (स्नान) का माहात्म्य संकेतित है। अनेक रीति से गङ्गा-महिमा गाई गई है।

कुम्भज ऋषि ने अन्य सहस्रनामों की उपक्रम-शैली में यहाँ भी पूछा कि 'यदि 'गङ्गास्नान के विना मनुष्य-जन्म निरर्थक है' तो क्या ऐसा कोई उपायान्तर है, जिससे गङ्गास्नानकल्प फल पाया जा सकता है, ? क्योंकि—'जो अशक्त है, पंगु है, आलस का मारा है, बहुत दूर का रहने वाला या साधनहीन है—वह भला गङ्गास्नान का लाभ कैसे कर सकता है' ?

जिज्ञासु (श्रोता) अगस्त्य ने पूछा कि—'जिससे गङ्गास्नान का फल हो—क्या ऐसा कोई दान, व्रत, मन्त्र, अथवा जप है ? क्या ऐसा कोई तीर्थान्तराभिषेक या देवोपासना है, जो गङ्गा-स्नान-तुल्य फलप्रद हो ? यदि ऐसा कोई उपाय हो तो हे षडानन ! आप अनुग्रहपूर्वक बताने की कृपा करें'।

[यह प्रकरण 'गङ्गासहस्रनामस्तोत्र' के आरम्भ में ('काशीखण्ड' के २९वें अध्याय के प्रारम्भ में) सोलह पद्यों तक वर्णित है। अतः अधिक विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है। जिज्ञासु वहीं पढ़ लें।]

उपर्युक्त प्रश्न के उत्तर में अन्ततोगत्वा स्कन्दकुमार ने बताया—'यद्यपि, गङ्गा-स्नान का फल गङ्गा में ही मिलता है, उसी प्रकार—जैसे दारु (अंगूर) के फल का स्वाद अंगूर खाने से ही प्राप्त होता है—तथापि गङ्गास्नान का अविकल फल पाने का एक ही अन्य उपाय है। वह है स्तवराजों में शोभन, महाश्रेयस्कर, पुण्यमय 'गङ्गासहस्रनाम'-स्तोत्र का (जो उपनिषदों के समान ही है—उसका) विहित विधि से पाठ करना। विधि है—'समाहित चित्त से, मौन होकर, प्रयत्नपूर्वक मौन धारण करके, पवित्र स्थानों में, पवित्र मन से, वाचक के विना, अर्थात् स्वयमेव जप करना, उपांशु-पाठ करना। इसके तुरन्त पश्चात् 'गङ्गा-सहस्रनाम'-स्तोत्र प्रारम्भ हो जाता है। इसका उपदेश स्कन्दपुराण और तदन्तर्गत 'काशीखण्ड' के मुख्यवक्ता गौरीनन्दन स्कन्द देते हैं—'स्कन्द उवाच' से यह सहस्रनाम प्रारम्भ होता है। प्रथम श्लोक है—

---

१. "जो कोई विना आत्मकृत्य के जानकर या विना जाने गङ्गा में मृत्यु को प्राप्त करता है, वह नरक का दर्शन नहीं करता, स्वर्ग चला जाता है। गङ्गा ही सर्वतीर्थ हैं, वही तपोवन हैं, वही सिद्धिक्षेत्र हैं। इस विषय में विचार नहीं करना चाहिए। जहाँ के वृक्षगण कामफलदाता हैं, जहाँ की धरती स्वर्णमयी है—उसी (स्वर्ग) लोक में गङ्गा-स्नायी निवास करते हैं।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"ॐकाररूपिण्यजराऽतुलाऽनन्ताऽमृतश्रवा ।
अत्युदाराऽभयाऽशोकाऽलकनन्दाऽमृताऽमला" ॥ (का० ख० २९।१७)

अन्तिम श्लोक है—

"हृताघसंघा हितकृद् हेलाहेलाघगर्वहृत् ।
क्षेमदा क्षालिताघौघा क्षुद्रविद्राविणी क्षमा" ॥
(वही, श्लो० १६७-१६८)

इसी के अनन्तर 'स्कन्द' ने अगस्त्य के माध्यम से श्रद्धालु सनातनियों को सूचित किया है कि इस 'सहस्रनामस्तोत्र' का कीर्तन करके मानव गङ्गास्नान का सम्यक् फल प्राप्त कर सकता है।

इसी क्रम में फलस्तुति बताते हुए १७९-१८० संख्यक श्लोकों में बताया गया है कि यह सहस्रनाम—आयुवर्द्धक, आरोग्यकर, सर्वोपद्रवनाशक, सर्वसिद्धिकर है। साथ ही सहस्रों पूर्वजन्मों में अर्जित पापपुञ्ज का इसके जप से क्षय हो जाता है—

"आयुरारोग्यजननं सर्वोपद्रवनाशनम् ।
सर्वसिद्धिकरं पुंसां गङ्गानामसहस्रकम् ॥
जन्मान्तरसहस्रेषु यत्पापं सम्यगर्जितम् ।
गङ्गानामसहस्रस्य जपनात्तत्क्षयं व्रजेत्" ॥
(वही, श्लो० १७९-१८०)

इसके पश्चात् २९वें अध्याय के श्लोक १८१-१८२ तक उन पापों के नाम गिनाये गाये हैं—गङ्गासहस्रनामस्तोत्र के जप (पाठ) द्वारा जिनसे मुक्ति मिलती है। यथा—

"ब्रह्मघ्नो मद्यपः स्वर्णस्तेयी च गुरुतल्पगः ।
तत्संयोगी भ्रूणहन्ता च मातृहा पितृहा मुने ! ॥
विश्वासघाती गरदः कृतघ्नो मित्रघातकः ।
अग्निदो गोवधकरो गुरुद्रव्यापहारकः ॥
महापातकयुक्तोऽपि संयुक्तोऽप्युपपातकैः ।
मुच्यते श्रद्धया जप्त्वा गङ्गानामसहस्रकम् ॥
(वही, श्लो० १८१-१८३)

['गङ्गासहस्रनामस्तोत्र' में जिज्ञासु इस अंश का हिन्दी-अनुवाद 'नारायणी' टीका में देख लें। वहीं 'रामानन्दी' टीका में मनुवचन के आधार पर पातकों और उपपातकों की सूची देखी जा सकती है।]

श्लोक २०८, अध्याय २९ तक फलश्रुति के अवसान में कहा गया है—

"एतत्स्तोत्रवरं रम्यं पुरा प्रोक्तं पिनाकिना ।
विष्णवे निजभक्ताय मुक्तिबीजाक्षरास्पदम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गङ्गास्नानप्रतिनिधिः स्तोत्रमेतन्मयेरितम् ।
सिस्नासुर्जाह्नवीं तस्मादेतत्स्तोत्रं जपेत्सुधीः" ॥

(वही, श्लो० २०९-१०)

गङ्गासहस्रनामस्तोत्र के सन्दर्भ में—

इस 'सहस्रनामस्तोत्र' की कतिपय विशिष्टताएँ हैं—

(१) 'काशीखण्ड' संस्कृत टीकाकार, श्रीरामेन्द्रवन एवं श्रीदेवेन्द्रवन के शिष्य, महापण्डित पूज्यपाद श्रीरामानन्द की टीका यहाँ भाष्यात्मक है। वैसे अनेकत्र आचार्य श्रीरामानन्द ने काशीखण्ड की भाष्यात्मक टीका लिखी है। पर 'गङ्गासहस्रनामस्तोत्र' के आदि, अन्त और मध्य, सर्वत्र भाष्यात्मक व्याख्या देखी जाती है। पूज्यपाद श्रीशङ्कराचार्य ने श्रीविष्णुदिव्यसहस्रनामस्तोत्र के नामों की भाष्यात्मक व्याख्या लिखी है। स्वयं श्रीविष्णुसहस्रनाम में कहा गया है—'यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः', अर्थात् इस सहस्रनामस्तोत्र के नाम—गुणपरक, यौगिक और यौगिकरूढ़ (योगरूढ़) नाम हैं। 'श्रीललितासहस्रनाम' का भी 'श्रीभास्कर राय' ने भाष्यात्मक व्याख्यान किया है।

इसी भाँति सर्वतन्त्रस्वतन्त्र, सर्वशास्त्रनदीष्ण आचार्य श्रीरामानन्द ने भी गङ्गासहस्रनामस्तोत्र के प्रायः सर्वसहस्रनामों की गुणाधारिक व्याख्या की है। कहीं-कहीं यह व्याख्या बड़े ही महत्त्व की है। यथा—इस 'गङ्गासहस्रनाम' का प्रथम नाम है—'(१) ॐकाररूपिणी। इसके अनन्तर नाम हैं-(२) अजरा, (३) अतुला (४) अनन्ता और (५) अमृतस्रवा' इत्यादि। सर्वप्रथम (१) ॐकाररूपिणी[1] (ओङ्काररूपिणी)

---

१. हिन्दी नारायणी-टीकाकार पण्डित नारायणपति त्रिपाठी ने 'गङ्गाशतक' का निर्माण किया है। आचार्य करुणापति त्रिपाठी द्वारा संकलित और सम्पादित 'स्तुतिमणिमाला' द्वितीय-भाग (प्रकाशक उ० प्र० संस्कृत अकादमी, लखनऊ, सं० २०४२) के पृ० २७२ से २८९ तक में यह मुद्रित है। इसका 'गङ्गादशहरा' को प्रारम्भ हुआ था—

ज्येष्ठे मासि सिते दले बुधदिने हस्तर्क्षसंशोभिते
या (तिथिः) स्नानेन हरत्यघं दशविधं चेतोवचोदेहजम् ।
स्वर्वापीप्रियहेतवे दशहरानाम्न्यां हि तिथ्यां मुदा
स्तोत्रं तच्चरितादभुतं शिवपुरे प्रारम्य निर्मीयते ॥ (श्लो० २)

इसी 'गङ्गाशतक' का प्रथम पद्य है—

ॐकाराकारा या वारा वाराणसी-तले वहति ।
जगति जगन्निस्तारा त्रिभुवनसारा गङ्गाऽमृतमयी धारा ॥ १ ॥

काशी में 'असि और वरणा' के मध्य बहती उत्तरवाहिनी गङ्गा का आकार 'ॐकार' के समान है। अतः काशी में वह ॐकाराकारा हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्यों कहा ? इस गङ्गासहस्रनामस्तोत्र के सहस्र नाम जब अकारादि से प्रारम्भ कर क्षकारादि ('क्षमा') तक हैं, तो 'अ'कारादि क्रम (यथा—अजराऽतुलेत्यादि) छोड़ ॐकार (ओङ्कार) से अर्थात् 'ओकारादि' क्यों है ?

इस शंका का समाधान करते हुए अनेक पक्ष उपस्थित किये गये हैं। अन्त में कहा गया है—यतः 'ओङ्कार' का ॐ अकार + उकार + मकार'—इनका समन्वित रूप है और 'ओङ्कार' के इस समन्वित रूप में 'अकार' सर्वप्रथम है—अतः (१) ॐकार-रूपिणी' यह प्रथम नाम भी अकारादि कहा जा सकता है और भी बताया गया है कि ओंकार को शास्त्रों की मान्यता के अनुसार—उक्त आदिध्वनि वर्णसमाम्नाय (वर्णमाला) की जननी ही नहीं—सर्ववर्णरूपिणी है, अतः वह अकारादि भी है। इस सन्दर्भ में आचार्य रामानन्द लिखते हैं—

"यद्वा ॐकारस्याकारोकारमकारात्मकत्वादोङ्काररूपिणीत्यस्याकारादित्वं बोद्धव्यम्। यद्वा, ओङ्कारस्य सर्ववर्णात्मकत्वान्माङ्गलिकत्वाच्चादावुपादानं युक्तमिति तदादित्वम्। तदुक्तम्—

ॐकारप्रभवा वेदा ॐकारप्रभवाः सुराः।
ॐकारप्रभवं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्॥

ॐकारश्चाथशब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा।
कण्ठं भित्त्वा विनिर्यातौ तस्मान्माङ्गलिकावुभौ॥

स्रवत्यनोङ्कृतं पूर्वं परस्माच्च विशीर्यते"॥ इत्यादि।

समग्र कथन का सार है कि वेद, देवता, सब कुछ, यहाँ तक कि चराचर त्रैलोक्य भी ॐकारसम्भूत है। 'ॐकार' और 'अथ' शब्द—ये दोनों ब्रह्मा के कण्ठ से सर्वप्रथम उद्भूत होने से दोनों परम माङ्गलिक हैं।

[यहाँ यह रहस्य है कि ॐकार ही अखण्ड स्फोटात्मक परब्रह्म है। अर्थभाव में, पदार्थ रूप में जितने गोचरागोचर और स्थावर-जंगम—ज्ञेय और प्रमेय हैं, सब उसी ॐकाररूप आदि-ध्वनि स्फोटब्रह्म के विवर्त्त हैं।]

भाष्यात्मक व्याख्या के उपक्रम-क्रम में आचार्य रामानन्द ने यह भी संकेत किया है कि यद्यपि 'श्रीगङ्गासहस्रनाम' के सहस्रनाम अकारादि से प्रारम्भ कर वर्णमालाक्रम से क्षकारादि 'क्षमा' तक हैं, तथापि अनेक भाष्योक्त कारणों से इनमें 'ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, अः, ङ, ञ, ठ, ण, थ आदि आद्याक्षर वाले संगृहीत नहीं हैं। (इसी प्रकार संयुक्त व्यञ्जनों में क्षकारादि नाम तो है, पर त्रकारादि और ज्ञकारादि नाम भी नहीं है।)

(२) इस सहस्रनामस्तोत्र की यह भी विशेषता है कि इसके नाम का क्रम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैसा ऊपर निर्दिष्ट है—'अकारादि' से प्रारम्भ कर 'क्षकारादि' तक है[1]।

(३) यह सहस्रनामस्तोत्र, गङ्गास्नान मात्र से फल देने वाला है। अर्थात् जो गङ्गा-भक्त किन्हीं कारणों से गङ्गास्नान करने में असमर्थ है, गङ्गा-स्नान का प्रबल इच्छुक होकर भी गङ्गा तक नहीं पहुँच पाता है, वह केवल गङ्गा-सहस्रनामस्तोत्र के पाठ से गङ्गास्नान का मोक्षादि समग्र फलभागी हो जाता है।

(४) इसकी अन्तिम और सर्वाधिक विशिष्टता यह है कि यह मेरी जानकारी के अनुसार सर्वप्रथम प्रकाशित हो रहा है। अतएव इसके विनियोगादि नहीं मिलते।

इनके अतिरिक्त अन्य सामान्य विशेषताएँ हैं। उनका यहाँ उल्लेख अनावश्यक है। गङ्गादशहरास्तोत्र भी इसके पूर्वाध्याय में दे दिया गया है।

---

१. सहस्रनामस्तोत्रों में अनेकविध विविधता दिखाई देती है।
(क) कुछ सहस्रनामस्तोत्र उपास्य के सहस्रनामस्तोत्रों के नामानुसार—आदि-वर्णादि हैं—जैसे—(अ) दुर्गासहस्रनामस्तोत्र के नाम 'दकारादि' हैं, (आ) तारासहस्रनामस्तोत्र के सहस्रनाम 'तकारादि' हैं। 'सहस्रनामों के संक्षिप्त परिचय में पूर्वपृष्ठों द्वारा यह सूचना दे दी गई है। (इ) कुछ सहस्रनामस्तोत्र ऐसे भी हैं, जो वर्णमाला के वर्णक्रम से निर्दिष्ट हैं' जैसे गङ्गासहस्रनामस्तोत्र। कमलात्मिका 'कमलासहस्रनामस्तोत्र' ऐसा है, जो आदि और अन्त में तो वर्णमालीय वर्णक्रम का अनुसरण नहीं करता, पर मध्य में 'क' से लेकर 'म' तक वर्णमालीय स्पर्शवर्णों का (कादयो मावसानाः स्पर्शाः) अनुसारी है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महर्षिव्यासप्रणीते
श्रीस्कन्दमहापुराणान्तर्गते
काशीखण्डे

गङ्गासहस्रनामस्तोत्रम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महर्षिव्यासप्रणीते
श्रीस्कन्दमहापुराणान्तर्गते
काशीखण्डे

गङ्गासहस्रनामस्तोत्रम्

❀ ❀ ❀

अगस्त्य उवाच—

विना स्नानेन गङ्गायां नृणां जन्मनिरर्थकम् ।
उपायान्तरमस्त्यन्यद्येन स्नानफलं लभेत् ॥ १ ।
अशक्तानां च पङ्गूनामालस्योपहतात्मनाम् ।
दूरदेशान्तरस्थानां गङ्गास्नानं कथं भवेत् ॥ २ ।
दानं वाऽथ व्रतं वाऽथ मन्त्रः स्तोत्रं जपोऽथवा ।
तीर्थान्तराऽभिषेको वा देवतोपासनं तु वा ॥ ३ ।
यद्यस्ति किञ्चित् षड्वक्त्र गङ्गास्नानफलप्रदम् ।
विधानान्तरमात्रेण तद्वद प्रणताय मे ॥ ४ ।

नमो भगवते तस्मै ब्रह्मविष्णुशिवात्मने ।
परब्रह्मस्वरूपिण्यै गङ्गायै च नमो नमः ॥ १ ।
एकोनत्रिंशदध्याये गङ्गानामसहस्रकम् ।
वर्ण्यते भूरि माहात्म्यं सर्वाऽघौघविदारणम् ॥ २ ।

पूर्वोक्तापरिमितगुणगणाया गङ्गायाः स्नानमन्तरेण नृणां जन्म व्यर्थं स्यादतोऽशक्तदूरदेशस्थितानां येनोपायान्तरेण तद्भवति तत्किमस्तोति सर्वलोकोपकाराय पृच्छति। विनेति द्वाभ्याम् ॥ १-२ ।

उपायान्तरमेव विकल्प्याऽनुपृच्छति। दानं वेति द्वयेन। मन्त्रस्तोत्रमिति पाठे एकवद्भावः ॥ ३ ।

विधानान्तरमात्रेण केवलाऽनुष्ठानान्तरेण। विधानान्तरमन्त्रेणेति क्वचित् ॥४।

(गंगासहस्रनामस्तोत्र)

अगस्त्य ने पूछा—

'विना गंगास्नान के मनुष्य का जन्म निरर्थक है, तब क्या कोई दूसरा उपाय भी है, जिसके द्वारा स्नान का फल मिल सके ? ॥ १ ।

अशक्त, पंगु, आलस्यग्रस्त और दूरदेशस्थ लोगों को गंगास्नान का फल किस प्रकार से प्राप्त हो सकता है ? ॥ २ ।

हे षण्मुख ! जिसमें गंगास्नान का फल होवे, ऐसा दान, व्रत, मन्त्र, स्तोत्र, जप, अन्यतीर्थाभिषेक अथवा देवता की उपासना इत्यादि यदि कोई भी अन्य कर्म हो, तो मुझ प्रणत से कीर्तन कीजिये ॥ ३-४ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्वत्तो वेद स्कन्दाऽन्यो गङ्गागर्भसमुद्भव ।
परं स्वर्गतरङ्गिण्या महिमानं महामते ॥ ५ ।

स्कन्द उवाच—

सन्ति पुण्यजलानीह सरांसि सरितो मुने ।
स्थाने स्थाने च तीर्थानि जितात्माऽध्युषितानि च ॥ ६ ।
दृष्टप्रत्ययकारीणि महामहिमभाञ्ज्यपि ।
परं स्वर्गतरङ्गिण्याः कोटयंशोऽपि न तत्र वै ॥ ७ ।
अनेनैवाऽनुमानेन बुद्धस्व कलशोद्भव ।
दध्रे गङ्गोत्तमाङ्गेन देवदेवेन शम्भुना ॥ ८ ।
स्नानकालेऽन्यतीर्थेषु जप्यते जाह्नवी जनैः ।
विना विष्णुपदीं क्वाऽन्यत् समर्थमघमोचने[1] ॥ ९ ।

अन्य एव कश्चित्प्रष्टव्य इति न वाच्यमित्याह। त्वत्त इति। यतस्त्वं गङ्गागर्भसमुद्भवोऽतस्त्वत्तः परो गङ्गामाहात्म्यं न जानातीत्यर्थः ॥ ५ ।

यद्यपि पृथिव्यां मध्ये मध्ये प्रत्यक्षफलजनकानि मुनिभिरध्युषितानि महामहिमयुक्तान्यपि तीर्थानि सन्ति, तथापि गङ्गायाः कोट्यंशस्यांशोऽपि तेषु नास्त्यतो गङ्गास्नानजं फलं गङ्गायामेव लभ्यते, नाऽन्यत्रेति सदृष्टान्तमुत्तरमाह। सन्ति पुण्यजलानीति पञ्चभिः ॥ ६ ।

प्रतीयत इति प्रत्ययः फलम् ॥ ७ ।

हे महाबुद्धे ! स्कन्द ! आप गंगा के गर्भ से उत्पन्न हैं, अतः स्वर्गतरङ्गिणी की महिमा आप से अधिक दूसरा कोई नहीं जान सकता है ॥ ५ ।

स्कन्द ने उत्तर दिया—

मुने ! इस संसार में पुण्यजलसंपन्न अनेक सरोवर और नदियाँ हैं, स्थान-स्थान पर जितात्मा लोगों से अधिष्ठित कितने ही तीर्थ भी हैं ॥ ६ ।

जो प्रत्यक्ष फलजनक एवं बड़े ही महिमावाले होने पर भी गंगा के कोट्यंश समान नहीं हैं ॥ ७ ।

हे कलशोद्भव ! मैं अधिक क्या कहूँ, इसी से अनुमान के द्वारा समझ लीजिए कि स्वयं देवदेव शंभु ने गंगा को अपने मस्तक पर धारण किया है ॥ ८ ।

(देखिए) लोग दूसरे तीर्थों में भी स्नान करने के समय गंगा को ही जपते हैं, (भला) इस विष्णुपदी गंगा से भिन्न और पापमोचन करने में कौन समर्थ हो सकता है ? ॥ ९ ।

---

१. शोधने इत्यपि क्वचित्पाठः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गङ्गास्नानफलं ब्रह्मन् गङ्गायामेव लभ्यते ।
यथा द्राक्षाफलस्वादो द्राक्षायामेव नान्यतः ॥ १० ।
अस्त्युपाय इह त्वेकः स्याद्येनाऽविकलं फलम् ।
स्नानस्य देवसरितो महागुह्यतमो मुने ॥ ११ ।
शिवभक्ताय शान्ताय विष्णुभक्तिपराय च ।
श्रद्धालवे त्वास्तिकाय गर्भवासमुमुक्षवे ॥ १२ ।
कथनीयं चाऽन्यस्य कस्यचित्केनचित्क्वचित् ।
इदं रहस्यं परमं महापातकनाशनम् ॥ १३ ।
महाश्रेयस्करं पुण्यं मनोरथकरं परम् ।
द्युनदीप्रीतिजनकं शिवसन्तोषसन्ततिः ॥ १४ ।
नाम्नां सहस्रं गङ्गायाः स्तवराजेषु शोभनम् ।
जप्यानां परमं जप्यं वेदोपनिषदा समम् ॥ १५ ।

द्राक्षा गोस्तनी ॥ १० ।

तर्ह्यन्धपङ्ग्वादीनां कथं निस्तार इत्यत आह । अस्त्युपाय इति ॥ ११ ।

इदं नाम्नां सहस्रमित्यन्वयः ॥ १३ ।

शिवसन्तोषसन्ततिः शिवसन्तोषस्य सन्ततिः परम्परा यत्र तत्तथा । सन्तोषकृदिति क्वचित् ॥ १४ ।

स्तवेषु मध्ये राजन्त इति स्तवराजास्तेषु शोभनं शोभायमानं चारुतरमित्यर्थः । वेदोपनिषदा वेदान्तेन तज्जन्यविद्यया वा ॥ १५ ।

ब्रह्मन् ! गंगा के स्नान का फल केवल गंगा ही में पाया जा सकता है, जैसे द्राक्षा (दाख-अंगूर) के फल का स्वाद द्राक्षा ही में मिल सकता है, दूसरी वस्तु में तो नहीं प्राप्त होता ॥ १० ।

परन्तु हे मुने ! केवल एक ही उपाय है, जिसके द्वारा अविकल (ज्यों का त्यों) गंगास्नान का फल प्राप्त हो सकता है; किन्तु वह अत्यन्त ही गोपनीय है ॥ ११ ।

जो शिवभक्त, शान्त, विष्णुभक्तितत्पर, श्रद्धालु, आस्तिक एवं गर्भवास से मुमुक्षु होवे, उसी से इस महापातकनाशन, परमरहस्यविषय को कहना चाहिए, कभी अन्य किसी से कहीं भी इसे प्रकाशित न करना ही उचित है ॥ १२-१३ ।

यह महाकल्याणकर, पुण्यमय, परम-मनोरथपूरक, गंगा का प्रीतिवर्द्धक एवं शिव का अतिसन्तोषकारक, स्तवराजों में शोभन गंगा का सहस्रनाम है, जपनीयों में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जपनीयं प्रयत्नेन मौनिना वाचकं विना।
शुचिस्थानेषु शुचिना सुस्पष्टाक्षरमेव च॥ १६॥

प्रथमतो गङ्गानामसहस्रं वक्ष्यन् मङ्गलमाचरति। ॐ नमो गङ्गा देव्या इति। नन्वत्राऽकाराद्यादिक्षकाराद्यन्तानि नामानि क्रमेण दृश्यन्ते, तत्किमिति मध्ये ॠ ऋ ऌ ॡ अः ङ ञ ठ ण थादीनि नामानि नोपलभ्यन्त इति। न च पतितानीति वाच्यम्, बहुपुस्तकेष्वदृष्टेः। गणनायां कृतायां किञ्चिदधिकानि नवशतान्येव लभ्यन्त इति। अत्रोच्यते—सम्पूर्णसहस्रनाम्नां कीर्तनादिना सद्य एव सशरीराणां प्राणिमात्राणां वैकुण्ठशिवलोकादिप्राप्तेरकाण्ड एव सृष्ट्याद्युच्छेदादृकारादि नववर्णानां कियतां नाम्नां सङ्गोपनं गङ्गयैव कृतमिति। यथा दर्शनमात्रेण सर्वजन्तूनां सशरीराणां सद्यो वैकुण्ठलोकप्राप्तिवारणाय पुरुषोत्तमाख्ये क्षेत्रेऽङ्गवैकल्यं श्रीपुरुषोत्तमस्य यथा वा बदरिकाश्रमे श्रीनारायणस्येति। न च तर्हि साङ्गाऽभावात्फलाभावः। अग्निहोत्रादि-कर्माणि सापायानि कलौ युगे, गङ्गास्नानं हरेर्नाम निरपायमिदं द्वयम्, नेहाऽभि-क्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते। स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयादित्यादि स्मृतेर्यथाकथञ्चित् कृतस्यापि गङ्गास्नानस्य हरिहरगङ्गादिनामोच्चारणस्य च फलाऽ-वश्यंभावात्। अस्तु वा यथा तथा किमस्माकं वराकाणां तच्चिन्तया। यथास्थिति-नाम्नां सहस्रस्य समावेशो यथा भवति तथा व्याख्यायत इति। अत्रोंकाररूपिणी-त्यादिशब्दानां पुनरुक्तानामपि वृत्तिभेदान्न पौनरुक्त्यम्। गणनाथाऽम्बिकाढुण्ढिविघ्नेश-जननीत्यादीनां वृत्त्येकत्वेऽपि शब्दभेदान्न पौनरुक्त्यम्। अर्थैक्यपौनरुक्त्यं न दोषाय। योऽसौ निरञ्जनो देवश्चित्स्वरूपी जनार्दनः, स एव द्रवरूपेण गङ्गाम्भो नाऽत्र संशय इति स्मृतेर्गङ्गायाः परब्रह्मरूपत्वात् सैवाऽत्र विशिष्यते। तत्रापि स्त्रीलिङ्गशब्दा गङ्गाया नपुंसकशब्दा गङ्गाम्भसः पुंल्लिङ्गशब्दा जनार्दनस्य विशेषणमिति द्रष्टव्यम्। तत्रोंकारस्याकारोकारमकारात्मकत्वादोंकाररूपिणीत्यस्याकारादित्वं बोद्धव्यम्। यद्वा ओंकारस्य सर्ववर्णात्मकत्वान्माङ्गलिकत्वाच्चादावुपादानं युक्तमिति तदादित्वम्। तदुक्तम्—

ॐकारप्रभवा वेदा ॐकारप्रभवाः सुराः।
ॐकारप्रभवं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्॥
ॐकारश्चाऽथशब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा।
कण्ठं भित्त्वा विनिर्यातौ तस्मान्माङ्गलिकावुभौ॥
स्रवत्यनोंकृतं पूर्वं परस्माच्च विशीर्यते॥ इत्यादि।

परम जप्य और वेद के उपनिषदों के समान इस सहस्रनाम को प्रयत्नपूर्वक मौन धारण कर, पवित्र स्थानों पर अत्यन्त स्पष्ट अक्षरों से वाचक के विना (अर्थात् स्वयं) पवित्र भाव से जप करने योग्य है॥ १४-१६।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्कन्द उवाच—

ॐकाररूपिण्यजराऽतुलाऽनन्ताऽमृतस्रवा ।
अत्युदाराऽभयाऽशोकाऽलकनन्दाऽमृता१०ऽमला ॥ १७ ।

ॐकाररूपणीति यद्यपि ब्रह्मादिशब्दाः परदेवताया वाचकास्तथापि श्रुतिप्रामाण्यात्परदेवताया नेदिष्ठमभिधानयोंकारः। अत एव परदेवताप्रतिपत्ताविदं परं साधनम्। तच्च द्विप्रकारेण प्रतीकत्वेनाभिधानत्वेन च। तथा विष्ण्वादिप्रतिमाभेदेन। एवमोंकाररूपिणी परादेवता प्रतिपत्तव्या। तथा ह्योंकारलम्बनस्य परादेवता प्रसीदति।

एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम्।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते ॥ इति श्रुतेः।

तथा चायमर्थः—ॐकाररूपिणी ॐकारप्रतीका ॐकारवाचका सर्वात्मकत्वात् प्रणवस्वरूपा चेत्यर्थः। न विद्यते जराऽपक्षयलक्षणा पञ्चमीविकृतिर्यस्याः साऽजरा। न विद्यते तुला परिमाणं यस्याः साऽतुला। न विद्यते देशतः कालतो वस्तुतोऽन्तः परिच्छेदः षष्ठो विकारो विनाशो वा यस्याः साऽनन्ता। अमृतं धर्मद्रवात्मकं तोयं स्रवति वहति मोहिनीरूपेण देवेभ्यो वाऽमृतं सुधां ददातीत्यमृतस्रवा। अतिशयेनोदारा दात्री महतीत्यतिक्रान्ता उदारा दातारो महान्तो वा यया सा अत्युदारा। न विद्यते भयं यस्याः सकाशादिति वा साऽभया अद्वितीयत्वात्। 'द्वितीयाद्वै भयं भवति' इति श्रुतेः। न विद्यते शोको यस्याः यस्याः, सकाशादिति वा साऽशोका। 'तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः' इति श्रुतेः। अलकनन्दा भारतवर्षगा गङ्गा। सा च सप्तधा तदुक्तं वैष्णवे—

समन्ताद्ब्रह्मणः पुर्या गङ्गा पतति वै दिवः।
सा तत्र पतिता दिक्षु चतुर्धा प्रतिपद्यते ॥
सीता चाऽलकनन्दा च चक्षुर्भद्रा च वै क्रमात् ॥ इत्यादि।

अमृता सुधास्वरूपा। न विद्यतेऽमृतं मरणं यस्याः, यस्याः सकाशादिति वा साऽमृतेति वा न जायते म्रियते वा विपश्चिदित्यादिश्रुतेः १०, अमला निर्मला शुद्धसत्त्वेत्यर्थः। न विद्यते संसारलक्षणं मलं यस्याः, यस्याः सकाशादीति वा साऽमला इति वा ॥ १७।

स्कन्द ने कहा—

श्री गंगा देवी को नमस्कार है। ओंकाररूपिणो, अजरा, अतुला, अनन्ता, अमृतस्रवा, अत्युदारा, अभया अशोका, अलकनंदा, अमृता (१०) अमला ॥ १७।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनाथवत्सलाऽमोघाऽपांयोनिरमृतप्रदा ।
अव्यक्तलक्षणाऽक्षोभ्याऽनवच्छिन्नाऽपराऽजिता ॥ १८ ।
अनाथनाथाऽभीष्टार्थसिद्धिदाऽनङ्गवर्धिनी ।
अणिमादिगुणाऽधाराग्रगण्याऽलीकहारिणी ॥ १९ ।

अः विष्णुर्नाथो येषां तेऽनाथा विष्णुभक्तास्तेषु संसाराङ्गारपापच्यमानेषु वत्सला स्निग्धाऽनाथवत्सला। अमोघानामतः शान्तनोर्भार्याऽवस्थायाम्। ब्रह्मपुत्र महाभाग शान्तनोः कुलनन्दन। अमोघागर्भसम्भूत गृहाणाऽर्घ्यं नमोऽस्तुते इति॥ स्मृतेः। न विद्यन्ते मोघा व्यर्था धर्मार्थकाममोक्षा यस्याः, यस्याः सकाशादिति वा साऽमोघाऽव्यर्था परमार्थेति यावदिति वा। सत्यं ज्ञानमनन्तमित्यादिश्रुतेः। अपामपञ्चीकृतानां जलानां योनिः कारणम्। ता आप ऐक्षतेति श्रुतेः। अत एव ससर्जादाविति स्मृतेश्च। समुद्रात्मकत्वाद्वाऽपां योनिः कारणम्। यथा सर्वासामपां समुद्र एका योनिरिति श्रुतेः। अमृतं मोक्षं भक्तेभ्यः प्रददात्यभक्तेभ्यो वा प्रकर्षेण खण्डयतीत्यमृतपदा। न केनाऽपि प्रमाणेन व्यज्यत इत्यव्यक्तं ब्रह्म। ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासत इति स्मृतेः। प्रकृतिर्वाऽव्यक्तम्, नारायणः परोऽव्यक्तादिति स्मृतेः। तल्लक्षणा तत्स्वरूपाऽव्यक्तलक्षणा। न केनापि क्षोभ्यत इत्यक्षोभ्या कूटस्थेत्यर्थः। न केनाऽप्यऽवच्छिद्यत इत्यनवच्छिन्ना त्रिविधपरिच्छेदशून्येत्यर्थः। एकमेवाद्वितीयमिति श्रुतेः। न विद्यते पर उत्कृष्टो यस्याः साऽपरा। अवतारादिषु कदापि केनचिन्न जितेत्यजिता। अपराजितेत्यत्र यद्यप्येकनाम प्रतिभाति, तथापि सहस्रसंख्यापरिपूर्त्यर्थमेवं व्याख्यायत इत्येवमेतादृशे स्थले अग्रेऽपि बोद्धव्यम् २० ॥ १८।

अः विष्णुर्नाथो येषां तेरनाथैर्वैष्णवैः संसाराङ्गारदन्दह्यमानैर्वा नाथ्यते प्रार्थ्यते इत्यनाथनाथा। भक्तानां येऽभीष्टाऽर्थास्तेषां सिद्धिदा तत्प्रापिका अभक्तानां सिद्धिखण्डिका वेत्यभीष्टार्थसिद्धिदेत्यर्थः। अनङ्गवर्धिनी कामवर्धिनी कामच्छेत्री वा। वृधु छेदने इति धातुः। न छिद्यते अङ्गं यस्याऽसावनङ्गः परमात्मा तं वर्धयितुं शीलं यस्याः साऽनङ्गवर्धिनीति वा। अणिमा आदिर्येषां ते अणिमादयः, आदिपदेन महिमा गरिमा लघिमेशित्ववशित्वप्राप्तिप्राकाम्या निगृह्यन्ते। ते गुणा यस्याः साऽणिमादिगुणा। अः विष्णुराधारो यस्याः सा आधारा तदेकाश्रयेत्यर्थः, तत्पादपद्मनिःसृतत्वात्। अग्रे प्रथमतो गण्यते इत्यग्रगण्या सर्वेषां मध्ये श्रेष्ठेत्यर्थः। एष सर्वेश्वर इत्यादिश्रुतेः। अलीकं मिथ्याभूतमनिर्वचनीयमज्ञानं तत्कार्यं हर्तुं शीलं यस्याः साऽलीकहारिणी। यत्र त्वस्य सर्वमात्मैवाऽभूत् तत्केन कं पश्येदित्यादिश्रुतेः ॥ १९।

अनाथवत्सला, अमोधा, अपांयोनि, अमृतप्रदा, अव्यक्तलक्षणा, अक्षोभ्या, अनवच्छिन्ना, अपरा, अजिता (२०) ॥ १८।

अनाथनाथा, अभीष्टार्थसिद्धिदा, अनंगवर्धिनी, अणिमादिगुणा, आधारा, (अधारा) अग्रगण्या, अलीकहारिणी ॥ १९।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अचिन्त्यशक्तिरनघाऽद्भुतरूपा ३०ऽघहारिणी ।
अद्रिराजसुताऽष्टाङ्गयोगसिद्धिप्रदाऽच्युता ॥ २० ॥

अक्षुण्णशक्तिरसुदाऽनन्ततीर्थाऽमृतोदका ।
अनन्तमहिमाऽपारा४०ऽनन्तसौख्यप्रदाऽन्नदा ॥ २१ ॥

अचिन्त्या शक्तिर्मायाख्या यस्या अचिन्त्या दुरधिगम्या च सा शक्तिश्चिच्छक्तिश्चेति वा साऽचिन्त्यशक्तिः । मम माया दुरत्ययेति स्मृतेः । न विद्यतेऽघमज्ञानं तत्कार्यलक्षणं पापलक्षणं वा यस्या यस्याः सकाशादिति वा साऽनघा । निरवद्यं निरञ्जनमिति श्रुतेः । गङ्गा तारयते पुंसामुभौ वंशौ भवार्णवादिति स्मृतेश्च । अद्भुतमाश्चर्यं रूपं यस्याः साऽद्भुतरूपा । आश्चर्योऽस्य वक्ता कुशलोऽस्य मन्ता आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमित्यादि श्रुतिस्मृतिभ्याम् ३० अघं हर्तुं शीलं यस्याः साऽघहारिणी । तदुक्तम्—

दृष्टा जन्मशतं स्पृष्टा जन्मशतानि च ।
स्नानाज्जन्म सहस्राणि हन्ति गङ्गा कलौ युगे ॥ इति ।

अद्रिराजस्य हिमवतः सुता कन्याऽद्रिराजसुता । तथा च बालकाण्डे रामायणे—

शैलेन्द्रो हिमवान्नाम रत्नानामाकरो महान् ।
तस्य कन्या द्वयं नामरूपेणाप्रतिमं भुवि ॥ इत्यादि ।

अष्टौ यमनियमासनप्राणसंरोधप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधिलक्षणान्यङ्गानि साधनत्वेन यस्मिन् स चासौ जीवात्मनोरैक्यीं च तनयोगश्च तस्य सिद्धिप्रदा मुक्तिप्रदेत्यर्थः । स्वस्वरूपान्न च्यवत इत्यच्युता ॥ २० ।

अक्षुण्णा अखण्डिता चासौ शक्तिश्च अक्षुण्णाऽकुण्ठिता शक्तिर्यस्या वा साऽक्षुण्णशक्तिः । असून्प्राणान् ददाति प्रवर्तयति खण्डयतीति वा असुदा । प्राणस्य प्राणमिति श्रुतेः । अनन्तानि तीर्थानि यस्यां साऽनन्ततीर्था । सर्वतीर्थमयी गङ्गेति स्मृतेः । अमृतममृतवत् स्वादु अमृतनिमित्तं वा उदकं यस्याः सा अमृतोदका । अनन्तोऽपरिच्छिन्नो महिमा महत्त्वं यस्याः साऽनन्तमहिमा । न विद्यते पारोऽवधिर्यस्याः साऽपारा ४० । सुखमेव सौख्यम्, अनन्तं सौख्यं ब्रह्मसुखं प्रददातीत्यनन्तसौख्यप्रदा । अन्नं ददातीत्यन्नदा भुक्तिप्रदेत्यर्थः ॥ २१ ॥

अचिन्त्यशक्ति, अनघा, अद्‌भुतरूपा (३०) अघहारिणी, अद्रिराजसुता, अष्टांगयोगसिद्धिप्रदा, अच्युता ॥ २० ।

अक्षुण्णशक्ति, असुदा, अनन्ततीर्था, अमृतोदका, अनन्तमहिमा, अपारा (४०) अनन्तसौख्यप्रदा, अन्नदा ॥ २१ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अशेषदेवतामूर्तिरघोराऽमृतरूपिणी ।
अविद्याजालशमनी ह्यप्रतर्क्यगतिप्रदा ॥ २२ ।
अशेषविघ्नसंहर्त्री त्वशेषगुणगुम्फिता ।
अज्ञानतिमिरज्योति५०रनुग्रहपरायणा ॥ २३ ।
अभिरामाऽनवद्याङ्ग्यनन्तसाराऽकलङ्किनी ।
आरोग्यदाऽऽनन्दवल्ली त्वापन्नार्तिविनाशिनी ॥ २४ ।

अशेषाः समग्रा देवता मूर्तौ यस्याः सा अशेषदेवतामूर्तिः । सर्वदेवमयो हरिरिति स्मृतेः । न घोरा अघोरा शान्तस्वभावेत्यर्थः । सरस्वती रजोरूपा तमोरूपा कलिन्दजा सत्त्वरूपा च गङ्गाऽत्र नयन्ति ब्रह्मनिर्गुणमित्युक्तेः । अमृतरूपिणी कैवल्यरूपा । तदेतद्ब्रह्मामृतमभयमिति श्रुतेः । अमृतवर्षिणीति क्वचित्पाठः । अविद्यैव जालमावरकत्वात्तस्याः शमनी नाशकर्त्री अविद्याजालशमनी । अप्रतर्क्यां वाङ्मनसयोरगम्यां गतिं प्रत्यग्ब्रह्मैक्यरूपां प्रददातीति अप्रतर्क्यगतिप्रदा । हि निश्चये । एवमग्रेऽपि ॥ २२ ।

अशेषाणां विघ्नानाममङ्गलानामाधिदैविकाऽधिभौतिकाऽध्यात्मिकानां संहर्त्री अशेषविघ्नसंहर्त्री । एवार्थे तुशब्दः । एवमग्रेऽपि । अशेषैर्गुणैः सर्वज्ञत्वादिलक्षणैर्गुम्फिता ग्रथिता व्याप्ता अशेषगुणगुम्फिता । अज्ञानमेव तिमिरं तमस्तस्य ज्योतिर्नाशकम् । आश्रयत्वविषयत्वयोः प्रदानेन तत्प्रकाशकमिति वा ५०, भक्तानामनुग्रहाय परायणा व्यग्रा अनुग्रहपरायणा ॥ २३ ।

अभिरमन्त्यस्यां योगिन इत्यभिरामा ।

रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि ।
इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माऽभिधीयते ॥ इति स्मृतेः ।

न वद्यं दुष्टमङ्गं स्वरूपं यस्याः सा अनवद्याङ्गी । निर्दोषं हि समं ब्रह्मेति स्मृतेः । अनन्तः सारः स्थिरोंऽशो यस्याः साऽनन्तसारा अनन्ते प्रपञ्चे सारभूता इति वा । न विद्यते कलङ्को यस्याः साऽकलङ्किनी । आरोग्यं ददातीत्यारोग्यदा रोग एव रोग्यं आ समन्ताद्रोग्यं द्यति खण्डयतीति वा आरोग्यदा । आनन्दवल्ली सुखलतिका । स एष परमानन्द इति श्रुतेः । आपन्नार्तिविनाशिनी भक्तपीडोपशमनी ॥ २४ ।

अशेषदेवतामूर्ति, अघोरा, अमृतरूपिणी, अविद्याजालशमनी, अप्रतर्क्यगतिप्रदा ॥ २२ ।

अशेषविघ्नसंहर्त्री, अशेषगुणगुंफिता, अज्ञानतिमिरज्योति (५०) अनुग्रहपरायणा ॥ २३ ।

अभिरामा, अनवद्यांगी, अनन्तसारा, अकलंकिनी, आरोग्यदा, आनन्दवल्ली, आपन्नार्तिविनाशिनी ॥ २४ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आश्चर्यमूर्तिरायुष्या६०ह्याढ्याऽऽद्याऽऽप्राऽऽर्यसेविता ।
आप्यायिन्याप्तविद्याऽऽख्या त्वानन्दाऽऽश्वासदायिनी।। २५ ।
आलस्यघ्न्या७०पदां हन्त्री ह्यानन्दामृतवर्षिणी ।
इरावतीष्टदात्रीष्टा त्विष्टापूर्तफलप्रदा ।। २६ ।

आश्चर्या मूर्तिः स्वरूपं यस्याः सा **आश्चर्यमूर्तिः** । आश्चर्यरूपिणीति क्वचित्पाठः । आयुर्भ्यो हिता **आयुष्या** ६० **आढ्या** परिपूर्णेत्यर्थः । आदौ भवा **आद्या** सर्वकारणमित्यर्थः । आ समन्तात् प्राति पूरयतीत्याप्रा । प्रा पूरण इति धातुः । तदुक्तं वैष्णवे—

समन्ताद् ब्रह्मणः पुर्यां गङ्गा पतति वै दिवः ।
सा तत्र पतिता दिक्षु चतुर्धा प्रतिपद्यते ।। इत्यादि ।

पृथोर्भयाद् गोरूपा सती आ समन्ताच्चतुःसमुद्रान् व्याप्नोतीति वा **आप्रा** । सर्वात्मकत्वाद्गङ्गायाः । तदुक्तं कालिदासेन—"**पयोधरीभूतचतुःसमुद्रां जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम्**" इति । आप्तेति क्वचित्पाठः । आर्यैः पूज्यैर्विश्वेश्वरादिभिः सेविता उपासिता **आर्यसेविता** । आप्यायितुं तृप्तिं जनयितुं शीलं यस्याः सा **आप्यायनी** । आप्ता चासौ विद्या चेति **आप्तविद्या** स्वतोऽपरोक्षब्रह्मात्मैकत्वविद्येत्यर्थः । आप्ता प्राप्ता विद्या ययेति वा । आ समन्तात् ख्या प्रकथनं यस्याः सा **आख्या** प्रसिद्धेत्यर्थः । प्रसिद्धत्वं चास्याः सिताऽसिते सरिते यत्र सङ्गते इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति इत्याद्यया श्रुत्या बोद्धव्यम् । **आनन्दा** सुखस्वरूपा । विज्ञानमानन्दं ब्रह्मेति श्रुतेः । आश्वासं निर्भयं दातुं शीलं यस्याः सा **आश्वासदायिनी** ।। २५ ।

अलसस्य भाव आलस्यं तद्धन्तुं शीलं यस्याः सा **आलस्यघ्नी** । **आलस्यमूलकामक्रोधादिसर्वदोषहन्त्रीत्यर्थः** ७०, **आपदां हन्त्री** आपदामाध्यात्मिकाऽधिदैविकाऽधिभौतिकानां दुःखानां हन्त्री नाशयित्री । तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यत इति श्रुतेः । आनन्दं ब्रह्मसुखममृतं सुधा तद्द्वयं भक्तेभ्यो वर्षितुं शीलं यस्याः सा **आनन्दामृतवर्षिणी** । आनन्दामृतवाहिनीति पाठे आनन्दात्मकं यदमृतं जलं तद्वोढुं शीलं यस्याः, सा तथा । योऽसौ निरञ्जनो देव इत्यादिस्मृतेः । **इरावती** नदीप्रभेदस्तद्रूपेरावती । इरा इन्दिरा लक्ष्मीस्तद्वतीति वा । तथा चात्रैवोक्तम्—'इरावतीं मधुमतीम्' इत्यादि । इष्टान् ददातीतीष्टदात्री । **इष्टा**ऽभिप्रेता परमप्रेमास्पदेत्यर्थः । इष्टा पूज्येति वा । तु इष्टं हुतं पूर्तं वापीकूपतडागादिनिर्माणं तयोः फलं प्रददातीति **इष्टापूर्तफलप्रदा** ।। २६ ।

आश्चर्यमूर्ति, आयुष्या (६०), आढ्या, आद्या, आप्रा, आर्यसेविता, आप्यायिनी आप्तविद्या, आख्या, आनन्दा, आश्वासदायिनी ।। २५ ।

आलस्यघ्नी (७०) आपदांहन्त्री, आनन्दामृतवर्षिणी, इरावती, इष्टदात्री, इष्टा, इष्टापूर्तफलप्रदा ।। २६ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इतिहासश्रुतीडयार्था त्विहाऽमुत्र शुभप्रदा ।
इज्या शीलसमिज्ज्येष्ठा त्विन्द्रादिपरिवन्दिता ८०॥ २७ ।
इलाऽलङ्कारमालेद्धा त्विन्दिरारम्यमन्दिरा ।
इदिन्दिरादिसंसेव्या त्वीश्वरीश्वरवल्लभा ॥ २८ ।
ईतिभीतिहरेडचा च त्वीडनीयचरित्रभृत् ९० ।
उत्कृष्टशक्तिरुत्कृष्टोडुपमण्डलचारिणी ॥ २९ ।

इतिहासः पुरावृत्तं श्रुतिर्वेदस्ताभ्यां ईड्यः स्तुत्योऽर्थः प्रयोजनं पुरुषार्थो वा यस्याः सा इतिहासश्रुतीड्यार्था । तु इहाऽस्मिंल्लोकेऽमुत्र च परलोके शुभं सुखं मोक्षं च प्रददातीति इहामुत्रशुभप्रदा । सुखदा मोक्षदा गङ्गा गङ्गैव परमा गतिरिति स्मृतेः । इज्यायां शीलं स्वभावो येषां ते इज्याशीलाः समं ब्रह्म । निर्दोषं हि समं ब्रह्मेति स्मृतेः । तद्वर्तते येषां ते समिनस्तेषु ज्येष्ठा कर्मिणां ज्ञानिनां चोभयेषां मध्ये वा पूज्येत्यर्थः । समी इति पाठे दैर्घ्यं छान्दसम् । तु इन्द्रादिपरिवन्दिता देवेन्द्रादिभिर्नुता स्तुता चेत्यर्थः ८० ॥ २७ ।

इला पृथ्वी तस्या अलङ्करणरूपा माला । तथा चोक्तम्—वसुधाशृङ्गारहारावलीति । इद्धा दीप्ता स्वप्रकाशेत्यर्थः । अत्राऽयं पुरुषः स्वयंज्योतिरिति श्रुतेः । आत्मा स्वप्रकाशः सच्चिद्रूपत्वात् प्रभाकराऽभिमतसंविद्वदित्यनुमानाच्च । तु इन्दिरा लक्ष्मीः सा रम्यं मन्दिरमाश्रयो यस्याः सा इन्दिरारम्यमन्दिरा । इन्दिराया वा रम्यमन्दिररूपा । अयनम् इत् । सम्पदादित्वाद् भावे क्विप् । इत् ज्ञानस्वरूपेत्यर्थः । सर्वे गत्यर्था ज्ञानार्था इति न्यायात् । **इन्दिरादिसंसेव्या** लक्ष्म्यादिभिः सेवनीया । आदिपदेन भवानीप्रमुखा गृह्यन्ते । माहेश्वरीरूपेण मौलिधृतत्वादिप्रतीतेः । तु ईश्वरी ईशनशीला सर्वनियन्त्री परा देवतेति यावत् । एष सर्वेश्वर इत्यादिश्रुतेः । **ईश्वरवल्लभा** ईश्वरस्य विश्वेश्वरस्य वल्लभा कान्ता । मातः शैलसुता सपत्निवसुधेत्यादि स्मृतेः । **वल्लभा** इष्टाऽभिप्रेता वेत्यर्थः ॥ २८ ।

ईतीनामतिवृष्ट्यनावृष्टिशलभमूषकशुकप्रत्यर्थिनृपाणां भीतिस्तां हरतीति तथा । ईडचा स्तुत्या । तु ईडनीयानि चरित्राणि तानि बिभर्तीति ईडनीयचरित्रभृत् ९० । उत्कृष्टा शक्तिर्यस्या उत्कृष्टस्य विष्णोः शक्तिर्वा **उत्कृष्टशक्तिः** । उत्कृष्टा उत्तमा । उडुपश्चन्द्रस्तस्य मण्डलं लोकं चर्तुं शीलं यस्याः सा **उडुपमण्डलचारिणी** । प्लावयित्वेन्दुमण्डलमित्युक्तेः ॥ २९ ।

इतिहासश्रुतीड्यार्था, इहामुत्र शुभप्रदा, इज्याशीलसमिज्ज्येष्ठा, इन्द्रादिपरिवन्दिता (८०) ॥ २७ ।

इलालंकारमाला, इद्धा, इन्दिरारम्यमंदिरा, इत्, इन्दिरादिसंसेव्या, ईश्वरी, ईश्वरवल्लभा ॥ २८ ।

ईतिभीतिहरा, ईड्या, ईडनीयचरित्रभृत् (९०), उत्कृष्टशक्ति, उत्कृष्टा, उडुपमंडलचारिणी ॥ २९ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदिताम्बरमार्गोस्रोरगलोकविहारिणी ।
उक्षोर्वरोत्पलोत्कुम्भा १०० उपेन्द्रचरणद्रवा ॥ ३० ॥
उदन्वत्पूर्तिहेतुश्चोदारोत्साहप्रवर्धिनो ।
उद्वेगघ्न्युष्णशमनी उष्णरश्मिसुताप्रिया ॥ ३१ ॥

उदित उदयं प्रापितोऽम्बरमार्गो यया सा **उदिताम्बरमार्गा** । **उस्रा**देवी द्योतनात्मिकेति यावत् । तेजोरूपत्वात् । उरगलोके विहर्तुं शीलं यस्याः सा **उरगलोकविहारिणी** । **भोगावती** च पाताल इत्युक्तेः । उक्षति फलसेकं करोतीति **उक्षा** । उर्वरा फलसस्याढ्या भूस्तत्स्वरूपा । यद्वा उरुर्महांश्चासौ अः विष्णुश्चेति उर्वो महाविष्णुस्तं राति प्रापयतीति **उर्वरा** । उत्पला उत्पलस्वरूपा । सर्वात्मकवाद् गङ्गायाः । यद्वा उत्कृष्टं पातीत्युत्पो नारायणस्तं लाति प्रापयतीत्युत्पला । उत् उत्कृष्टाः कुम्भा यस्याः सा उत्कुम्भा । यत् सम्बन्धादपवित्रा अपि कुम्भाः पवित्रा भवन्ति । तदुक्तम्—

अपि चाण्डालभाण्डस्थं यज्जलं पावनं महत् ।
सेयं गङ्गा कुरुश्रेष्ठ यथेष्टमवगाह्यताम् ॥

उच्छब्देन गर्गरीषु पूर्यमाणासु जायमाना ध्वनय उच्यन्ते । उत् एवंविधैर्ध्वनिभिर्युक्ताः कुम्भा यस्यां सा तथेति वा । उद्दम्भेति पाठे उद्गतो दम्भो यस्याः सा उद्दम्भेत्यर्थः ॥ १०० ॥

गंगानामसहस्रेऽस्मिन् विवृते प्रथमे शते ।
यददृष्टमभूदत्र तद्विश्वेशे समर्पितम् ॥ १०१ ॥

उपेन्द्रचरणद्रवा वामनपादावनेजनजला ॥ ३० ॥

उदन्वत्पूर्तिहेतुः उदन्वतः समुद्रस्य पूर्तेः पूरणस्य हेतुः कारणम् । चः समुच्चये । एवमग्रेऽपि । उदारा दात्री महतीति वा । **उत्साहप्रवर्धिनो** म्रियमाणानां दर्शनादिना हर्षकारिणी । उद्वेगं **दौस्थ्यं** हन्तीत्युद्वेगघ्नी । **उष्णशमनो** तापनाशिनो तृप्तिदायिनीति यावत् । तदुक्तं वासिष्ठे—

गङ्गाजलाऽभिषेकेण यथा तृप्तिर्भवेन्मम ।
तथा त्वद्दर्शनात्प्रीतिरन्तःशीतयतीव माम् ॥ इति ।

उष्णरश्मिसुतायाः सूर्यकन्याया यमुनायाः प्रिया अभीष्टा उष्णरश्मिसुताप्रिया ॥ ३१ ॥

उदिताम्बरमार्गा, उस्रा, उरगलोकविहारिणी, उक्षा, उर्वरा, उत्पला, उत्कुंभा (१००) उपेन्द्रचरणद्रवा ॥ ३० ।

उदन्वत्पूर्तिहेतु, उदारा, उत्साहप्रवर्द्धिनी, उद्वेगघ्नी, उष्णशमनी, उष्णरश्मिसुताप्रिया ॥ ३१ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिण्युपरिचारिणी ।
ऊर्जंवहं११०त्यूर्जधरोर्जावती चोर्मिमालिनी ॥ ३२ ।
ऊर्ध्वरेतःप्रियोर्ध्वाध्वा ह्यूर्मिलोर्ध्वगतिप्रदा ।
ऋषिवृन्दस्तुतर्द्धिश्च ऋणत्रयविनाशिनी १२० ॥ ३३ ।
ऋतम्भरर्द्धिदात्री च ऋक्स्वरूपा ऋजुप्रिया ।
ऋक्षमार्गवहर्क्षार्चिरृजुमार्गप्रदर्शिनी ॥ ३४ ।

उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणी ब्रह्मविष्णुशिवरूपिणीत्यर्थः। उपरि पृथिव्याः स्वर्गलोकस्य ब्रह्माण्डस्य वा उपरि चर्तुं शीलं यस्याः सा **उपरिचारिणी**। **उर्जंवहन्ती** ऊर्जंवहन्तीरमृतं घृतमित्यादिमन्त्ररूपा ११०। ऊर्जं बलं प्राणं वा धरतीत्यूर्जधरा। ऊर्जा बलधारणा प्राणधारणा वा तद्वती **ऊर्जावती** च। ऊर्मयस्तरङ्गास्तेषां माला वर्तते यस्याः सा **ऊर्मिमालिनी** ॥ ३२ ।

ऊर्ध्वरेतसां भिक्षुकाणां प्रियाऽभीष्टा ऊर्ध्वरेतःप्रिया। तथा चोक्तम्—

गङ्गातीरे वसेन्नित्यं भिक्षुर्मोक्षपरायणः।
सिद्धिक्षेत्रं तु तज्ज्ञेयं यावद्धनुशतत्रयम् ॥ इति ।

ऊर्ध्वमध्वा मार्गो यस्याः सा **ऊर्ध्वाध्वा**। त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुष इति श्रुतेः। ऊर्मींस्तरङ्गान् शोकमोहजरामृत्युक्षुत्पिपासादीन् वा देहाध्यासं वा लाति गृह्णातीत्यू**र्मिला**। ऊर्ध्वगतिप्रदा स्वर्गमोक्षादिगतिप्रदेत्यर्थः। ऋषिसमूहैः स्तुता **ऋषिवृन्दस्तुता**। **ऋद्धिः** समृद्धिरूपा कौवेरीशक्तिरूपा वा। देवर्षिपितॄणां ऋणत्रयं विनाशयितुं शीलं यस्याः सा **ऋणत्रयविनाशिनी**। च ऋणेति विसन्धिरार्ष एव। एवमुत्तरत्राऽपि १२० ॥ ३३ ।

ऋतं सत्यं ब्रह्म बिभर्तीति **ऋतम्भरा**। **ऋद्धिदात्री** समृद्धिदात्री च। **ऋक्स्वरूपा** ऋग्वेदात्मिका। **ऋजुप्रिया** अकुटिलाप्रिया। ऋक्षाणां चन्द्रादिनक्षत्राणां मार्गं वहतीति **ऋक्षमार्गवहा**। ऋक्षाणां चन्द्रादीनामिवार्चिर्दीप्तिर्यस्यास्तेषां वाऽर्चिर्दीप्तिर्यस्याः सकाशात् सा **ऋक्षार्चिः**। शङ्खकुन्देन्दुधवलेति वाराहोक्तेः। तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभातीति श्रुतेश्च। **ऋजुमार्गप्रदर्शिनी** मोक्षमार्गप्रकाशिनी ॥ ३४ ।

उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणी, उपरि चारिणी, ऊर्जं वहन्ती (११०) ऊर्जधरा, ऊर्जावती, ऊर्मिमालिनी ॥ ३२ ।

ऊर्ध्वरेतः प्रिया, ऊर्ध्वाध्वा, ऊर्मिला, ऊर्ध्वगतिप्रदा, ऋषिवृन्दस्तुता, ऋद्धि, ऋणत्रयविनाशिनी (१२०) ॥ ३३ ।

ऋतंभरा, ऋद्धिदात्री, ऋक्स्वरूपा, ऋजुप्रिया, ऋक्षमार्गवहा, ऋक्षार्चि, ऋजुमार्गप्रदर्शिनी ॥ ३४ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एधिताऽखिलधर्मार्था त्वेकैकामृतदायिनी १३० ।
एधनीयस्वभावैज्या त्वेजिताशेषपातका ॥ ३५ ।
ऐश्वर्यदैश्वर्यरूपा ह्यैतिह्यं ह्यैन्दवीद्युतिः ।
ओजस्विन्योषधीक्षेत्रमोजोदौ१४०दनदायिनी ॥ ३६ ।
ओष्ठामृतौन्नत्यदात्री त्वौषधं भवरोगिणाम् ।
औदार्यचञ्चुरौपेन्द्री त्वौग्री ह्यौमेयरूपिणी ॥ ३७ ।

एधितौ वर्धितावखिलौ समग्रौ धर्मार्थौ यया सा **एधिताऽखिलधर्मार्था**। तु एका मुख्याऽनुपमेति यावत्। अद्वितीयेति वा। एकमेवाद्वितीयमिति श्रुतेः। **एकामृतदायिनी** एकमद्वितीयं यद् ब्रह्मामृतं तद्दायिनी १३०। **एधनीयस्वभावा** एधनीयो वर्धनीयः स्वभावो यस्याः सा एधनीयस्वभावा। पापानि एजन्ति कम्पन्ते येभ्यस्ते एजास्तेषु साध्वी **एज्या** पूज्या। एजितानि कम्पितानि अशेषपातकानि यया सा **एजिताशेषपातका** ॥ ३५ ।

ऐश्वर्यं ददातीत्यैश्वर्यदा। ऐश्वर्यरूपा ईश्वरधर्मस्वभावा। हि ऐतिह्यं प्रमाणविशेषरूपा। हि ऐन्दवीद्युतिश्चान्द्रमसीकान्तिः। कान्तिस्तेजः प्रभा सत्ता, चन्द्राग्न्यर्कर्क्षविद्युतामिति भागवतोक्तेः। ओज इन्द्रियसामर्थ्यं तद्वती **ओजस्विनी**। ओषधीनां फलपाकान्तानां क्षेत्रं भूरूपम् ओज इन्द्रियसामर्थ्यं ददातीत्योजोदा। ओजदेति पाठे सकाराभाव आर्षः ॥ १४० । **ओदनदायिनी** अन्नदात्री अन्नपूर्णेत्यर्थः ॥ ३६ ।

ओष्ठेऽमृतं यस्याः सा **ओष्ठामृता**ऽमृतवदना मधुरभाषिणीति यावत्। उन्नतेर्भाव औन्नत्यं तद्दात्री **औन्नत्यदात्री**। तु औषधं भवरोगिणां संसाररोगवतामगदस्वरूपं संसाररोगनिवर्तकमित्यर्थः। उदारस्य भाव औदार्यं तत्र चञ्चुरा दक्षा। उपेन्द्रो वामनस्तस्येयं पत्नी **औपेन्द्री** लक्ष्मीरूपेत्यर्थः। यदाह पराशरः—पुनश्च पद्मादुद्भूता यदादित्योऽभवद्धरिरिति। उपेन्द्रचरणावनेजनीरूपा वा। तु उग्रस्येयमौग्री संहारकारिणीशक्तिरित्यर्थः। हि औमेयो गणेशः कार्तिकेयो वा तद्रूपिणी। यद्वा उमाया इदम् औमेयं तच्च तद्रूपं चेत्यौमेयरूपं तद्वर्तते यस्या इत्यौमेयरूपिणी। उमा यथा तथा गङ्गेति वचनात् ॥ ३७ ।

एधिताखिलधर्मार्था, एका, एकामृतदायिनी (१३०), एधनीयस्वभावा, एज्या, एजिताशेषपातका ॥ ३५ ।

ऐश्वर्यदा, ऐश्वर्यरूपा, ऐतिह्य, ऐन्दवी द्युति, ओजस्विनी, ओषधीक्षेत्र, ओजोदा, (१४०) ओदनदायिनी ॥ ३६ ।

ओष्ठामृता, औन्नत्यदात्री, औषधं भवरोगिणाम्, औदार्यचंचुरा, औपेन्द्री, औग्री, औमेयरूपिणी ॥ ३७ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अम्बराध्ववहांबष्ठां१५०बरमालाम्बुजेक्षणा ।
अम्बिकांबुमहायोनिरंधोदांधकहारिणी ॥ ३८ ॥
अंशुमाला ह्यंशुमती त्वङ्गीकृतषडानना ।
अंधतामिस्रहंन्त्र्यं१६०धुरंजना ह्यंजनावती ॥ ३९ ॥
कल्याणकारिणी काम्या कमलोत्पलगन्धिनी ।
कुमुद्वती कमलिनी कान्तिः कल्पितदायिनी१७० ॥ ४० ॥

अम्बराध्ववहा आकाशमार्गगंगा । अं विष्णुं वान्ति गच्छन्ति अम्बा वैष्णवाः । विभक्तेरलोप आर्षः । तेषु भक्तेषु तिष्ठतीत्यम्बष्ठा । वैश्यायां भार्यायां ब्राह्मणोत्पन्न-जातिविशेषा वा ।

विप्रान् मूर्द्धाभिषिक्तो हि क्षत्रियायां विशः स्त्रियाम् ।
अम्बष्ठः शूद्रयां निषादो जातः पारशवोऽपि वा ॥

इति याज्ञवल्क्योक्तेः १५० । अम्बरस्य अम्बरमा आकाशशोभा तां लाति करोतीत्यम्बरमाला अम्बरस्य माले वा अम्बरमाला । अम्बुजान्येव ईक्षणानि अम्बुजे इव वा ईक्षणे यस्याः सा अम्बुजेक्षणा । अम्बिका दुर्गा मातृस्वरूपा वा । अम्बु महायोनिरपांमूलकारणम् । अप एव ससर्जादाविति स्मृतेः । तदपोऽसृजत इति श्रुतेश्च । अन्धोऽन्नं ददातीत्यन्धदा । अन्धकहारिणी अन्धकनामानं दैत्यं हर्तुं शीलं यस्याः सा अन्धकहारिणी । अन्धयतीत्यन्धकमज्ञानं तद्धारिणीति वा । त्वन्धहारिणीति पाठेऽप्ययमेवाऽर्थः ॥ ३८ ।

अंशूनां तेजसां माला समूहो यस्यां सा अंशुमाला । हि अंशुमती तेजोवती । तु अङ्गीकृतः पुत्रत्वेन षडाननो यया सा अङ्गीकृतषडानना । अङ्कीकृतेति वा पाठः । स्वाहेयगाङ्गेयेत्याद्यत्रैवोक्तेः । अन्धतामिस्रं नरकविशेषस्तद्धन्त्री १६० । अन्धुर्धर्मकूपस्तत्स्वरूपा कूपमात्ररूपा वा । अञ्जतीत्यञ्जनाऽविद्या तत्स्वरूपा । हनुमज्जनयित्रीरूपा वा । हि अञ्जनावती अविद्यावती ॥ ३९ ।

कल्याणकारिणी शुभकारिणी । काम्यत इति काम्या । कमलानामुत्पलानां च गन्धो वर्तते यस्याः सा कमलोत्पलगन्धिनी । कुमुदानि वर्तन्ते यस्यां सा कुमुद्वती । [1]कुमुदशब्दस्याकारलोपश्छान्दसः । कमलानि वर्तन्ते यस्यां सा कमलिनी । कान्तिश्चन्द्रतेजोरूपा । शीतभानौ प्रसाद इत्यत्रैवोक्तेः । कल्पितदायिनी अभीष्टदायिनी १७० ॥४०।

अंबराध्ववहा, अंबष्ठा (१५०), अंबरमाला, अंबुजेक्षणा, अंबिका, अंबुमहायोनि, अंधोदा, अंधकहारिणी ॥ ३८ ।

अंशुमाला, अंशुमती, अंगीकृतषडानना, अंधतामिस्रहंत्री, (१६०) अंधु, अंजना, अंजनावती ॥ ३९ ।

कल्याणकारिणी, काम्या, कमलोत्पलगन्धिनी, कुमुद्वती, कमलिनी, कान्ति, कल्पितदायिनी (१७०) ॥ ४० ।

१. कुमुदनडवेतसेभ्य इति ड्मतुपा सिद्धे छान्दसत्वकल्पनं विचारणीयम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काञ्चनाक्षी कामधेनुः कीर्तिकृत्क्लेशनाशिनी ।
क्रतुश्रेष्ठा क्रतुफला कर्मबन्धविभेदिनी ॥ ४१ ।
कमलाक्षी क्लमहरा कृशानुतपनद्युतिः १८० ।
करुणार्द्रा च कल्याणी कलिकल्मषनाशिनी ॥ ४२ ।
कामरूपा क्रियाशक्तिः कमलोत्पलमालिनी ।
कूटस्था करुणा कान्ता कूर्मयाना १९० कलावती ॥ ४३ ।

काञ्चने इवाक्षिणी यस्याः सा **काञ्चनाक्षी** । **कामधेनुः** कामधुक् सुरभिरिति यावत् । धेनूनामस्मि कामधुगिति भगवद्वचनात् । **कीर्तिकृद्** यशःकर्त्री । अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्चक्लेशाः तन्नाशिनी । क्रतुभ्यः श्रेष्ठा **क्रतुश्रेष्ठा** । अश्वमेधादियागाधिकफलप्रदेत्यर्थः !

कुतोऽवीचिर्वीचिस्तव यदि गता लोचनपथं
त्वमापीतापीताम्बरपुरनिवासं वितरसि ।
त्वदुत्सङ्गे गङ्गे यदि पतति कायस्तनुभृतां
तदा मातः शातक्रतवपदलाभोऽप्यतिलघुः ॥ इत्याद्युक्तेः ।

क्रतूनां फलं यस्यां सा **क्रतुफला** । कर्मैव बन्धः कर्मबन्धस्तद्विभेदिनी **भेत्री** ॥ ४१।

कमले इवाक्षिणी यस्याः सा **कमलाक्षी** । **क्लमहरा** श्रान्तिहरा । कृशानुर्वह्निः । तपनः सूर्यस्तयोरिव द्युतिर्यस्याः सा **कृशानुतपनद्युतिः** । सूर्यकोटिप्रतीकाश इत्यादि स्मृतेः १८० । **करुणार्द्रा** करुणयाऽऽर्द्रास्निग्धा व्याप्तेति यावत् । च कल्याणं वर्तते यस्याः सा **कल्याणी** । **कलिकल्मषनाशिनी** कलिकालोत्पन्नानां पापानां नाशिनी । कलौ गङ्गेव केवलमिति स्मृतेः ॥ ४२ ।

काममिच्छैव रूपं यस्याः कामेन स्वेच्छया वा रूपं यस्याः सा **कामरूपा** । क्रियायां शक्तिर्यस्याः सा **क्रियाशक्तिः** सूत्रात्मकस्वरूपेत्यर्थः । क्रियाशक्तिरूपा वा कमलोत्पलानां माला वर्तते यस्याः सः **कमलोत्पलमालिनी** । कूटयति च्छलति आत्मानमानन्दत्वादिकमावृत्य संसारे पातयतीति कूटोऽज्ञानं तत्र तिष्ठति तदध्यक्षतया । यद्वा कूटस्याऽज्ञानस्य स्था स्थितिर्यस्यां सा । यद्वा कूटो गिरिश्रृङ्गं तद्वन्निष्क्रियतया तिष्ठति । यद्वा कालत्रयव्यापकतया एकरूपा षड्भावविकाररहिता **कूटस्था** । **करुणा** दयास्वरूपा । **कान्ता** कमनीया । कूर्मो यानं कूर्मवत् कूर्मेण लक्षणविशेषेण वा यानं गमनं यस्याः सा **कूर्मयाना** १९० । कला चतुःषष्टिकला वर्तन्ते यस्याः सा **कलावती** ॥ ४३ ।

कांचनाक्षी, कामधेनु, कीर्तिकृत्, क्लेशनाशिनी, क्रतुश्रेष्ठा, क्रतुफला, कर्मबन्धविभेदिनी ॥ ४१ ।

कमलाक्षी, क्लमहरा, कृशानुतपनद्युति, (१८०)करुणार्द्रा, कल्याणी, कलिकल्मषनाशिनी ॥ ४२ ।

कामरूपा, क्रियाशक्ति, कमलोत्पलमालिनी, कूटस्था, करुणा, कान्ता, कूर्मयाना (१९०), कलावती ॥ ४३ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कमला कल्पलतिका काली कलुषवैरिणी ।
कमनीयजला कम्रा कपर्दिसुकपर्दगा ॥ ४४ ।
कालकूटप्रशमनी कदम्बकुसुमप्रिया २०० ।
कालिन्दी केलिललिता कलकल्लोलमालिका ॥ ४५ ।
क्रान्तलोकत्रया कण्डूः कण्डूतनयवत्सला ।
खड्गिनी खड्गधाराभा खगा खण्डेन्दुधारिणी २१० ॥ ४६ ।

कमला लक्ष्मीरूपा । **कल्पलतिका** कल्पलतात्मिका सर्वकामपूरणीत्यर्थः । **काली** कालिकारूपा । **कलुषवैरिणी** पातकनाशिनी । **कमनीयजला** निर्मलपानीया । जह्नुं[1] प्रतीपं शान्तनुं कामितवतीति **कम्रा कामुकेत्यर्थः** । तथा चाऽऽदिपर्वहरिवंशयोः—

पतिलोभेन यं गङ्गा पतित्वेऽभिससार ह ।
त्वामहं कामये राजन् कुरुश्रेष्ठ भजस्व माम् ॥
भविष्यामि महीपाल महिषी ते वशाऽनुगा ॥ इति ।

कपर्दिसुकपर्दगा शिवस्य शोभनजटाजूटगा ॥ ४४ ।

कालकूटं समुद्रमथनोत्पन्नं विषं तस्य कालाऽज्ञानयोर्वा नाशिनी **कालकूटप्रशमनी** । कदम्बकुसुमानि प्रियाणि यस्याः सा **कदम्बकुसुमप्रिया** २०० ।

गङ्गानामसहस्रेऽस्मिन् द्वितीये विवृते शते ।
यददृष्टमभूदत्र तद्विश्वेशे समर्पितम् ॥ २ ।

कलिन्दः पर्वतः, तद्भवा **कालिन्दी** यमुना तद्रूपा । केलिः क्रीडा तया तस्यां वा मनोहरा **केलिललिता** । कला मधुरा ये कल्लोलास्तद्ध्वनयः मनोहरास्तरङ्गा वा तेषां माला वर्तन्ते यस्यां सा **कलकल्लोलमालिका** ॥ ४५ ।

क्रान्तं व्याप्तमतिक्रान्तं वा लोकत्रयं यया सा **क्रान्तलोकत्रया** । स भूमिं सर्वतः स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलमिति श्रुतेः । कण्डति कुट्टत्यविद्यां तत्कार्यमिति **कण्डूः** कण्डूतिरूपा वा । कण्डूः मृकण्डूः । भीमो भीमसेन इतिवत् । तस्य तनयस्य मार्कण्डेयस्य वत्सला स्निग्धा । खड्गोऽस्याऽस्तीति **खड्गिनी** । खड्गधारा इवाऽऽभादीप्तिर्यस्याः सा **खड्गधाराभा** । पापकाननच्छेत्रीत्वान्निर्मलत्वसादृश्याद्वा । खे आकाशे गच्छतीति **खगा** । **खण्डेन्दुधारिणी** शकलचन्द्रधारिणी । चन्द्रकलावतंसेत्यर्थः २१० ॥ ४६ ।

कमला, कल्पलतिका, काली, कलुषवैरिणी, कमनीयजला, कम्रा, कपर्दिसुकपर्दगा ॥ ४४ ।

कालकूटप्रशमनी, कदंबकुसुमप्रिया, (२००) कालिन्दी, केलिललिता, कलकल्लोलमालिका, क्रान्तलोकत्रया, कण्डू, कण्डूतनयवत्सला, खड्गिनी, खड्गधाराभा, खगा, खंडेन्दुधारिणी (२१०) ॥ ४५-४६ ।

---

१. जह्नुं पितृत्वेन प्रतीपं श्वशुरत्वेन शान्तनुं पतित्वेनेत्यर्थः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खे खेलगामिनी खस्था खण्डेन्दुतिलकप्रिया ।
खेचरी खेचरीवन्द्या ख्यातिः ख्यातिप्रदायिनी ॥ ४७ ।
खण्डितप्रणताघौघा खलबुद्धिविनाशिनी ।
खातैनःकन्दसन्दोहा २२० खड्गखट्वाङ्गखेटिनी ॥ ४८ ।
खरसन्तापशमनी खनिः पीयूषपाथसाम् ।
गङ्गा गन्धवती गौरी गन्धर्वनगरप्रिया ॥ ४९ ।

खे आकाशे खेलने लीलया गच्छतीति खे खेलगामिनी । खे आकाशे ब्रह्मणि वा । कं ब्रह्म खं ब्रह्मेति श्रुतेः । खे तिष्ठतीति खस्था । खण्डेन्दुतिलकप्रिया विश्वेश्वरकान्ता । खे आखाशे चरतीति खेचरी । खेचरीणां सिद्धाङ्गनानां वन्द्या खेचरीवन्द्या । ख्यातिः प्रख्यातिः प्रतिष्ठेति यावत् । 'आख्यात्यन्यथाख्यात्यसत्ख्यात्यात्मख्यात्यनिर्वचनीयख्यात्येतत् पञ्चकख्यातिर्वा तद्रूपा' । ख्यातिप्रदायिनी प्रतिष्ठाकारिणी ॥ ४७ ।

खण्डितो दूरीकृतः प्रणतानां भक्तानामघौघो यया सा खण्डितप्रणताघौघा । खलानां बुद्धिः खलरूपा वा बुद्धिस्तस्या विनाशिनी । खाता उत्खाता उत्पाटिता इति यावत् । एनसां पापानां कन्दसन्दोहा मूलकारणनिकरा यया सा खातैनःकन्दसन्दोहा २२० । खड्गश्च खट्वाङ्गश्च लोहादिनिर्मितद्वादशाङ्गं खट्वायाः खुराऽऽकारो वाऽस्त्रविशेषः खेटं चायुधविशेषश्चर्म वा एतानि वर्तन्ते यस्याः, सा खड्गखट्वाङ्गखेटिनी । खड्गखट्वाङ्गाभ्यां खेटितुं क्रीडितुं शीलं यस्याः सा इति वा । अस्मिन्पक्षे डकारस्य टकार आर्षः ॥ ४८ ।

खरसन्तापशमनी तीक्ष्णसन्तापनाशिनी । दुष्टजन्यसन्तापशमनीति वा । खनिः पीयूषपाथसाममृततुल्योदकानाममृतोदकयोर्वा खनिः आकरस्थानम् । गङ्गा निरञ्जनचित्स्वरूपा ।

योऽसौ निरञ्जनो देवश्चित्स्वरूपो जनार्दनः ।
स एव द्रवरूपेण गङ्गाम्भो नाऽत्र संशयः ॥ इति स्मृतेः ।

स्वर्गाद् गङ्गां भगीरथः पृथ्वीमानीतवानिति वा गङ्गा । तदुक्तं भविष्ये—

यस्माद् भगीरथो देवि स्वर्गाद् गां त्वामिहाऽनयत् ।
अतस्त्वं मुनिभिः सर्वैर्गङ्गेति परकीर्त्यसे ॥ इति ।

खे खेलगामिनी, खस्था, खंडेन्दुतिलकप्रिया, खेचरी, खेचरीवंद्या, ख्याति, ख्यातिप्रदायिनी ॥ ४७ ।

खंडितप्रणताघौघा, खलबुद्धिविनाशिनी, खातैनः कंदसंदोहा, (२२०) खड्गखट्वांगखेटिनी ॥ ४८ ।

खरसंतापशमनी, खनिः पीयूषपाथसाम्, गंगा, गन्धवती, गौरी, गन्धर्वनगरप्रिया ॥ ४९ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गम्भीराङ्गी गुणमयी गतातङ्का २३० गतिप्रिया ।
गणनाथाम्बिका गीता गद्यपद्यपरिष्टुता ॥ ५० ॥
गान्धारी गर्भशमनी गतिभ्रष्टगतिप्रदा ।
गोमती गुह्यविद्या गौ२४०र्गोप्त्री गगनगामिनी ॥ ५१ ॥

गन्धवती पृथ्वीरूपा । गौरी पार्वती नदीप्रभेदो वा जलेशमहिषी वा । नदीभेदेऽपि गौरी स्याज्जलेशस्याऽपि योषितीति वचनात् । गन्धर्वनगरे तत्तुल्ये प्रपञ्चे प्रियाऽभीष्टा सारभूतेत्यर्थः । तदुक्तम्—

असारे खलु संसारे सारमेतच्चतुष्टयम् ।
काश्यां वासः सतां सङ्गो गङ्गाम्भः शिवपूजनम् ॥ इति ।

गन्धर्वाणां यानि नगराणि तत्स्थानां जनानां वा प्रिया गन्धर्वनगरप्रिया ॥ ४९ ।

गम्भीरमनवगाह्यमङ्गं स्वरूपं यस्याः सा **गम्भीराङ्गी** । गुणमयी त्रिगुणात्मिका माया सर्वज्ञत्वादिगुणा वा । गत आतङ्कः सन्त्रासो यस्याः, यस्याः सकाशादिति वा सा **गतातङ्का** २३० । गतेर्ज्ञानात्मनो विश्वनाथस्य प्रिया **गतिप्रिया** । गतिर्ज्ञानं प्रियं यस्याः सा गतिप्रियेति वा । चतुर्विधा भजन्ते मामित्युपक्रम्य ज्ञानी त्वात्मैव मे मत-मिति भगवदुक्तेः । गम्यत इति गतिः फलं सा चासौ प्रिया परमप्रेमास्पदा चेति **गतिप्रिया** इति वा । गतिप्रदेति क्वचित् । गणनाथो गणेशः, तस्याऽम्बिका माता **गणनाथाम्बिका** । गीयत इति **गीता** ।

वेदे रामायणे चैव पुराणे भारते तथा ।
आदौ मध्ये तथा चाऽन्ते हरिः सर्वत्र गीयते ॥ इतिं स्मृतेः ।

भगवद्गीतारूपा वा । गद्यपद्यैश्च परिष्टुता **गद्यपद्यपरिष्टुता** ॥ ५० ।

गां धारयतीति **गान्धारी** । विभक्तेरलोप आर्षः । वाराही शक्तिरित्यर्थः । धृत-राष्ट्रपत्नीरूपा वा । **गर्भशमनी** जन्मशातनी । गतिभ्रष्टानां पतितानामपि **गतिप्रदा** । तदुक्तं भविष्ये—

माताऽपि संत्यजेत्पुत्रं ब्रह्महत्यादिकारणम् ।
त्वं पुनर्गर्हितं मग्नं पुनीषे दीनवत्सला ॥ इति ।

गतिभ्रष्टा गतिप्रदेति पाठे सविशेषणमेकं नाम । गतेर्देवत्वगतेर्भ्रष्टा मानुषत्वं प्राप्तेत्यर्थः । तथा चोक्तम्—ब्रह्महस्तात्परिभ्रष्टेति । हरिवंशे च—

इयमप्यायतापाङ्गी गङ्गा सर्वाङ्गशोभना ।
रूपिणी वै सरिच्छ्रेष्ठा तत्र त्वामुपयास्यति ॥ इति ।

गंभीरांगी, गुणमयी, गतातंका (२३०) गतिप्रिया, गणनाथांबिका, गीता, गद्य-पद्यपरिष्टुता ॥ ५० ।

गांधारी, गर्भशमनी, गतिभ्रष्टगतिप्रदा, गोमती, गुह्यविद्या, गो, (२४०) गोप्त्री, गगनगामिनी ॥ ५१ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोत्रप्रवर्धिनी गुण्या गुणातीता गुणाग्रणीः ।
गुहाम्बिका गिरिसुता गोविन्दांघ्रिसमुद्भवा ॥ ५२ ।
गुणनीयचरित्रा २५० च गायत्री गिरिशप्रिया ।
गूढरूपा गुणवती गुर्वी गौरववर्धिनी ॥ ५३ ।
ग्रहपीडाहरा गुन्द्रा गरघ्नी गानवत्सला २६० ।
घर्महन्त्री घृतवती घृततुष्टिप्रदायिनी ॥ ५४ ।

स्वयं गतिभ्रष्टाऽन्येषां गतिप्रदेति विरुद्धाऽलङ्कारोऽयम् । द्वारकास्था नैमिषारण्यस्था वा नदी गोमती तद्रूपा । गुह्यविद्या ब्रह्मविद्या । गोः पृथ्वीरूपा गोरूपा वेदरूपा वाणीरूपा वा स्वर्गरूपा वा २४० । **गोप्त्री** पालयित्री । गगने गन्तुं शीलं यस्याः सा **गगनगामिनी** आकाशगामिनी इत्यर्थः ॥ ५१ ।

गां त्रायत इति गोत्रो भगीरथः पर्वतवृन्दं वा तेन प्रवर्धितुं शीलं यस्याः सा **गोत्रप्रवर्धिनी** । भक्तानां गोत्रप्रवर्तयित्रीति वा । गुणेभ्यो हिता **गुण्या** । गुणानतीता गुणातीता निर्गुणेत्यर्थः । **गुणाग्रणीः** गुणानां नियन्त्री । गुहाम्बिका कार्तिकेयजननी । गिरिसुता गिरेर्हिमवतः प्रसूता पार्वतीरूपा वा । गोविन्दस्यांघ्रेः समुद्भवो यस्याः सा गोविन्दांघ्रिसमुद्भवा ॥ ५२ ।

गुणनीयानि गणनयोग्यानि चरित्राणि यस्याः सा **गुणनीयचरित्रा** च २५० । गातारं त्रायते इति **गायत्री** । गिरिशस्येश्वरस्य प्रिया **गिरिशप्रिया** । गूढं प्रच्छन्नं रूपं यस्याः सा **गूढरूपा** । गुणाः शान्त्यादयः तद्वती **गुणवती** । **गुर्वी** महती । गौरवं महत्त्वं वर्धयितुं गौरवेण वा वर्धितुं शीलं यस्याः सा **गौरववर्धिनी** ॥ ५३ ।

ग्रहपीडां हरतीति **ग्रहपीडाहरा** । **गुन्द्रा** मुस्ता तदात्मिका, सर्वात्मकत्वात् । गूहति स्वरूपमिति गुरविद्या तां द्राति कुत्सते नाशयतीत्येतत्, गुन्द्रा इति वा । विभक्तेः श्रवणमार्षम् । **गरघ्नी** विषघ्नी । **गानवत्सला** गीतप्रियेत्यर्थः २६० । **घर्महन्त्री** सन्तापहन्त्री । घृतं घृततुल्यमुदकमस्ति यस्याः सा घृतवती । घृतेन या तुष्टिस्तां प्रदातुं शीलं यस्याः सा घृततुष्टिप्रदायिनी ॥ ५४ ।

गोत्रप्रवर्धिनी, गुण्या, गुणातीता, गुणाग्रणी, गुहांबिका, गिरिसुता, गोविन्दाङ्घ्रिसमुद्भवा ॥ ५२ ।

गुणनीयचरित्रा, (२५०) गायत्री, गिरिशप्रिया, गूढ़रूपा, गुणवती, गुर्वी, गौरववर्धिनी ॥ ५३ ।

ग्रहपीडाहरा, गुन्द्रा, गरघ्नी, गानवत्सला, (२६०) घर्महंत्री, घृतवती, घृततुष्टिप्रदायिनी ॥ ५४ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घण्टारवप्रिया घोराऽघौघविध्वंसकारिणी ।
घ्राणतुष्टिकरी घोषा घनानन्दा घनप्रिया ।। ५५ ।
घातुका २७० घूर्णितजला घृष्टपातकसन्ततिः ।
घटकोटिप्रपीतापा घटिताशेषमङ्गला ।। ५६ ।
घृणावती घृणनिधिर्घस्मरा घूकनादिनी ।
घुसृणा पिञ्जरतनुर्घर्घरा २८० घर्घरस्वना ।। ५७ ।

घण्टारवः प्रियो यस्याः सा **घण्टारवप्रिया**। घोरो योऽघौघस्तद्विध्वंसकारिणी **घोराघौघविध्वंसकारिणी**। घ्राणेन्द्रियस्य घ्राणमात्रेण वा तुष्टिकरी **घ्राणतुष्टिकरी**। **घोषा** नितम्बपादभूषणकाञ्च्यः किङ्किण्यश्च ता वर्तन्ते, यस्याः सा घोषा। अर्श-आदित्वादच्। तरङ्गस्रोतोभ्यां घोषयतीति आभीर पल्लीरूपा वेति घोषा। घन एकरसो य आनन्दस्तत्स्वरूपा। स्त्रोत्वं छान्दसं बहुव्रीहिर्वा। राहोः शिर इतिवद् भेदोपचारात्। **'स एष परमानन्दः'** इति श्रुतेः। अत एव **घनप्रिया** निबिडप्रिया। परमप्रेमास्पदत्वात्। घनानां मेघानां वा प्रिया घनप्रिया। आकाशगङ्गारूपेण तेषां प्लावनात् ॥ ५५ ।

सर्वेषां पापानामज्ञानं तत्कार्यस्य वा **घातुका** नाशिका २७०। घूर्णितानि जलानि यस्याः सा घूर्णितजला। घृष्टा घूर्णिता पातकसन्ततिर्यया सा घृष्टपातकसन्ततिः। घटकोटिभिः प्रपीता आपो यस्याः सा **घटकोटिप्रपीतापा**। घटितं सम्पादितमशेषमङ्गलं यया सा घटिताशेषमङ्गला ॥ ५६ ।

घृणावती दयावती। घृणनिधिर्दयासमुद्रः। ह्रस्व आर्षः। **घस्मरा** सर्वभक्षणशीला। **स कालकाल** इति श्रुतेः, कालमूषिकभक्षक इति स्मृतेश्च। घूकानां बकानां नादो विद्यते यस्याः सा **घूकनादिनी**। घुसृणेन देवाङ्गनानामङ्गरागेणापिञ्जरा ईषत्पीतवर्णा तनुर्यस्याः सा **घुसृणा** पिञ्जरतनुः। घर्घरनामा ह्रदविशेषस्तत्स्वरूपिणी २८०। घर्घर इति ध्वनिर्यस्याः घर्घरनाम्ना ह्रदेन तत्सङ्गमनिमित्तेन स्वनो यस्या इति वा सा **घर्घरस्वना** ॥ ५७ ।

घंटारवप्रिया, घोराघौघविध्वंसकारिणी, घ्राणतुष्टिकरी, घोषा, घनानन्दा, घनप्रिया ॥ ५५ ।

घातुका (२७०), घूर्णितजला, घृष्टपातकसंतति, घटकोटिप्रपीतापा, घटिताशेषमंगला ॥ ५६ ।

घृणावती, घृणनिधि, घस्मरा, घूकनादिनी, घुसृणापिंजरतनु, घर्घरा (२८०), घर्घरस्वना ॥ ५७ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चन्द्रिका चन्द्रकान्ताम्बुश्चञ्चदापा चलद्युतिः ।
चिन्मयी चितिरूपा च चन्द्रायुतशतानना ॥ ५८ ॥
चाम्पेयलोचना चारु २९०श्चार्वङ्गी चारुगामिनी ।
चार्या चारित्रनिलया चित्रकृच्चित्ररूपिणी ॥ ५९ ॥
चम्पूश्चन्दनशुच्यम्बुश्चर्चनीयचिरस्थिरा ३०० ।
चारुचम्पकमालाढ्या चमितशेषदुष्कृता ॥ ६० ॥

चन्द्रिका ज्योत्स्नारूपा । चन्द्रकान्तमणिरिवाम्बु यस्याः सा चन्द्रकान्ताम्बुः । चञ्चत्यः स्फुरन्त्यः आपो यस्याः सा **चञ्चदापा** । चञ्चलापेति क्वचित्पाठः । तत्रापि स एवार्थः । चलन्ती स्फुरन्ती द्युतिर्यस्याः सा **चलद्युतिः** । **चिन्मयी** ज्ञानस्वरूपा । सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्मेति श्रुतेः । चितिरूपा ज्ञानस्वभावा । चन्द्राणामयुतशतमिवाऽऽननं यस्याः सा **चन्द्रायुतशतानना** । चन्द्रायुतसिताननेति क्वचित्पाठस्तत्र सितत्वं शुभ्रत्वम् ॥ ५८ ॥

चाम्पेयपुष्पे इव लोचने यस्याः सा **चाम्पेयलोचना** । **चारुर्**मनोहरा ॥ २९० ॥ चारूण्यङ्गानि यस्याः सा **चार्वङ्गी** । चारु यथा स्यात्तथा गन्तुं शीलं यस्याः सा चारुगामिनी । चरणं चारो ज्ञानं तदर्हति चार्यते ज्ञायते वा चार्या । उपनिषत्-प्रतिपाद्येत्यर्थः । चरित्राण्येव चारित्राणि तेषां निलया सच्चरित्राश्रयेत्यर्थः । चित्रं विचित्रं जगत्करोति चित्रकृत् । तदुक्तं वसिष्ठे—कश्च व्योमनि चित्रकृदिति । चित्रं विचित्रं रूपमस्या अस्तीति **चित्ररूपिणी** ॥ ५९ ।

चम्पूश्चम्पकवृक्षस्तत्पुष्पं वा तद्रूपा । गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयत इति वचनात्तद्रूपा वा चम्पूः । चन्दनमिव शुचि सुगन्धि निर्मलं चाम्बु यस्याः, सा चन्दनशुच्यम्बुः । चर्चनीया विचारणीया चिन्तनीयेति यावत् । चिरकालं व्याप्य स्थिरा चिरस्थिरा । अनादिरित्यर्थः ३०० ।

गङ्गानामसहस्रेऽस्मिन् तृतीये विवृते शते ।
यददृष्टमभूदत्र तद्विश्वेशे समर्पितम् ॥ १ ।

चारुचम्पकपुष्पाणां या मालास्ताभिराढ्या व्याप्ता **चारुचम्पकमालाढ्या** । चमितानि सन्त्रासं प्रापितानि भक्षितानीत्येतदशेषदुष्कृतानि यया सा **चमिताशेष-दुष्कृता** । चमु अदने इति धातुः ॥ ६० ।

चन्द्रिका, चन्द्रकान्ताम्बु, चंचदापा, चलद्युति, चिन्मयी, चितिरूपा, चन्द्रायुत-शतानना ॥ ५८ ।

चंपेयलोचना, चारु (२९०), चार्वंगी, चारुगामिनी, चार्या, चारित्रनिलया, चित्रकृत्, चित्ररूपिणी ॥ ५९ ।

चंपू, चन्दनशुच्यम्बु, चर्चनीया, चिरस्थिरा (३००), चारुचम्पकमालाढ्या, चमिताशेषदुष्कृता ॥ ६० ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चिदाकाशवहा चिन्त्या चञ्चच्चामरवीजिता ।
चोरिताशेषवृजिना चरिताशेषमण्डला ।। ६१ ।
छेदिताखिलपापौघा छद्मघ्नी ३१० छलहारिणी ।
छन्नत्रिविष्टपतला छोटिताशेषबन्धना ।। ६२ ।
छुरितामृतधारौघा छिन्नैनाश्छन्दगामिनी ।
छत्रीकृतमरालौघा छटीकृतनिजामृता ।। ६३ ।

चिदेवाकाशश्चिदाकाशस्तं वहति प्रापयतीति **चिदाकाशवहा** । **चिन्त्या** ध्येया ।

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ।
केयूरवान्मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः ।। इति स्मृतेः ।

चञ्चत्स्फुरत्स्वप्रकाशमित्यर्थः । अत्रायं पुरुषः स्वयंज्योतिरिति श्रुतेः । **चामरवीजिता** वालव्यजनैः सेवितेत्यर्थः । चोरितान्यशेषवृजिनानि यया सा **चोरिताशेषवृजिना** । चरितान्यशेषमण्डलानि ब्रह्मलोकादिस्थानानि यया सा **चरिताशेषमण्डला** ।। ६१ ।

छेदिताखिलपापौघा छेदिताः छिन्ना अखिलाः पापौघा यया सा **छेदिताखिल-पापौघा** । छद्मघ्नी छद्म कपटमज्ञानं रोगविशेषं वा हन्तीति छद्मघ्नी ३१० । छलं कपटं छलयतीति छलमज्ञानं वा तद्धारिणी । छन्नं व्याप्तं त्रिविष्टपतलं स्वर्गभुवनं यया सा, छन्नत्रिविष्टपतला । छोटितानि दूरीकृतानि अशेषबन्धनानि यया सा छोटिताशेषबन्धना । छेदितेति क्वचित्पाठः ।। ६२ ।

छुरितः क्षरितोऽमृतधाराणां जलप्रवाहाणामोघो यया सा **छुरितामृतधारौघा** । छिन्नानि च्छेदितानि एनांसि वृजिनानि यया सा **छिन्नैनाः** । छातैना इति क्वचित्पाठः । **छन्दगामिनी** स्वच्छन्दचारिणी स्वतन्त्रेत्यर्थः । छत्रीकृतो मरालौघो हंससमूहो यया सा **छत्रीकृतमरालौघा** । छटीकृतानि छटां प्रापितानि प्रकटीकृतान्येतद् निजामृतानि स्वरूपभूतानि जलानि यया सा **छटीकृतनिजामृता** ।। ६३ ।

चिदाकाशवहा, चिन्त्या, चंचच्चामरवीजिता, चोरिताशेषवृजिना, चरिता-शेषमंडला ।। ६१ ।

छेदिताखिलपापौघा, छद्मघ्नी (३१०), छलहारिणी, छन्नत्रिविष्टपतला, छोटिता-शेषबन्धना ।। ६२ ।

छुरितामृतधारौघा, छिन्नैना, छन्दगामिनी, छत्रीकृतमरालौघा, छटीकृत-निजामृता ।। ६३ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाह्नवी ज्या ३२० जगन्माता जप्या जङ्घालवीचिका ।
जया जनार्दनप्रीता जुषणीया जगद्धिता ॥ ६४ ।

जीवनं जीवनप्राणा जग३३० ज्ज्येष्ठा जगन्मयी ।
जीवजीवातुलतिका जन्मिजन्मनिर्बर्हिणी ॥ ६५ ।

जह्नोरपत्यं **जाह्नवी** । तथा च हरिवंशे—

राजर्षिणा ततः पीतां गङ्गां दृष्ट्वा महर्षयः ।
उपनिन्युर्महाभागां दुहितृत्वेन जाह्नवीम् ॥ इति ।

ज्या धनुर्गुण इव प्रतीयमाना । तदुक्तम्—

लोलार्ककेशवौ कोटी गङ्गा ज्या नगरं धनुः ।
कलिर्लक्ष्यः शरो विष्णुः शिवो धन्वी पुनातु माम् ॥ इति ३२० ।

जगतां माता **जगन्माता** विश्वयोनिरित्यर्थः । **जप्या** जपविषया । जंघाला दीर्घा वीच्यस्तरङ्गा यस्याः सा **जंघालवीचिका** । जयति सर्वोत्कर्षेण वर्तत इति **जया** पार्वती सखिरूपा वा । तथा चात्रैव देवीवाक्यम्—सुलक्षणा शुभाचारा सखी मेऽस्तु शुभोदया, यथा जया च विजयेत्यादि । जनार्दनस्य प्रीता जनार्दनो वा प्रीतो यस्याः सा **जनार्दनप्रीता** । **जुषणीया** श्रीरुद्रादिभिः सेवनीया । तथा च भागवते—यत्पादनिःसृतसरित्प्रवरोदकेन तीर्थेन मूर्ध्न्यधिकृतेन शिवः शिवोऽभूदिति । जगतां हिता **जगद्धिता** ॥ ६४ ।

जीवनं जीवनहेतुः । जीवनेन जलेन प्राणिनां प्राणा यस्याः सा जीवनेन प्राणयति चेष्टयतीति वा **जीवनप्राणा** ब्रह्मस्वरूपा । को ह्येवान्यात्कः प्राण्याद्यदेष आकाश आनन्दो न स्यादिति श्रुतेः । **जगदिति** । परस्मात्पुरुषान्न भिन्नमिदं जगदित्यभिधीयते ब्रह्म । ब्रह्मैवेदं विश्वमिदं वरिष्ठं पुरुष एवेदं विश्वमित्यादि श्रुतेः । विश्वं विष्णुरिति स्मृतेश्च । यद्वा गच्छति सर्वं व्याप्नोतीति जगत् । नित्यः सर्वगतः स्थाणुरिति स्मृतेः।३३०। **ज्येष्ठा** आद्या मूलकारणत्वात् । **जगन्मयी** जगत्स्वरूपा स्वाध्यस्तविश्वेत्यर्थः । **जीवजीवातुलतिका** जीवानां प्राणिनां जीवनौषधरूपा । यदाहाऽमरः—जीवातुर्जीवनौषधमिति । **जन्मिजन्मनिर्बर्हिणी** जन्मिनामुत्पत्तिमतामुत्पत्तिनिराकर्त्री ॥ ६५ ।

जाह्नवी, ज्या (३२०), जगन्माता, जप्या, जंघालवीचिका, जया, जनार्दनप्रीता, जुषणीया, जगद्धिता ॥ ६४ ।

जीवन, जीवनप्राणा, जगत् (३३०), ज्येष्ठा, जगन्मयी, जीवजीवातुलतिका, जन्मिजन्मनिर्बर्हिणी ॥ ६५ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाड्यविध्वंसनकरी जगद्योनिर्जलाविला ।
जगदानन्दजननी जलजा जलजेक्षणा ३४० ॥ ६६ ।
जनलोचनपीयूषा जटातटविहारिणी ।
जयन्ती जञ्जपूकघ्नी जनितज्ञानविग्रहा ॥ ६७ ।
झल्लरीवाद्यकुशला झलज्झालजलावृता ।
झिण्टीशवन्द्या झाङ्कारकारिणी झर्झरावती ३५० ॥ ६८ ।

जाड्यस्याऽज्ञानस्य सन्तापस्य वा विध्वंसनं कर्तुं शीलं यस्याः सा **जाड्यविध्वंसनकरी** । जगद्योनिर्जगतां कारणम् । जलानां जडानामज्ञानामित्येतत्, आविलेव कलुषितेव आवृतेवेति वा जलाविला । अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तव इति भगवदुक्तेः । जलैर्घर्मद्रवरूपैराविला व्याप्ता इति वा । जगदानन्दजननीदर्शनादिना जनमात्रस्य सुखकर्त्री । जलमिव जलं विष्णुः । सलिल एको द्रष्टेति श्रुतेः । तस्माज्जाता जलजा । जलजेक्षणा पयोजेक्षणा ३४० ॥ ६६ ।

जनलोचनपीयूषा प्राणिमात्रनेत्रामृता । जटातटविहारिणी ईश्वरस्य जटाप्रदेशविहारिणी । गङ्गाजलप्लावितकेशदेशेति स्मृतेः । **जयन्ती** जयनशीला । शक्रात्मजा ऋषभकान्तारूपा वा । अथाह भगवान् ऋषभदेव इत्यारभ्य जयन्त्यामिन्द्रदत्तायामिति भागवतोक्तेः । जञ्जपूकानि पापानि हन्तीति **जञ्जपूकघ्नी** । जन्तुपापघ्नीति क्वचित्पाठः । उत्पादितं ज्ञानशरीरं यया सा **जनितज्ञानविग्रहा** ॥ ६७ ।

झल्लरीवाद्यकुशला झल्लर्या वाद्ये अभिज्ञा । झलज्झालशब्दो जलशब्दानुकरणे झाङ्कारझर्झराशब्दावपि । झलज्झालशब्दायमानेन जलेनावृता । झिण्टीशेन महादेवस्य मूर्तिविशेषेण श्रीकण्ठादिन्यासप्रसिद्धेन वन्द्या झिण्टीशवन्द्या । तथा चोक्तं शारदातिलके—

श्रीकण्ठानन्तसूक्ष्माश्च त्रिमूर्तिरमरेश्वरः ।
अधीशो भारभूतिश्चातिथीशः स्थाणुको हरः ॥
झिण्टीशो भौतिकः सद्योजातश्चानुग्रहेश्वरः ।
अक्रूरश्च महासेनः षोडशेश्वरमूर्तयः ॥ इति ।

झाङ्कारशब्दं कर्तुं शीलं यस्याः सा **झाङ्कारकारिणी** । झर्झरा इति जलशब्दो वर्तते यस्याः सा **झर्झरावती** ३५० ॥ ६८ ।

जाड्यविध्वंसनकरी, जगद्योनि, जलाविला, जगदानन्दजननी, जलजा, जलजेक्षणा (३४०) ॥ ६६ ।

जनलोचनपीयूषा, जटातटविहारिणी, जयन्ती, जंजपूकघ्नी, जनितज्ञानविग्रहा ॥ ६७ ।

झल्लरीवाद्यकुशला, झलज्झालजलावृता, झिण्टीशवन्द्या, झाङ्कारकारिणी, झर्झरावती (३५०) ॥ ६८ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टीकिताशेषपाताल टङ्किकैनोद्रिपाटने ।
टङ्कारनृत्यत्कल्लोला टीकनीयमहातटा ॥ ६९ ॥

डम्बरप्रवहा डीनराजहंसकुलाकुला ।
डमड्डुमरुहस्ता च डामरोक्तमहाण्डका ॥ ७० ॥

ढौकिताशेषनिर्वाणा ढक्कानादचलज्जला ३६० ।
ढुण्ढिविघ्नेशजननी ढणड्ढुणितपातका ॥ ७१ ॥

टीकितं सेवितमशेषं पातालं भोगवतीरूपेण यया सा **टीकिताशेषपाताला**। एनांस्येवाऽद्रयस्तेषां पाटने विदारणे टङ्किका पाषाणविदारणशस्त्रविशेषरूपिणी। टङ्कारशब्दो यथा स्यात्, टङ्कारशब्देन वा नृत्यन्तः कल्लोला यस्यां सा **टङ्कारनृत्यत्कल्लोला**। टीकनीयः स्वतरङ्गैः सेवनीयो महांस्तटो यस्याः सा **टीकनीयमहातटा** ॥ ६९ ।

डम्बरमाडम्बरं वेगवत्तरमित्येतद् यथा स्यात्तथा प्रवहतीति **डम्बरप्रवहा**। डीनान्युड्डीयमानानि यानि राजहंसानां कुलानि तैराकुला व्याप्ता **डीनराजहंसकुलाकुला**। डमदिति शब्दायमानो डमरुर्हस्ते यस्याः सा **डमड्डुमरुहस्ता च**। डामरो डामरकल्पो नवाक्षरदेवीमन्त्रस्य प्रतिपादको ग्रन्थो महाराष्ट्रेषु प्रसिद्धस्तत्रोक्तं प्रतिपादितं महाण्डकं मन्त्रमयं महच्छरीरं यस्याः सा **डामरोक्तमहाण्डका**। गङ्गागौर्योरभेदात् ॥ ७० ।

ढौकितं भक्तेभ्यः सेवितं प्रापितमिति यावत्। अशेषनिर्वाणं सालोक्य-सामीप्य-सारूप्य-सार्ष्टि-सायुज्यलक्षणं पञ्चविधं कैवल्यं यया सा **ढौकिताशेषनिर्वाणा**। ढक्का वाद्यविशेषस्तस्या नादवन्नादवन्ति चलन्ति जलानि यस्याः सा **ढक्कानादचलज्जला** ३६०। ढुण्ढिश्चासौ विघ्नेशश्चेति तथा तस्य जननी **ढुण्ढिविघ्नेशजननी** ढणदिति शब्दानुकरणे। ढणशब्दो यथा स्यात्तथा ढुणितानि दूरीकृतानि पातकानि यया सा **ढणड्ढुणितपातका** ॥ ७१ ।

टीकिताशेषपाताला, टङ्किकैनोद्रिपाटने, टङ्कारनृत्यत्कल्लोला, टीकनीयमहातटा ॥ ६९ ।

डम्बरप्रवहा, डीनराजहंसकुलाकुला, डमड्डुमरुहस्ता, डामरोक्तमहाण्डका ॥७० ।

ढौकिताशेषनिर्वाणा, ढक्कानादचलज्जला (३६०) ढुण्ढिविघ्नेशजननी, ढणड्ढुणितपातका ॥ ७१ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तर्पणी तीर्थतीर्था च त्रिपथा त्रिदशेश्वरी ।
त्रिलोकगोप्त्री तोयेशो त्रैलोक्यपरिवन्दिता ॥ ७२ ।

तापत्रितयसंहर्त्री ३७० तेजोबलविवर्धिनी ।
त्रिलक्षा तारणी तारा तारापतिकरार्चिता ॥ ७३ ।

त्रैलोक्यपावनी पुण्या तुष्टिदा तुष्टिरूपिणी ।
तृष्णाच्छेत्री तीर्थमाता ३८० त्रिविक्रमपदोद्भवा ॥ ७४ ।

सर्वांस्तर्पयतीति तृप्यन्त्यस्यामनयेति वा सर्वे इति **तर्पणी**। तीर्थानां निपानागमर्षिजुष्टजलगुरूणां तीर्थं तीर्थत्वं यया सा **तीर्थतीर्था**। यदाहाऽमरः—"निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे जले गुराविति ।" त्रिपथा त्रिषु लोकेषु पन्था मार्गो यस्याः सा **त्रिपथा**। त्रिदशानां देवानामीश्वरी **त्रिदशेश्वरी**। त्रिदिवेश्वरीति क्वचित्पाठः। त्रिलोकं गोपायतीति **त्रिलोकगोप्त्री**। तोयेशी जलानां तदधिष्ठातॄणामीश्वरी। त्रिलोकस्थैः जनैः परितः अभिवादिता स्तुता वेति **त्रैलोक्यपरिवन्दिता** ॥ ७२ ।

अध्यात्मिकाऽधिदैविकाऽधिभौतिकतापत्रयं संहरतीति **तापत्रितयसंहर्त्री** ३७० । तेजोबले विवर्धयितुं शीलं यस्याः सा **तेजोबलविवर्धिनी**। त्रिषु लोकेषु लक्ष्यते रूपं यस्या इति **त्रिलक्षा**। तारयति सर्वांस्तरन्त्यनयाऽस्यामिति वा सर्वे इति **तारणी**। तारयति भक्तानिति **तारा** प्रणवरूपा नक्षत्ररूपा वा। अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरीतथेत्यत्रोक्ततारारूपा वा। **तारापतिकरार्चिता** चन्द्ररश्मिभिः पूजिता। अथवा तारापतये चन्द्राय शिरोधारणेन कं सुखं रातीति तारापतिकरो रुद्रस्तेनाऽर्चिता ॥ ७३ ।

त्रैलोक्यपावनीपुण्या त्रैलोक्यं पावयन्तीति त्रैलोक्यपावन्यो गौतमीप्रमुखा नद्यस्तासां मध्ये पुण्या पुण्यातिशयहेतुः। **तुष्टिदा** सुखदा। **तुष्टिरूपिणी** तुष्टिस्वरूपा। तृष्णा इच्छा तस्याश्छेत्री **तृष्णाछेत्री**। तीर्थमात्राणां सप्तानां वा ब्रह्मपुत्राणां माता तीर्थमाता ३८०। **त्रिविक्रमपदोद्भवा** त्रिविक्रमो वामनस्तस्य पादावनेजनाज्जाता ॥ ७४ ।

तर्पणी, तीर्थतीर्था, त्रिपथा, त्रिदशेश्वरी, त्रिलोकगोप्त्री, तोयेशी, त्रैलोक्यपरिवन्दिता ॥ ७२ ।

तापत्त्रितयसंहर्त्री (३७०), तेजोबलविवर्धिनी, त्रिलक्षा, तारणी, तारा, तारापतिकरार्चिता ॥ ७३ ।

त्रैलोक्यपावनी, पुण्या, तुष्टिदा, तुष्टिरूपिणी, तृष्णाच्छेत्री, तीर्थमाता (३८०), त्रिविक्रमपदोद्भवा ॥ ७४ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तपोमयो तपोरूपा तपस्तोमफलप्रदा ।
त्रैलोक्यव्यापिनी तृप्तिस्तृप्तिकृत्तत्त्वरूपिणो ।। ७५ ।
त्रैलोक्यसुन्दरी तुर्या ३९० तुर्यातीतपदप्रदा ।
त्रैलोक्यलक्ष्मोस्त्रिपदी तथ्या तिमिरचन्द्रिका ।। ७६ ।
तेजोगर्भा तपःसारा त्रिपुरारिशिरोगृहा ।
त्रयीस्वरूपिणी तन्वी ४०० तपनाङ्गजभीतिनुत् ।। ७७ ।

तप इन्द्रियमनसामैकाग्र्यम् । मनसश्चेन्द्रियाणां च ऐकाग्र्यं परमं तप इत्युक्तेस्तन्मयी **तपोमयी** आलोचनमयीत्यर्थः । तपोरूपा कृच्छ्रचान्द्रायणादिरूपा । **तपस्तोमफलप्रदा** तपोनिकरफलदात्री । त्रैलोक्यं व्याप्तुं शीलं यस्याः सा **त्रैलोक्यव्यापिनी** । सर्वव्यापिकेत्यर्थः । तृप्तिस्तृप्तिस्वरूपा । तृप्तिं सुखं करोतीति तृप्तिकृत् । तत्त्वरूपिणो चतुर्विंशतितत्त्वरूपिणी परमार्थरूपिणीति वा ।। ७५ ।

त्रैलोक्ये सुन्दरं सौन्दर्यं यस्या सा **त्रैलोक्यसुन्दरो** । त्रैलोक्ये मनोहरेति वा । तुर्याऽवस्थात्रयातीता । तदुक्तम्—

अहंभावानहंभावौ त्यक्त्वा सदसतो तथा ।
यदसक्तं समं स्वच्छं स्थितं तत्तूर्यमुच्यते ।। इति ३९० ।

तुर्यस्यापि प्रतियोग्यधीनरूप्यत्वेन कल्पितत्वात्तदतीतमतिक्रान्तं यत्पदं परंब्रह्म तत्प्रदातोति **तुर्यातीतपदप्रदा** । **त्रैलोक्यलक्ष्मी** स्त्रैलोक्यसम्पत् । त्रैलोक्यस्य लक्ष्मीर्यस्याः सकाशादिति वा । त्रीणि पदान्यस्या इति **त्रिपदी** । त्रोणिपदा विचक्रम इति श्रुतेः । त्रिषु लोकेषु पदं स्थानमस्या इति वा । **तथ्या** कालत्रयाबाध्या । सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्मेति श्रुतेः । तीर्थेषु साध्वो तीर्थ्या इति वा पाठः । तिमिरमन्धकारं तत्र चन्द्रिका कौमुदीवोज्ज्वला, तिमिरमज्ञानं तस्य चन्द्रिका नाशिकेत्यर्थ इति वा ।। ७६ ।

ईश्वरस्य तेजो वीर्यमग्निना त्यक्तं गर्भे यस्याः सा **तेजोगर्भा** । तपसां सारो बलं यस्याः सा **तपःसारा** । तपसां सारभूतेति वा । त्रिपुरारेः शिरो गृहं यस्याः सा **त्रिपुरारिशिरोगृहा** । **त्रयीस्वरूपिणो** वेदत्रयरूपा । तनोति प्रपञ्चजातमिति **तन्वी** । उकारश्छान्दसः सुन्दरीति वा ४०० ।

गङ्गानामसहस्रेऽस्मिश्चतुर्थे विवृते शते ।
यददृष्टमभूदत्र तद्विश्वेशे समर्पितम् ।। ४ ।

तपनाङ्गजस्य यमस्य भीतिमपनुदतीति **तपनाङ्गजभीतिनुत्** ।। ७७ ।

तपोमयी, तपोरूपा, तपस्तोमफलप्रदा, त्रैलोक्यव्यापिनो, तृप्ति, तृप्तिकृत्, तत्त्वरूपिणी ।। ७५ ।

त्रैलोक्यसुन्दरी, तुर्या (३९०), तुर्यातीतफलप्रदा, त्रैलोक्यलक्ष्मी, त्रिपदी, तथ्या, तिमिरचंद्रिका ।। ७६ ।

तेजोगर्भा, तपःसारा, त्रिपुरारिशिरोगृहा, त्रयीस्वरूपिणी, तन्वी (४००), तपनाङ्गजभीतिनुत् ।। ७७ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तरिस्तरणिजामित्रं तर्पिताशेषपूर्वजा ।
तुलाविरहिता तीव्रपापतूलतनूनपात् ।। ७८ ।
दारिद्र्यदमनी दक्षा दुष्प्रेक्षा दिव्यमण्डना ४१० ।
दीक्षावती दुरावाप्या द्राक्षामधुरवारिभृत् ।। ७९ ।
दर्शितानेककुतुका दुष्टदुर्जयदुःखहृत् ।
दैन्यहृद्दुरितघ्नी च दानवारिपदाब्जजा ।। ८० ।

तरत्यज्ञानं तत्कार्यमिति **तरिः**, भक्तानां संसारार्णवनौस्वरूपेति वा । **तरणिजो** यमस्तस्याऽमित्रं तदधिकारखण्डनात् । तरणिजाया यमुनाया मित्रमिति वा । तर्पितास्तृप्तिं प्रापिता अशेषा भगीरथस्य पूर्वजाः प्रपितामहा अशेषाणां जनानां पूर्वजाः पितृपितामहाद्यायेति वा सा **तर्पिताशेषपूर्वजा** । **तुलाविरहिता** परिमाणमतीतेत्यर्थः । तीव्रपापान्येव तूलानि तेषु तनूनपाद् वह्निस्तद्दाहिकेत्यर्थः ।। ७८ ।

दारिद्र्यदमनी दौर्गत्यच्छेत्री । **दक्षा** भुक्तिमुक्तिप्रदाने चतुरा । **दक्षभार्या** प्रसूतिरूपा वा । 'प्रसूतिं मानवीं दक्ष उपयेमे ह्यजात्मजः' इति भागवतोक्तेः । दीक्षेति क्वचित् । **दुष्प्रेक्षा** भक्तिमन्तरेण द्रष्टुमशक्या । दिव्यमलौकिकं मण्डनं भूषणं यस्याः सा **दिव्यमण्डना** ४१० । वैदिकी तान्त्रिकी च दीक्षा वर्तते यस्याः सा **दीक्षावती** । **दुरावाप्या** ज्ञानमन्तरेण प्राप्तुमशक्या । तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनायेति श्रुतेः । द्राक्षा मृद्वीका तद्वन्मधुरं वारि बिभर्ति इति **द्राक्षामधुरवारिभृत्** ।। ७९ ।

दर्शितं प्रकाशितं मायाविनवे गन्धर्वनगरादिकमनेकं नानाविधं कुतुकं कौतुकं जगल्लक्षणमाश्चर्यं यया सा **दर्शितानेककुतुका** । दुष्टानि यानि दुर्जयदुःखानि तानि हरतीति तथा । दुष्टदुर्जयदुःखकृदिति पाठे दुष्टानां दुर्जयदुःखकृदित्यर्थः । दैन्यं कार्पण्यं हरतीति **दैन्यहृत्** । दैत्यहृदिति पाठे दैत्यान् हरति नाशयतीत्यर्थः । दुरितानि हन्तीति **दुरितघ्नी च** । दनोरपत्यानि दानवास्तेषामरेर्विष्णोः पदाब्जात्पादपद्माज्जाता **दानवारिपदाब्जजा** । विष्णुपादार्घ्यसम्भूतेति स्मृतेः ।। ८० ।

तरि, तरणिजामित्र, तर्पिताशेषपूर्वजा, तुलाविरहिता, तीव्रपापतूलतनूनपात् ।। ७८ ।

दारिद्र्यदमनी, दक्षा, दुष्प्रेक्षा, दिव्यमण्डना (४१०), दीक्षावती, दुरावाप्या, द्राक्षामधुरवारिभृत् ।। ७९ ।

दर्शितानेककुतुका, दुष्टदुर्जयदुःखहृत्, दैन्यहृत्, दुरितघ्नी, दानवारिपदाब्जजा ।। ८० ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दन्दशूकविषघ्नी च दारितार्घौघसन्ततिः ४२० ।
द्रुता देवद्रुमच्छन्ना दुर्वाराघविघातिनी ॥ ८१ ॥
दमग्राह्या देवमाता देवलोकप्रदर्शिनी ।
देवदेवप्रिया देवी दिक्पालपददायिनी ॥ ८२ ॥
दीर्घायुःकारिणी ४३०दीर्घा दोग्ध्री दूषणवर्जिता ।
दुग्धाम्बुवाहिनी दोह्या दिव्या दिव्यगतिप्रदा ॥ ८३ ॥

दन्दशूकाः सर्पास्तेषां विषं हन्तीति **दन्दशूकविषघ्नी च** । दारिता विदारिताऽघौघसन्ततिः पापपरम्परा यया सा **दारिताघौघसन्ततिः** ४२० । द्रवतीति **द्रुता** वेगगामिनीति यावत् । मन्दारपारिजातसन्तानकल्पवृक्षहरिचन्दनैर्व्याप्ता **देवद्रुमच्छन्ना** । दुर्वाराणि प्रायश्चित्तादिभिश्छेत्तुमशक्यान्यघानि पापानि विघातयितुं शीलं यस्याः सा **दुर्वाराघविघातिनी** । उक्तं च—

प्रायश्चित्तं यदि स्यात्तव जलकणिका ब्रह्महत्यादिपापे ।
कस्त्वां स्तोतुं समर्थस्त्रिजगदघहरे देवि गङ्गे नमस्ते ॥ इति ॥८१ ।

दमग्राह्या दमादिसाधनचतुष्टयैः प्राप्या । तथा च श्रुतिः—"शान्तोदान्त-उपरतस्तितिक्षुः समाहितो भूत्वात्मन्येवात्मानं पश्येत्" इति । **देवमाता** अदितिस्वरूपा । **देवलोकप्रदर्शिनी** ब्रह्मलोकादिप्रापयित्री । देवः स्वप्रकाशः स एव लोक्यते इति लोकस्तत्प्रदर्शिनीति वा । **देवदेवप्रिया** विश्वेश्वरवल्लभा । **देवी** द्योतमाना स्वप्रकाशेत्यर्थः । **दिक्पालपददायिनी** इन्द्रादिपदप्रापयित्रीत्यर्थः ॥ ८२ ।

दीर्घमायुः कर्तुं शीलं यस्या सा **दीर्घायुःकारिणी** । **दीर्घा**ऽनवच्छिन्ना । **दोग्ध्री** धर्मार्थकाममोक्षप्रसवा । **दूषणवर्जिता** अविद्या तत्कार्यरहितेत्यर्थः । दुग्धमेवाऽम्बु वहितुं शीलं यस्याः सा तथा । **गोरूपधरा** पृथ्वीस्वरूपेत्यर्थः । सा हि दुग्धाम्बुना चतुःसमुद्रं पूरितवती । अत एव कालिदासोऽपि कथयति स्म—"**पयोधरीभूतचतुःसमुद्रां जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम्**" (र० वं० २।३) इति ।

धमार्थकाममोक्षान् दुह्यतीति **दोह्या** । धर्मार्थकाममोक्षा यस्या प्राप्यन्त इत्यर्थः । दिवि भवा **दिव्या**ऽलौकिकीत्यर्थः । **दिव्यगतिप्रदा**ऽलौकिकपदप्रदेत्यर्थः ॥ ८३ ।

दन्दशूकविषघ्नी, दारिताघौघसन्तति (४२०), द्रुता, देवद्रुमच्छन्ना, दुर्वाराघविघातिनी ॥ ८१ ।

दमग्राह्या, देवमाता, देवलोकप्रदर्शनी, देवदेवप्रिया, देवी, दिक्पालपददायिनी ॥ ८२ ।

दीर्घायुःकारिणी (४३०) दीर्घा, दोग्ध्री, दूषणवर्जिता, दुग्धाम्बुवाहिनी, दोह्या, दिव्या, दिव्यगतिप्रदा ॥ ८३ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्युनदी दीनशरणं देहिदेहनिवारिणी ४४० ।
द्राघीयसी दाघहन्त्री दितपातकसन्ततिः ।। ८४ ।
दूरदेशान्तरचरी दुर्गमा देववल्लभा ।
दुर्वृत्तघ्नी दुर्विगाह्या दयाधारा दयावती ४५० ।। ८५ ।
दुरासदा दानशीला द्राविणी द्रुहिणस्तुता ।
दैत्यदानवसंशुद्धिकर्त्री दुर्बुद्धिहारिणी ।। ८६ ।

दिवो नदी **द्युनदी** स्वर्गङ्गेत्यर्थः । **दीनशरणं** दीनानां महापातकिनामपि शरणं रक्षित्री । तदुक्तम्—माताऽपि सन्त्जेत्पुत्रं ब्रह्महत्यादिकारणम् । त्वं पुनर्गर्हितं मग्नं पुनीषे दीनवत्सले ।। इति । **देहिदेहनिवारिणी** अविद्यानिरासेन जीवोपाधिभूतदेहद्वया-विनाशिनीत्यर्थः ४४० । **द्राघीयसी** दीर्घा महत्तरेति यावदित्यर्थः । महान्तं विभुमात्मानं महतो महीयानित्यादिश्रुतेः । **दाघहन्त्री** सन्तापच्छेत्री । दिता खण्डिता पातकसन्ततिः पापपरम्परा यया सा **दितपातकसन्ततिः** ।। ८४ ।

दूरदेशान्तरे चर्तुं शीलं यस्याः सा **दूरदेशान्तरचरी** । दूरदेशस्थिताऽपि स्वस्मर्तॄणां सर्वपापनाशिनीत्यर्थः । श्रद्धाभक्तिध्यानयमाद्यैर्विना न गम्यत इति **दुर्गमा** । तदुक्तम्—"श्रद्धाभक्तिध्यानयमाद्यैर्यतमानैर्ज्ञातुं शक्यो देव इहैवाशु य ईशः दुर्विज्ञेयो जन्मशतैश्चापि विना तैस्तं संसारध्वान्तं विनाशं हरिमीडे" इति । देवाना-मभीष्टा **देववल्लभा** । देवः श्रीविष्णुः श्रीरुद्रो वा वल्लभो यस्याः सा तथेति वा । दुर्वृत्तान् दुष्टान् पाप्मनो वा हन्तीति **दुर्वृत्तघ्नी** । **दुर्विगाह्या**ऽनुग्रहमन्तरेण प्राप्तुम-शक्या । दुर्विगाहेति पाठेऽपि स एवार्थः । **दयाधारा** कृपाधिकरणम् । **दयावती** कृपायुक्ता ४५० ।। ८५ ।

दुर्दुःखेनासदनमासादनं ज्ञानं प्राप्तिर्वा यस्याः सा । दाने पुरुषार्थचतुष्टयप्रदाने शीलं स्वभावो यस्याः सा **दानशीला** । द्रवितुं निरन्तरं गन्तुं पापसंघान् वा द्रावयितुं शीलं स्वभावं यस्याः सा **द्राविणी** । द्रुहिणेन ब्रह्मणा स्तुता **द्रुहिणस्तुता** । दैत्यदानवयोः संशुद्धिं कर्तुं शीलं यस्याः सा **दैत्यदानवसंशुद्धिकर्त्री** । दुष्टां बुद्धिं हर्तुं शीलं यस्याः सा **दुर्बुद्धिहारिणी** ।। ८६ ।

द्युनदी, दीनशरण, देहिदेहनिवारिणी (४४०), द्राघीयसी, दाघहंत्री, दितपातक-सन्तति ।। ८४ ।

दूरदेशान्तरचरी, दुर्गमा, देववल्लभा, दुर्वृत्तघ्नी, दुर्विगाह्या, दयाधारा, दया-वती (४५०) ।। ८५ ।

दुरासदा, दानशीला, द्राविणी, द्रुहिणस्तुता, दैत्यदानवसंशुद्धिकर्त्री, दुर्बुद्धि-हारिणी ।। ८६ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

दानसारा दयासारा द्यावाभूमिविगाहिनी ।
दृष्टादृष्टफलप्राप्ति४६०र्देवतावृन्दवन्दिता ॥ ८७ ॥

दीर्घव्रता दीर्घदृष्टिर्दीप्ततोया दुरालभा ।
दण्डयित्री दण्डनीतिर्दुष्टदण्डधरार्चिता ॥ ८८ ॥

दुरोदरघ्नी दावार्चि४७०र्द्रवद्द्रव्यैकशेवधिः ।
दीनसन्तापशमनी दात्री दवथुवैरिणी ॥ ८९ ॥

सारणं सारः दानेन सारो ज्ञानं यस्याः सा **दानसारा** "तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति यज्ञेन दानेन तपसाऽनाशकेन" इति श्रुतेः दयया सारो ज्ञानं यस्याः सा **दयासारा** ।

द्यां दिवं भूमिं च विगाहितुं शीलं यस्याः सा **द्यावाभूमिविगाहिनी** । दृष्टं फलमैहिकसुखादि अदृष्टं फलं पारलौकिकं स्वर्गमोक्षादि तयोः प्राप्तिर्यस्याः सा **दृष्टादृष्टफलप्राप्तिः** ४६० । देवसमूहैरभिवन्दिता स्तुत्या वा **देवतावृन्दवन्दिता** । सर्वदेवैर्नमस्कृता इति वाराहोक्तेः ॥ ८७ ॥

दीर्घं महद् व्रतं संकल्पः सृष्ट्यादिलक्षणं यस्याः सा **दीर्घव्रता** । दीर्घा दृष्टिर्ज्ञानं यस्याः सा दीर्घदृष्टिरपरिच्छिन्नज्ञानस्वरूपा वा । दीप्तं शंखकुन्देन्दुवदुज्ज्वलं तोयं यस्याः सा **दीप्ततोया** । तदुक्तं वाराहे—"**शंखकुन्देन्दुधवलेति**" । दुःखेनालभनं प्राप्तिर्यस्याः सा **दुरालभा** । दुर्लभेत्यर्थः । **दण्डयित्री** दण्डकर्त्री कारयित्रीति वा । दण्डनीतिरर्थशास्त्ररूपा । दुष्टेषु पापेषु दण्डं धारयन्ति ये ते **दुष्टदण्डधरा** राजादयस्तैरर्चिता ॥ ८८ ॥

दुरोदरं द्यूतादिदुर्वृत्तं तद्धन्तुं शीलं यस्याः सा **दुरोदरघ्नी** । दावो वनाग्निस्तद्वदर्चिर्दीप्तिर्यस्याः सा **दावार्चिः** ४७० । द्रवतीति द्रवत् स्वकार्यं व्याप्नुवत् परिपूर्णमित्यर्थः । द्रव्याणां सर्वपदार्थानामेकः शेवधिर्मुख्यनिधिर्मुख्य आश्रय इत्यर्थः । **द्रव्यैकशेवधिः** । दीनानां संसाराङ्गारे पापच्यमानानां सन्तापानाध्यात्मिकादितापान् शमयितुं शीलं यस्याः सा **दीनसन्तापशमनी** । दीनसन्तापशमनेति पाठेऽपि स एवार्थः । **दात्री** पुरुषार्थचतुष्टयदानकर्त्री । दवथुवैरिणी संसारभयजन्यकम्पनाशिनी ॥ ८९ ॥

दानसारा, दयासारा, द्यावाभूमिविगाहिनी, दृष्टादृष्टफलप्राप्ति, (४६०) देवतावृन्दवन्दिता ॥ ८७ ॥

दीर्घव्रता, दीर्घदृष्टि, दीप्ततोया, दुरालभा, दण्डयित्री, दंडनीति, दुष्टदण्डधरार्चिता ॥ ८८ ॥

दुरोदरघ्नी, दावार्चि (४७०), द्रवद्द्रव्यैकशेवधि, दीनसंतापशमनी, दात्री, दवथुवैरिणी ॥ ८९ ॥

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दरीविदारणपरा दान्ता दान्तजनप्रिया ।
दारिताद्रितटा दुर्गा ४८० दुर्गारण्यप्रचारिणी ॥ ९० ॥
धर्मद्रवा धर्मधुरा धेनुर्धीरा धृतिर्ध्रुवा ।
धेनुदानफलस्पर्शा धर्मकामार्थमोक्षदा ॥ ९१ ॥
धर्मोर्मिवाहिनी ४९० धुर्या धात्री धात्रीविभूषणम् ।
धर्मिणी धर्मशीला च धन्विकोटिकृतावना ॥ ९२ ॥

दरी विदारणं परं तात्पर्यं यस्याः सा **दरीविदारणपरा** । तदुक्तं वाराहे—"विन्ध्यपाषाणभेदिनीति" । **दान्ता** वशीकृतेन्द्रिया । दान्तजनानां प्रिया दान्तजना वा प्रिया यस्याः सा दान्तजनप्रिया । दारितमद्रितटं यया सा **दारिताद्रितटा** । दुर्गनामानं दैत्यं हतवतीति **दुर्गा** गौरी । तथा चात्रैव देवीवाक्यम्—"**अद्यप्रभृति मे नाम दुर्गेति ख्यातिमेष्यति**" । दुर्गदैत्यस्य समरे घातनादतिदुर्गमादिति । तद्रूपा । "**गङ्गागौर्यन्तरं यच्च यो ब्रूते मूढधीस्तु सः**" इति भविष्ये दर्शनात् ४८० । दुर्गारण्ये दुर्गमे वने दुर्गासुर एव वाऽरण्यं उभयत्र प्रचर्तुं प्रहर्तुं च शीलं यस्याः सा **दुर्गारण्यप्रचारिणी** ॥ ९० ।

धर्मरूपो द्रवो यस्या धर्मात्मकद्रवस्वरूपा वा सा **धर्मद्रवा** । तथा च वाराहे—"**धर्मस्तु द्रवरूपेण ब्रह्मणा निर्मितः पुरा, तद्वै गङ्गेति विख्याता**" इति । **धर्मधुरा** धर्मश्रेष्ठा सर्वोत्कृष्टधर्मरूपेत्यर्थः । अयन्तु परमो धर्मो यद्योगेनात्मदर्शनमिति याज्ञवल्क्योक्तेः । **धेनुः** कामधेनुस्वरूपा । **धेनूनामस्मि कामधुगिति** भगवद्वचनात् । **धीरा** विदुषी । यद्वा धियमद्वैतबुद्धिं राति ददातीति **धीरा** ॥ उक्तं च "**ईश्वरानुग्रहादेव पुंसामद्वैतवासनेति**" । **धृतिर्धारिका** । स सेतुर्विधृतिर्लोकानामसंभेदायेति श्रुतेः । **ध्रुवा** नित्या निश्चला वा । एतदप्रमेयं ध्रुवमिति श्रुतेः । कूटस्थमचलं ध्रुवमिति स्मृतेश्च । धेनुदानस्य फलं यस्मात्तादृशः स्पर्शो धेनुदानस्य यत्फलं तेन वा स्पर्शो यस्याः सा **धेनुदानफलस्पर्शा** । धेनुदानध्रुवस्पर्शेति क्वचित् पाठः । **धर्मकामार्थमोक्षदा** पुरुषार्थचतुष्टयदात्री ॥ ९१ ।

धर्मरूपा एवोर्मयस्तद्वाहिनी **धर्मोर्मिवाहिनी** ॥ ४९० । **धुर्या** श्रेष्ठा । **धात्री** जनयित्री पोष्ट्री पृथ्वीति वा । धात्री विभूषणं पृथ्व्या अलङ्करणम् । धात्रीविभूषणेति क्वचित्पाठः । **धर्मिणी** जगदुत्पत्त्यादिधर्मवती पुण्यवतीति वा । धर्मे धर्म एव वा शीलं स्वभावो यस्याः सा **धर्मशीला** । धन्विनां कोटिभिः कृतमवनं यस्यास्तत्कोटीनां वा कृतमवनं यया सा **धन्विकोटिकृतावना** । तथा चोक्तम्—

दरीविदारणपरा, दान्ता, दान्तजनप्रिया, दारिताद्रितटा, दुर्गा (४८०) दुर्गारण्यप्रचारिणी ॥ ९० ।

धर्मद्रवा, धर्मधुरा, धेनु, धीरा, धृति, ध्रुवा, धेनुदानफलस्पर्शा, धर्मकामार्थमोक्षदा ॥ ९१ ।

धर्मोर्मिवाहिनी, (४९०) धुर्या, धात्री, धात्रीविभूषणा, धर्मिणी, धर्मशीला, धन्विकोटिकृतावना ॥ ९२ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्यातृपापहरा ध्येया धावनी धूतकल्मषा ५०० ।
धर्मधारा धर्मसारा धनदा धनवर्धिनी ॥ ९३ ।
धर्माधर्मगुणच्छेत्री धत्तूरकुसुमप्रिया ।
धर्मेशी धर्मशास्त्रज्ञा धनधान्यसमृद्धिकृत् ॥ ९४ ।
धर्मलभ्या ५१० धर्मजला धर्मप्रसवधर्मिणी ।
ध्यानगम्यस्वरूपा च धरणी धातृपूजिता ॥ ९५ ।

धनुषां कोटिभिर्ब्रह्म तदर्धं जाह्नवीजलम् ।
तदर्धं च हरेर्नाम तदर्धं स्नानदानयोः । इति ॥ ९२ ।

ध्यातुः पुरुषस्य पापहरा ध्यातृपापहरा । धातृ[1]पापहरेति क्वचित्पाठः । ध्येया बुभुक्षुभिर्मुमुक्षुभिश्च चिन्त्या । धावनी पवित्रकारिणी गमनशीला वा । धूतं विधूतं नाशितमित्येतत् कल्मषं यया सा धूतकल्मषा ॥ ५०० ।

गङ्गानामसहस्रेऽस्मिन् पञ्चमे विवृते शते ।
यददृष्टमभूदत्र तद्विश्वेशे समर्पितम् ॥ ५ ।

धर्मरूपाधारा । धर्मं ध्रियत इति वा धर्मधारा । धर्माणां मध्ये सारा श्रेष्ठा धर्मसारा । धनं ददातीति धनदा । धनवर्धिनी धनवृद्धिकर्त्री । धृतिवर्धिनीति क्वचित्पाठः ॥ ९३ ।

धर्माधर्मलक्षणौ यौ गुणौ तयोश्छेत्री भेत्री धर्माधर्मगुणच्छेत्री । धत्तूरकुसुमानि प्रियाणि यस्याः सा धत्तूरकुसुमप्रिया । धर्मेशी तन्नियन्त्री । धर्मशास्त्रं जानातीति धर्मशास्त्राद्वा ज्ञानं बोधनं यस्याः सा धर्मशास्त्रज्ञा । धनं च धान्यं च धनधान्ये तयोर्वृद्धिकर्त्री धनधान्यसमृद्धिकृत् ॥ ९४ ।

धर्मलभ्या योगैकप्राप्या ५१० । धर्मरूपं जलं यस्याः सा धर्मजला । धर्मस्य प्रसवो यस्याः सा धर्मप्रसवा । धर्मो देयत्वेन वर्तते यस्याः सा धर्मिणी । सा च सा चेति सविशेषणं नामैकम् । धर्मस्य प्रसवलक्षणो धर्मो वर्तते यस्याः सा धर्मप्रसवधर्मिणीति वा ।

ध्यातृपापहरा, ध्येया, धावनी, धूतकल्मषा (५००) धर्मधारा, धर्मसारा, धनदा, धनवर्धिनी ॥ ९३ ।

धर्माधर्मगुणच्छेत्री, धत्तूरकुसुमप्रिया, धर्मेशी, धर्मशास्त्रज्ञा, धनधान्यसमृद्धिकृत् ॥ ९४ ।

धर्मलभ्या (५१०), धर्मजला, धर्मप्रसवधर्मिणी, ध्यानगम्यस्वरूपा, धरणी धातृपूजिता ॥ ९५ ।

---

१. ध्यातवापहरेति पुस्तकान्तरे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धूर्धूर्जटिजटासंस्था धन्या धीर्धारणावती ५२० ।
नन्दा निर्वाणजननी नन्दिनी नुन्नपातका ॥ ९६ ।
निषिद्धविघ्ननिचया निजानन्दप्रकाशिनी ।
नभोऽङ्गणचरी नूतिर्नम्या नारायणी ५३० नुता ॥ ९७ ।
निर्मला निर्मलाख्याना नाशिनी तापसम्पदाम् ।
नियता नित्यसुखदा नानाश्चर्यमहानिधिः ॥ ९८ ।

ध्यानेन गम्यं स्वरूपं यस्या सा ध्यानगम्यस्वरूपा च । धरणी पृथ्वीरूपा । धातृपूजिता ब्रह्मार्चिता ॥ ९५ ।

धूनयति पापानि—इति धूः । धूर्जटेरीश्वरस्य जटायां संस्था संस्थितिर्यस्याः सा धूर्जटिजटासंस्था । धन्या कृतार्था धनाय हिता धन्येति वा । धीः सामान्यात्मिका बुद्धिः । धारणावती तद्विशेषरूपा ५२० नन्दा तन्नाम्नी । तदुक्तम्—'नन्दा चालकनन्दा चेति' । निर्वाणजननी कैवल्यसम्पादयित्री । नन्दयितुं शीलं यस्याः सा नन्दिनी । वसिष्ठधेनुरूपा वा । नुन्नानि दूरीकृतानि पातकानि यया सा नुन्नपातका ॥ ९६ ।

निषिद्धा उत्सादिता विघ्ननिचया यया सा निषिद्धविघ्ननिचया । निजानन्दो ब्रह्मानन्दस्तं प्रकाशयितुं शीलं यस्याः सा निजानन्दप्रकाशिनी । नभोऽङ्गणचरी आकाशमार्गवहा । नूतिः स्तुतिस्वरूपा । दीर्घत्वमार्षम् । नम्या वन्द्या । नारायणी नारायणशक्तिः ५३० । नुता ब्रह्मेन्द्रादिभिः स्तुता ॥ ९७ ।

निर्गतः संसाररूपो मलो यस्याः सा निर्मला । निर्मलं संसारनाशकमाख्यानं कथनं यस्याः सा निर्मलाख्याना । नाशिनी तापसम्पदां तापपरम्पराणां विघातिनी । नियता एकरूपा । नितरां यता संयता इति वा । नित्यसुखं ब्रह्मसुखं ददातीति नित्यसुखदा । नानाश्चर्यमहानिधिः नानाश्चर्यं जगत्तस्य महानिधिः परममधिष्ठानमित्यर्थः ॥ ९८ ।

धूः, धूर्जटिजटासंस्था, धन्या, धी, धारणावती (५२०), नंदा, निर्वाणजननी, नन्दिनी, नुन्नपातका ॥ ९६ ।

निषिद्धविघ्ननिचया, निजानन्दप्रकाशिनी, नभोंऽगणचरी, नूति, नम्या, नारायणी (५३०), नुता ॥ ९७ ।

निर्मला, निर्मलाख्याना, नाशिनी तापसंपदाम्, नियता, नित्यसुखदा, नानाश्चर्यमहानिधि ॥ ९८ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नदीनदसरो माता नायिका ५४० नाकदीर्घिका ।
नष्टोद्धरणधीरा च नन्दनानन्ददायिनी ॥ ९९ ॥

निर्णिक्ताशेषभुवना निःसङ्गा निरुपद्रवा ।
निरालम्बा निष्प्रपञ्चा निर्णाशितमहामला ५५० ॥ १०० ॥

निर्मलज्ञानजननी निःशेषप्राणितापहृत् ।
नित्योत्सवा नित्यतृप्ता नमस्कार्या निरञ्जना ॥ १०१ ॥

नदी सरिद्रूपा । **नदसरो माता** नदानां सरसां च जनयित्री । **नायिका** श्रेष्ठा सर्वनियन्त्रीत्यर्थः । नृत्यकर्त्रीस्वरूपा वेत्यर्थः ५४० । **नाकदीर्घिका** स्वर्गवापीस्वरूपा । नष्टानां संसारे पतितानामुद्धरणे मोचने धीरा दक्षा **नष्टोद्धरणधीरा** च । नन्दयति समृद्धान् करोतीति **नन्दना** । नन्दमानन्दं समृद्धिं वा दातुं शीलं यस्याः सा **नन्ददायिनी** ॥ ९९ ।

निर्णिक्तं पवित्रीकृतमशेषं भुवनं यया सा **निर्णिक्ताशेषभुवना** । निर्गतः सङ्गः सम्बन्धो यस्याः सा **निसङ्गा** । "असङ्गो न हि सज्जत" इति श्रुतेः । निर्गत उपद्रव आध्यात्मिकादिलक्षणो यस्याः सा **निरुपद्रवा** । निर्गत आलम्ब आश्रयो यस्याः सा **निरालम्बा** । स्वमहिमप्रतिष्ठितेत्यर्थः । स भगवान् कस्मिन् प्रतिष्ठितः "स्वे महिम्नीति" श्रुतेः । **निष्प्रपञ्चा** प्रपञ्चाऽतीता । एकमेवाद्वितीयमिति श्रुतेः । निःशेषेण नाशितं महामलमज्ञानं यया सा **निर्णाशितमहामला** ५५० ॥ १०० ।

निर्मलज्ञानजननी ब्रह्मात्मैकत्वज्ञानोत्पादिनी । निःशेषा ये प्राणितापा आध्यात्मिकादिलक्षणास्तान् हरतीति **निःशेषप्राणितापहृत्** । नित्य उत्सवो यस्याः सा **नित्योत्सवा** । नित्येन सुखेन स्वरूपानन्देन नित्यं सर्वदा वा तृप्ता **नित्यतृप्ता** । **नमस्कार्या** नमस्कारविषया । अञ्जनमज्ञानं तद्रहिता **निरञ्जना** ॥ १०१ ।

नदीनदसरोमाता, नायिका, (५४०) नाकदीर्घिका, नष्टोद्धरणधीरा, नन्दनानन्ददायिनी ॥ ९९ ।

निर्णिक्ताशेषभुवना, निःसंगा, निरुपद्रवा, निरालम्बा, निष्प्रपञ्चा, निर्णाशितमहामला (५०) ॥ १०० ।

निर्मलज्ञानजननी, निःशेषप्राणितापहृत्, नित्योत्सवा, नित्यतृप्ता, नमस्कार्या, निरंजना ॥ १०१ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निष्ठावती निरातङ्का निर्लेपा निश्चलात्मिका५६० ।
निरवद्या निरीहा च नीललोहितमूर्धगा ॥ १०२ ।

नन्दिभृङ्गिगणस्तुत्या नागानन्दा नगात्मजा ।
निष्प्रत्यूहा नाकनदी निरयार्णवदीर्घनौः ५७० ॥ १०३ ।

पुण्यप्रदा पुण्यगर्भा पुण्या पुण्यतरङ्गिणी ।
पृथुः पृथुफला पूर्णा प्रणतार्तिप्रभञ्जिनी ॥ १०४ ।

निष्ठा काष्ठा नियम इति यावत् तद्वतीति **निष्ठावती**। निर्निर्गत आतङ्क आशङ्का यस्याः सा **निरातङ्का**। "तत्र को मोहः कः शोकः" इति श्रुतेः। निर्निर्गतः पापलेपो यस्याः सा **निर्लेपा**। शुद्धमपापविद्धमिति श्रुतेः। निश्चलः कूटस्थ आत्मा यस्याः सा **निश्चलात्मिका** ५६० । निर्गतमवद्यं दूषणं यस्याः सा **निरवद्या**। निरवद्यं निरञ्जनमिति श्रुतेः। **निरीहा** चेष्टारहिता। कूटस्थमचलं ध्रुवमिति स्मृतेः। च **नीललोहितमूर्धगा** विश्वेश्वरमस्तकगा ॥ १०२ ।

नन्दिभृङ्गिगणस्तुत्या नन्दी च भृङ्गी च गणाश्च नन्दिभृङ्गिगणास्तैस्तावेव वा गणौ ताभ्यां स्तुत्या स्तुत्यर्हा। **नागा** नागस्वरूपा। नन्दयतीति **नन्दा** समृद्धिदेत्यर्थः। **नगात्मजा** हिमवतो दुहिता। हिमाचलकृताश्रयेति स्मृतेः। **निष्प्रत्यूहा** विघ्नरहिता निर्गतः प्रत्यूहो यस्या इति वा। **नाकनदी** स्वर्गनदी। निरयार्णवस्य पापसमुद्रस्य **दीर्घा नौः** पारप्रापिका महती नौकेत्यर्थः ५७० ॥ १०३ ।

पुण्यं प्रददातीति **पुण्यप्रदा**। पुण्यं गर्भे यस्याः सा **पुण्यगर्भा**। **पुण्या** पुण्यस्वरूपा। तद्धेतुत्वात्। पुण्यरूपास्तरङ्गा विद्यन्ते यस्याः सा पुण्यनदीति वा **पुण्यतरङ्गिणी**। **पृथुर्**महती परिपूर्णेत्यर्थः। पृथ्ववताररूपा वा। पृथूनि महान्ति फलानि यस्याः सा **पृथुफला**। **पूर्णा** सर्वव्यापिका। अनवच्छिन्नप्रवाहरूपा वा। प्रणतानामार्ति प्रभञ्जितुं शीलं यस्याः सा **प्रणतार्तिप्रभञ्जिनी** ॥ १०४ ।

निष्ठावती, निरातङ्का, निर्लेपा, निश्चलात्मिका (५६०), निरवद्या, निरीहा, नीललोहितमूर्धगा ॥ १०२ ।

नन्दिभृङ्गिगणस्तुत्या, नागा, नन्दा, नगात्मजा, निष्प्रत्यूहा, नाकनदी, निरयार्णवदीर्घनौः (५७०) ॥ १०३ ।

पुण्यप्रदा, पुण्यगर्भा, पुण्या, पुण्यतरङ्गिणी, पृथुः, पृथुफला, पूर्णा, प्रणतार्तिप्रभञ्जनी ॥ १०४ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राणदा प्राणिजननी ५८० प्राणेशी प्राणरूपिणी ।
पद्मालया पराशक्तिः पुरजित्परमप्रिया ॥ १०५ ॥
परापरफलप्राप्तिः पावनी च पयस्विनी ।
परानन्दा ५९० प्रकृष्टार्था प्रतिष्ठा पालनी परा ॥ १०६ ॥
पुराणपठिता प्रीता प्रणवाक्षररूपिणी ।
पार्वती प्रेमसम्पन्ना पशुपाशविमोचनी ६०० ॥ १०७ ॥

प्राणान् ददाति भक्तानामभक्तानां खण्डयतीति वा प्राणदा। **प्राणिजननी** जन्तूत्पादिनी ५८०। **प्राणेशी** प्राणानां नियन्त्री। प्राणो हिरण्यगर्भः समष्टिरूपस्तद्रूपं वर्तते यस्याः सा **प्राणरूपिणी**। **"हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे"** (शु० य० २३।८२) इत्यादि श्रुतेः। पद्ममालयं यस्याः सा **पद्मालया** लक्ष्मीस्वरूपेत्यर्थः। **पराशक्तिः** मायाख्या तद्रूपा। **"परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते"** इति श्रुतेः। पुराजितः त्रिपुरारेः परमा चासौ प्रिया चेति **पुरजित्परमप्रिया** ॥ १०५ ॥

परा सर्वोत्कृष्टा। न तत्समश्चाप्यधिकश्च दृश्यत इति श्रुतेः। परफलस्य कैवल्यस्य प्राप्तिर्यस्याः सा **परफलप्राप्तिः**। त्वमापीता पीताम्बरपुरनिवासं वितरसीत्युक्तेः। **पावनी** सर्वपापशोधनी। **"प्रायश्चित्तं यदि स्यात्तव जलकणिका ब्रह्महत्यादिपापे"** इत्युक्तेः। च **पयस्विनी** प्रशस्तजलवती पुण्यतोयेत्यर्थः। पर आनन्दो यया परानन्दस्वरूपा वा सा **परानन्दा**। स्त्रीत्वमार्षम् ५९०। प्रकृष्टोऽर्थो यस्याः सा **प्रकृष्टार्था** प्रतितिष्ठत्यस्यां सर्वमिति **प्रतिष्ठा**। **पालनी** पालनकर्त्री। परापरस्वरूपा पूरयतीति वा परा ॥ १०६ ॥

पुराणेषु पठिता **पुराणपठिता** तत्प्रतिपाद्या। अथवा **पुराणः परमात्मा** तद्रूपत्वेन पठिता कथितेत्यर्थः। **प्रीता** सर्वेषां प्रियतमा। सर्वान् प्रीणातीति वा। **'प्रणवाक्षरं ॐकारस्तद्रूपिणी'**। **पार्वती** भवानीरूपा। **प्रेमसम्पन्ना** प्रीतिसंयुक्ता परप्रेमास्पदेत्यर्थः। पशूनां जीवानां पाशाश्चतुर्विंशतितत्त्वानि तेषां विमोचनी **पशुपाशविमोचनी**। विनाशिनीति पाठेऽपि स एवाऽर्थः ६००।

प्राणदा, प्राणिजननी (५८०), प्राणेशी, प्राणरूपिणी, पद्मालया, पराशक्ति, पुरजित्परमप्रिया ॥ १०५ ॥

परापरफलप्राप्ति, पावनी, पयस्विनी, परानन्दा (५९०), प्रकृष्टार्था, प्रतिष्ठा, पालनी, परा ॥ १०६ ॥

पुराणपठिता, प्रीता, प्रणवाक्षररूपिणी, पार्वती, प्रेमसम्पन्ना, पशुपाशविमोचनी (६००) ॥ १०७ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परमात्मस्वरूपा च परब्रह्मप्रकाशिनी ।
परमानन्दनिष्पन्दा प्रायश्चित्तस्वरूपिणी ।। १०८ ।

पानीयरूपनिर्वाणा परित्राणपरायणा ।
पापेन्धनदवज्वाला पापारिः पापनामनुत् ।। १०९ ।

परमैश्वर्यजननी ६१० प्रज्ञा प्राज्ञा परापरा ।
प्रत्यक्षलक्ष्मी पद्माक्षी परव्योमामृतस्रवा ।। ११० ।

गङ्गानामसहस्रेऽस्मिन् विवृते द्विस्त्रिके शते ।
यददृष्टमभूदत्र तद्विश्वेशे समर्पितम् ।। १०७ ।

परमात्मस्वरूपा च परब्रह्मैकलक्षणा च । **परब्रह्मप्रकाशिनी** परब्रह्मप्रकाशकारिणी । परमानन्दस्य नितरां स्पन्दश्चलनं तद्वस्त्वभिव्यक्तिर्यस्याः पुण्यकर्महेतुत्वात् सा **परमानन्दनिष्पन्दा** । **प्रायश्चित्तस्वरूपिणी** सर्वपापैकप्रायश्चित्तरूपा । प्रायश्चित्तन्तु तत्रैव यत्र गङ्गा न विद्यत इति स्मृतेः ।। १०८ ।

पानीयरूपनिर्वाणा जलस्वरूपकैवल्यमेव जलस्वरूपेण तिष्ठतीत्यर्थः । **परित्राणपरायणा** भक्तरक्षणे पराश्रयरूपा । पापान्येवेन्धनानि तेषु **दवज्वाला** वनाग्निशिखा । **पापारिः** पापानां शत्रुः । पापानि नाम्ना नुदतीति **पापनामनुत्** ।। १०९ ।

परमैश्वर्यजननी अणिमाद्यैश्वर्यदात्री ६१० । प्रकृष्टा ज्ञा प्रज्ञा स्वप्रकाशज्ञानैकस्वभावा । प्राज्ञा न विद्यते ज्ञो यस्याः साऽज्ञा प्रकृष्टाऽज्ञा प्राज्ञा विदुषीति वा । **परापरा** कार्यकारणरूपा । परावरा इति पाठे परे हिरण्यगर्भादयः अवरा निकृष्टा यस्याः सा तथा । प्रत्यक्षा लक्ष्मीरपरोक्षा निर्वाणश्रीर्यस्याः सा **प्रत्यक्षलक्ष्मीः** साक्षाल्लक्ष्मीस्वरूपेति वा । पद्मे पद्मपत्रे इवाऽक्षणी यस्याः सा **पद्माक्षी** । परव्योम परमाकाशरूपममृतं मरणरहितं स्वरूपं भक्तेभ्यः स्रवति प्रयच्छतीति **परव्योमामृतस्रवा** । आकाशस्तल्लिङ्गादिति न्यायात् ।। ११० ।

परमात्मस्वरूपा, परब्रह्मप्रकाशिनी, परमानन्दनिष्पन्दा, प्रायश्चित्तस्वरूपिणी ।। १०८ ।

पानीयरूपनिर्वाणा, परित्राणपरायणा, पापेन्धनदवज्वाला, पापारि, पापनामनुत् ।। १०९ ।

परमैश्वर्यजननी (६१०), प्रज्ञा, प्राज्ञा, परापरा, प्रत्यक्षलक्ष्मी, पद्माक्षी, परव्योमामृतस्रवा ।। ११० ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रसन्नरूपा प्रणिधिः पूता प्रत्यक्षदेवता ६२० ।
पिनाकिपरमप्रोता परमेष्ठिकमण्डलुः ।। १११ ।

पद्मनाभपदार्घ्येण प्रसूता पद्ममालिनी ।
पर्रधिदा पुष्टिकरी पथ्या पूर्तिः प्रभावती ।। ११२ ।

पुनाना ६३० पीतगर्भघ्नी पापपर्वतनाशिनी ।
फलिनी फलहस्ता च फुल्लाम्बुजविलोचना ।। ११३ ।

प्रसन्नमञ्जा न तत्कार्यरूपमलेन न संस्पृष्टं रूपं स्वरूपं यस्याः सा **प्रसन्नरूपा**। प्रकर्षेण निधीयते कार्यजातं प्रलयकालेऽस्यामिति **प्रणिधिः**। पुनातीति **पूता** परमपवित्र-स्वरूपा पवित्राणां पवित्रं य इति स्मृतेः। प्रत्यक्षदेवताऽपरोक्षप्रत्यक् **चैतन्यरूपा**। यत्साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्मेति श्रुतेः ६२०। **पिनाकिपरमप्रीता** विश्वेश्वरस्यात्यन्तवल्लभा। परमेष्ठिनो ब्रह्मणः कमण्डलुराश्रयत्वेन यस्याः सा **परमेष्ठिकमण्डलुः**। आदावादिपिता-महस्य नियमव्यापारपात्रे जलमित्युक्तेः ॥ १११ ।

पद्मनाभपदार्घ्येण प्रसूता विष्णुपादार्घ्येण सम्भूता। पश्चात् पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनम्। विष्णुपादार्घ्यसम्भूतेत्याद्युक्तेः। पद्मनाभपदाघातप्रसूतेति वा पाठः। पाद्मानां माला वर्तते यस्याः सा **पद्ममालिनी**। परामृद्धिं ददातीति **पर्रधिदा**। पुष्टिं करोतीति **पुष्टिकरी**। **पथ्या** संसाररोगस्य पथ्यस्वरूपा। पूर्तिः परिपूर्णरूपा उदरादि-भरणरूपा वा। **प्रभावती** प्रकाशवती ॥ ११२ ।

पुनातीति **पुनाना** ६३०। पीनानां पानकर्तॄणां पीता सतीति वा गर्भान् हन्तीति पीतगर्भघ्नी। पापान्येव पर्वतास्तान्नाशितुं शीलं यस्याः सा **पापपर्वतनाशिनी**। फलं देयत्वेन वर्तते यस्याः सा **फलिनी**। भक्तेभ्यो दातुं हस्ते इव यस्याः सा **फलहस्ता**। फलं मातुलिङ्गादिफलं हस्ते यस्या इति वा। च फुल्लाम्बुजानीव विकसितानि लोचनानि यस्याः सा **फुल्लाम्बुजविलोचना** ॥ ११३ ।

प्रसन्नरूपा, प्रणिधि, पूता, प्रत्यक्षदेवता (६२०), पिनाकिपरमप्रीता, परमेष्ठि-कमंडलु ॥ १११ ।

पद्मनाभपदार्घ्येण प्रसूता, पद्ममालिनी, पर्रधिदा, पुष्टिकरी, पथ्यापूर्ति, प्रभावती ॥ ११२ ।

पुनाना (६३०), पीतगर्भघ्नी, पापपर्वतनाशिनी, फलिनी, फलहस्ता, फुल्लाम्बुज-विलोचना ॥ ११३ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फालितैनोमहाक्षेत्रा फणिलोकविभूषणम् ।
फेनच्छलप्रणुन्नैनाः फुल्लकैरवगन्धिनी ॥ ११४ ॥

फेनिलाच्छाम्बुधाराभा-६४०फुडुच्चाटितपातका ।
फाणितस्वादुसलिला फाण्टपथ्यजलाविला ॥ ११५ ॥

विश्वमाता च विश्वेशी विश्वा विश्वेश्वरप्रिया ।
ब्रह्मण्या ब्रह्मकृद् ब्राह्मी६५०ब्रह्मिष्ठा विमलोदका ॥ ११६ ॥

फालितं खण्डितमेनसां पापानां महाक्षेत्रं यया सा **फालितैनोमहाक्षेत्रा** । भोगवतीरूपेण **सर्पलोकभूषणरूपा** फणिलोकविभूषणम् । फेनच्छलेन प्रणुन्नानि दूरीकृतानि एनांसि पापानि यया सा **फेनच्छलप्रणुन्नैनाः** । फुल्लं विकसितं यत्कैरवं कुमुदं तद्गन्ध इव गन्धः, तद्गन्धो वा वर्तते यस्याः सा **फुल्लकैरवगन्धिनी** ॥ ११४ ॥

फेनिलं फेनयुक्तं यदच्छमम्बु तस्य या धारा प्रवाहस्तेनाभा दीप्तिर्यस्यास्तत्स्वरूपा वा सा **फेनिलाच्छाम्बुधाराभा** ६४० । **फुडिति शब्दानुकरणम्** । फुडितिशब्देनोच्चाटितं पातकं यया सा **फुडुच्चाटितपातका** । फणितं पक्वान्नविशेषमिव स्वादु सलिलं यस्याः सा **फाणितस्वादुसलिला** । फाण्टं तक्रं तद्वत् पथ्यं यज्जलं तेनाविला सा **फाण्टपथ्यजलाविला** ॥ ११५ ॥

विश्वेषां माता **विश्वमाता** च । **विश्वेशी** सर्वेश्वरीत्यर्थः । **विश्वा** सर्वस्वरूपा । विश्वेश्वरस्य प्रिया विश्वेश्वरो वा प्रियो यस्याः सा **विश्वेश्वरप्रिया** । ब्रह्मणे परमात्मने हिरण्यगर्भाय वेदाय ब्राह्मणाय वा हिता **ब्रह्मण्या** । हिरण्यगर्भादीन् करोतीति **ब्रह्मकृत्** । ब्रह्मणः शक्तिर्ब्राह्मी । ब्रह्मणि भवा नैष्कर्म्यलक्षणस्थितिरूपा वा ६५० । **ब्रह्मिष्ठा** स्वमहिमस्थेत्यर्थः । ब्राह्मणभक्ता वा । विगतं मलं पापं यस्मात्तथाभूतमुदकं यस्याः सा **विमलोदका** ॥ ११६ ॥

फालितैनोमहाक्षेत्रा, फणिलोकविभूषणा, फेनच्छलप्रणुन्नैना, फुल्लकैरवगन्धिनी ॥ ११४ ॥

फेनिलाच्छाम्बुधाराभा (६४०), फुडुच्चाटितपातका, फाणितस्वादुसलिला, फाण्टपथ्यजलाविला ॥ ११५ ॥

विश्वमाता, विश्वेशी, विश्वा, विश्वेश्वरप्रिया, ब्रह्मण्या, ब्रह्मकृत्, ब्राह्मी (६५०), ब्रह्मिष्ठा, विमलोदका ॥ ११६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विभावरी च विरजा विक्रान्तानेकविष्टपा ।
विश्वमित्रं विष्णुपदी वैष्णवी वैष्णवप्रिया ॥ ११७ ।
विरूपाक्षप्रियकरी ६६० विभूतिर्विश्वतोमुखी ।
विपाशा वैबुधी वेद्या वेदाक्षररसस्रवा ॥ ११८ ।
विद्या वेगवती वन्द्या बृंहणी ६७० ब्रह्मवादिनी ।
वरदा विप्रकृष्टा च वरिष्ठा च विशोधिनी ॥ ११९ ।

विभावरी रात्रिरूपा भूरिद्युम्नभार्यारूपा वा । तथा च पाद्मे—

भूरिद्युम्नो महाराजः क्षमामण्डलपालकः ।
तस्यासन् शतसाहस्राः प्रमदाः कमलेक्षणाः ॥
तासां **विभावरी** श्रेष्ठा बभूव तनुमध्यमा । इति ॥

विगतं रजो यस्याः सा **विरजाः** । शुद्धसत्त्वेत्यर्थः । विक्रान्तं व्याप्तम्-अनेकं विष्टपं भुवनं यया सा **विक्रान्तानेकविष्टपा** । **विश्वमित्रं** जगद्धितैषिणी । विष्णुपदादुद्भूता **विष्णुपदी** । विष्णोरियं **वैष्णवी** । वैष्णवानां विष्णुभक्तानां प्रिया **वैष्णवप्रिया** ॥ ११७ ।

विरूपाक्षे त्रिनेत्रे प्रियं करोतीति **विरूपाक्षप्रियकरी** ६६० । **विभूतिरणिमा**द्यष्टैश्वर्यरूपा । विश्वतः सर्वतोमुखानि यस्याः सा **विश्वतोमुखी** । सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखमिति स्मृतेः । विगतः पाशो बन्धनं संसाररूपं यस्याः, सा **विपाशा** नदीविशेषरूपा वा । तथा च भीष्मपर्वणि—"दृषद्वतीं विपाशां च विपापां स्थूलबालुकाम्" इति । विबुधस्य विष्णोरियं **वैबुधी** देवलोकभवा वा । **वेद्या** वेत्तुं योग्या । वंद्येति चाऽन्यत्र । वेदाक्षरेभ्यो वेदान्तेभ्यो ब्रह्मानन्दरसं स्रवति ब्रह्मानन्दरसस्य वा स्रवो यस्याः सा **ब्रह्मानन्दरसस्रवा** ॥ ११८ ।

विद्या ब्रह्मविद्यारूपा । **वेगवती** स्रोतोगामिनी । **वन्द्या** अभिवन्द्या स्तुत्या वा । **बृंहणी** देहेन्द्रियादीनां परिणामयित्री ६७० । ब्रह्म वदितुं शीलं यस्याः सा **ब्रह्मवादिनी** । वरं ददातीति **वरदा** । विशेषेण प्रकृष्टा **विप्रकृष्टा** सर्वोत्तमेत्यर्थः । **वरिष्ठा** श्रेष्ठा । च वौ पक्षिणि हंसे शेत इति विशो ब्रह्म उः शङ्करः दधाति धारयति पोषयतीति वा धो विष्णुस्तान् ब्रह्मरुद्रविष्णून् नयति प्रापयतीति **विशोधनी** विशेषेण शोधयति पवित्रयतीति वा ॥ ११९ ।

विभावरी, विरजा, विक्रान्तानेकविष्टपा, विश्वमित्रा, विष्णुपदी, वैष्णवी, वैष्णवप्रिया ॥ ११७ ।

विरूपाक्षप्रियकरी(६६०), विभूति, विश्वतोमुखी, विपाशा, वैबुधी, वेद्या, वेदाक्षररसस्रवा ॥ ११८ ।

विद्या, वेगवती, वन्द्या, (६७०) ब्रह्मवादिनी, वरदा, विप्रकृष्टा, वरिष्ठा, विशोधिनी ॥ ११९ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्याधरो विशोका च वयोवृन्दनिषेविता ।
बहूदका बलवती ६८० व्योमस्था विबुधप्रिया ॥ १२० ॥
वाणी वेदवती वित्ता ब्रह्मविद्यातरङ्गिणी ।
ब्रह्माण्डकोटिव्याप्ताम्बुर्ब्रह्महत्यापहारिणी ॥ १२१ ॥
ब्रह्मेशविष्णुरूपा च बुद्धि६९० र्विभववर्धिनी ।
विलासिसुखदा वैश्या व्यापिनी च वृषारणिः ॥ १२२ ॥

विद्यां धरतीति विद्याधरी । विद्याधरस्त्रीरूपिणीति वा । स्त्री नाम्नि कमलोद्भवेति वैष्णवोक्तेः । विगतः शोको यस्याः सा विशोका । वयोवृन्दैः पक्षिसमूहैः नितरां सेविता वयोवृन्दनिषेविता । बहून्युदकानि यस्याः सा बहूदका । बलं विद्यते यस्याः सा बलवती ६८० । व्योमस्था भूताकाशस्था । परमे व्योम्नि तिष्ठतीति वा व्योमस्था । परमे व्योमन्नित्यादिश्रुतेः । विबुधानां देवानां विश्वेश्वरस्य वा प्रिया विबुधप्रिया ॥ १२० ।

वाणी वचनरूपा सरस्वतीस्वरूपा वा । वेदः प्रतिपादकत्वेन वर्तते यस्याः सा वेदवती कुशध्वजदुहितृरूपा वा । वेदवतीहरणे उत्तरकाण्डे प्रसिद्धा रामायणे ।

कृते युगे वेदवती त्रेतायां जनकात्मजा ।
द्वापरे द्रौपदी ज्ञेया तेन कृष्णा त्रिहायनी ॥ इति वचनाच्च ।

वित्ता ज्ञानस्वरूपा । ब्रह्मविद्यारूपस्तरङ्गो वर्तते यस्याः सा ब्रह्मविद्या-तरङ्गिणी । ब्रह्मविद्या नदीस्वरूपा वा । ब्रह्माण्डकोटिपरिमितब्रह्माण्डानि व्याप्तमम्बु यस्याः सा ब्रह्माण्डकोटिव्याप्ताम्बुः । ब्रह्महत्यापहारिणी ब्राह्मणवधापहरण-शीला ॥ १२१ ।

ब्रह्मेशविष्णुरूपा हिरण्यगर्भविश्वनाथनारायणरूपा च । बुद्धिः अन्तःकरणभेद-स्तद्रूपा । बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मीति भगवद्वचनात्, ज्ञानस्वरूपा वा ६९० । विभवमैश्वर्यं विगतो भवो यस्मिंस्तं मोक्षं वा वर्धयितुं शीलं यस्याः सा विभववर्धिनी । विशेषेण लसितुं शीलं यस्य तादृशं सुखं विलासिनां वा सुखं ददातीति विलासिसुखदा । वैश्या वैश्यजातिरूपा तत्स्त्रीरूपा वा । वश्या इति पाठे ईश्वराधीनेत्यर्थः । तथा च भागवते— "स्रवन्ति सरितो भीता" इति । विश्वा इति पाठे विश्वबाहुका काशीस्था देवताविशेष-रूपेत्यर्थः । व्यापिनी व्यापनशीला च । वृषारणिर्धर्मोत्पत्तेः कारणम् ॥ १२२ ।

विद्याधरी, विशोका, वयोवृन्दनिषेविता, बहूदका, बलवती (६८०) व्योमस्था, विबुधप्रिया ॥ १२० ।

वाणी, वेदवती, वित्ता, ब्रह्मविद्यातरङ्गिणी, ब्रह्माण्डकोटिव्याप्ताम्बु, ब्रह्म-हत्यापहारिणी ॥ १२१ ।

ब्रह्मेशविष्णुरूपा, बुद्धि (६९०), विभववर्धिनी, विलासिसुखदा, वैश्या, व्यापिनी, वृषारणि ॥ १२२।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृषाङ्कमौलिनिलया विपन्नार्तिप्रभञ्जिनी ।
विनीता विनता ब्रध्नतनया ७०० विनयान्विता ।। १२३ ।
विपञ्ची वाद्यकुशला वेणुश्रुतिविचक्षणा ।
वर्चस्करी बलकरी बलोन्मूलितकल्मषा ।। १२४ ।
विपाप्मा विगतातंका विकल्पपरिवर्जिता ७१० ।
वृष्टिकर्त्री वृष्टिजला विधिर्विच्छिन्नबन्धना ।। १२५ ।

वृषाङ्कस्य वृषभध्वजस्य मौलिर्मस्तकं निलय आश्रयो यस्याः सा **वृषाङ्कमौलिनिलया**। विपन्नानां विपद्ग्रस्तानां स्वजले मृतानां वा आर्ति पीडां प्रभञ्जितुं शीलं यस्याः सा **विपन्नार्तिप्रभञ्जिनी**। विभिः पक्षिभिर्नीता प्राप्ता व्याप्तेति यावत्। विनययुक्ता इति वा। **विनता** विशेषेण नता नम्रेत्यर्थः। गरुडमातृरूपा वा **ब्रध्नतनया** गोरूपा। सूर्यसुता हि गाव इति श्रुतेः। यमुनारूपा वा ७००।

गङ्गानामसहस्रेऽस्मिन् विवृते सप्तमे शते।
यद्दृष्टमभूदत्र तद्विश्वेशे समर्पितम् ॥ ७।

विनयेन युक्ता **विनयान्विता**। वीनां पक्षिणां नयेन समुदायेन वाऽन्विता ॥१२३।

विपञ्ची वीणा तद्रूपा। वीणावेणुमृदङ्गादिवाद्यरूपाय ते नम इत्यत्रैवोक्तेः। **वाद्यकुशला** वादनमात्रे दक्षा। वेणोः श्रुतौ श्रवणे रागविशेषविज्ञाने विचक्षणा निपुणा। **वर्चस्करी** तेजस्करी **बलकरी** सामर्थ्यकरी। बलेन ज्ञानेन सामर्थ्येन वा उन्मूलितानि कल्मषाणि यया सा **बलोन्मूलितकल्मषा** ॥ १२४।

विगतः पाप्मा यस्याः सा **विपाप्मा**। विशेषेण गत आतङ्को भयं यस्याः सा **विगतातङ्का**। **विकल्पपरिवर्जिता** अशेषभेदरहिता ७१०। **वृष्टिकर्त्री** सवितृस्वरूपा। आदित्याज्जायते वृष्टिरिति स्मृतेः। **वृष्टिजला** वृष्टेः कारणभूतं जलं यस्याः सा। इन्द्रकरिणो हि शुण्डाभिर्गङ्गाजलमुद्धृत्य मेघे संचारयति तदेव वृष्टिरूपं जायत इति लोकप्रसिद्धिः। विदधातीति **विधिर्हि**रण्यगर्भरूपेत्यर्थः। विशेषेण च्छिन्नं भक्तानां बन्धनं यया सा **विच्छिन्नबन्धना** ॥ १२५।

वृषाङ्कमौलिनिलया, विपन्नार्तिप्रभञ्जिनी, विनीता, विनता, ब्रध्नतनया, (७००) विनयान्विता ॥ १२३।

विपञ्ची, वाद्यकुशला, वेणुश्रुतिविचक्षणा, वर्चस्करी, बलकरी, बलोन्मूलितकल्मषा ॥ १२४।

विपाप्मा, विगतातङ्का, विकल्पपरिवर्जिता (७१०), वृष्टिकर्त्री, वृष्टिजला, विधि, विच्छिन्नबंधना ॥ १२५।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व्रतरूपा वित्तरूपा बहुविघ्नविनाशकृत् ।
वसुधारा वसुमती विचित्राङ्गी ७२० विभावसुः ॥ १२६ ।
विजया विश्वबीजं च वामदेवी वरप्रदा ।
वृषाश्रिता विषघ्नी च विज्ञानोर्म्यंशुमालिनी ॥ १२७ ।
भव्या भोगवती ७३० भद्रा भवानी भूतभाविनी ।
भूतधात्री भयहरा भक्तदारिद्र्यघातिनी ॥ १२८ ।

भक्तानां व्रतस्य संकल्पस्यानुसारेण रूपं यस्याः सा **व्रतरूपा**। एकादश्यादिव्रतरूपा वा । **वित्तरूपा** धनस्वरूपा बहूनां विघ्नानां विनाशं करोतीति **बहुविघ्नविनाशकृत्**। बहुविघ्नविनाशहृदिति क्वचित् । **वसुधारा** वसोर्धारारूपा । वसून् भीष्मादीन् मातृरूपेण धरतीति वा । **वसुमती** स्वर्णादिमती पृथ्वीरूपा वा । विचित्राण्यङ्गानि यस्याः सा **विचित्राङ्गी** ७२० । **विभावसुः** सूर्यरूपा वह्निरूपा वा ॥ १२६ ।

विशेषेण जयतीति **विजया**। भवान्याः सखिरूपा वा । **विश्वबीजं** जगदुत्पादननिमित्तम् । वामा मनोहरा च सा देवी चेति **वामदेवी**। वामदेवस्य पत्नीति वा । वरान् प्रददातीति **वरप्रदा**। वृषो धर्म आश्रितो यया सा **वृषाश्रिता** धर्मेणाश्रितेति वा । विषं संसारदुःखं हन्तीति **विषघ्नी**। तथा चोक्तम्—'संसारविषनाशिन्या' इति । च विज्ञानान्येवोर्मयोंऽशवश्च तेषां माला वर्तते यस्याः सा **विज्ञानोर्म्यंशुमालिनी** विज्ञानोर्मिश्चासावंशुमालिनी चेति वा ॥ १२७ ।

भवायोद्भवाय हिता **भव्या** समीचीनेति वा । भोगो वर्तते यस्याः सा **भोगवती**। भागवतीति पाठे भगवत्सम्बन्धिनी विष्णुपदीत्यर्थः ७३० । **भद्रा** मङ्गलरूपा । **भवानी** भवपत्नी । भूतानि भावयत्युत्पादयति पालयतीति वा **भूतभाविनी**। भूतानां चतुर्विधानां पोष्ट्री पालयित्रीति वा **भूतधात्री**। भयं संसारभयं हरतीति **भयहरा**। भक्तानां दारिद्र्यं हन्तुं शीलं यस्याः सा **भक्तदारिद्र्यघातिनी** ॥ १२८ ।

व्रतरूपा, वित्तरूपा, बहुविघ्नविनाशकृत्, वसुधारा, वसुमती, विचित्राङ्गी, (७२०) विभावसु ॥ १२६ ।

विजया, विश्वबीजा, वामदेवी, वरप्रदा, वृषाश्रिता, विषघ्नी, विज्ञानोर्म्यंशुमालिनी ॥ १२७ ।

भव्या, भोगवती, (७३०) भद्रा, भवानी, भूतभाविनी, भूतधात्री, भयहरा, भक्तदारिद्र्यघातिनी ॥ १२८ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भुक्तिमुक्तिप्रदा भेशी भक्तस्वर्गापवर्गदा ।
भागीरथी ७४० भानुमती भाग्यं भोगवती भृतिः ॥ १२९ ।
भवप्रिया भवद्वेष्ट्री भूतिदा भूतिभूषणा ।
भाललोचनभावज्ञा भूतभव्यभवत्प्रभुः ७५० ॥ १३० ।
भ्रान्तिज्ञानप्रशमनी भिन्नब्रह्माण्डमण्डपा ।
भूरिदा भक्तिसुलभा भाग्यवद्दृष्टिगोचरी ॥ १३१ ।

भुक्तिमुक्तिप्रदा भोगमोक्षप्रदा । सुखदा मोक्षदा गङ्गा, गङ्गैव परमा गतिरिति स्मृतेः । **भेशी** नक्षत्राणां नियन्त्री । चान्द्रमसीशक्तिरित्यर्थः । **भा चासौ ईशी चेति** वा । भक्तानां स्वर्गापवर्गौ ददातीति **भक्तस्वर्गापवर्गदा** । भगीरथेनानीतेति **भागीरथी** ७४० । भातीति भानुः, श्रीकृष्ण उत्पादकतया वर्तते यस्याः सा **भानुमती** तेजस्विनीति वा । भानुमतीहरणे हरिवंशे प्रसिद्धा सहदेवपत्नी यादवस्य भानोः कन्यारूपा वा । तथा च हरिवंशे—

> कन्यां भानुमतीं नाम भानोर्दुहितरं नृप ।
> एवं भानुमती वीरसहदेवाय दीयताम् ॥ इति ।

भाग्यं नियतिरूपम् । **भोगवती** पातालगा सरित् । भोगवतीति चाध इति स्मृतेः । बिभर्तीति भृतिः भरणस्वरूपा वा ॥ १२९ ।

भवप्रिया रुद्रकान्ता भव एव प्रियो यस्या भवस्याभीष्टेति वा सा तथा । **भवद्वेष्ट्री** संसारनाशिनी । तथा च श्रूयते–'त्वां भवः शिरसि सादरं दधे त्वं पुनर्भवकथां विलुम्पसि वैपरीत्यमिह ते सुरापगे ये मृतास्तदमरत्वमीहसे' इति । **भूतिदा** ऐश्वर्यदा । भूतिर्भूषणं यस्याः सा भूतिमैश्वर्यं वा भूषयतीति भूतिभूषणा । भूतिदक्षिणेति पाठे भक्तेभ्य ऐश्वर्यदाने समर्थेत्यर्थः । भवभूषणेति क्वचित् । त्रिलोचनस्याभिप्रायं जानातीति **भाललोचनभावज्ञा** । भूतं च भव्यं च भवच्च भूतभव्यभवति तेषां प्रभुः ७५० ॥ १३० ।

भ्रान्तिज्ञानप्रशमनी मूलाज्ञाननाशनेन भ्रान्तिज्ञानच्छेत्री । भिन्नो विदारितो ब्रह्माण्डमण्डपो यया सा **भिन्नब्रह्माण्डमण्डपा** । भूरि ददातीति **भूरिदा** । भक्त्या सुखेन लभ्यत इति **भक्तिसुलभा** । **भाग्यवद्दृष्टिगोचरी** शुभादृष्टवतां नेत्रविषयः टाबन्तत्वं क्वचित् ॥ १३१ ।

भुक्तिमुक्तिप्रदा, भेशी, भक्तस्वर्गापवर्गदा, भागीरथी (७४०) भानुमती, भाग्य, भोगवती, भृति ॥ १२९ ।

भवप्रिया, भवद्वेष्ट्री, भूतिदा, भूतिभूषणा, भाललोचनभावज्ञा, भूतभव्यभवत्प्रभु (७५०) ॥ १३० ।

भ्रान्तिज्ञानप्रशमनी, भिन्नब्रह्माण्डमण्डपा, भूरिदा. भक्तिसुलभा, भाग्यवद्दृष्टिगोचरी ॥ १३१ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भञ्जितोपप्लवकुला भक्ष्यभोज्यसुखप्रदा ।
भिक्षणीया भिक्षुमाता भावा७६० भावस्वरूपिणी ॥ १३२ ।
मन्दाकिनी महानन्दा माता मुक्तितरङ्गिणी ।
महोदया मधुमती महापुण्या मुदाकरी ॥ १३३ ।
मुनिस्तुता ७७० मोहहन्त्री महातीर्था मधुस्रवा ।
माधवी मानिनी मान्या मनोरथपथातिगा ॥ १३४ ।

भञ्जितं नाशितं भक्तोपप्लवानामुपद्रवाणां कुलं समूहो यया सा **भञ्जितोपप्लवकुला** । भक्ष्यं पक्वान्नं भोज्यं सिद्धान्नं ताभ्यां सुखं प्रददातीति **भक्ष्यभोज्यसुखप्रदा** । **भिक्षणीया** बुभुक्षुभिर्मुमुक्षुभिश्च याचनीया । भिक्षूणां परमहंसानां माता मोक्षस्तनदात्री । भावयत्युत्पादयतीति **भावा** । ७६० **भावस्वरूपिणी** पदार्थस्वरूपिणी । **'सर्वं खल्विदं ब्रह्म, इदं सर्वं यदयमात्मेति'** (मा० उ० २) श्रुतेः ॥ १३२ ।

मन्दाकिनी स्वर्गङ्गा । महानानन्दो यस्याः सा **महानन्दा** महांश्चासावानन्दश्चेति वा । अस्मिन्पक्षे स्त्रीत्वमार्षम् । **माता** प्रमाता सर्वहितैषिणीति वा । पापानां मुक्त्यै तरङ्गो यस्या अस्ति सा **मुक्तितरङ्गिणी** । कुतो वीचिर्वीचिस्तव यदि गता लोचनपथमित्युक्तेः । मुक्तिरूपास्तरङ्गा वा यस्याः सा तथा । महानुदयो यस्याः सा **महोदया** महोदयस्वरूपा वा । मधु मधुरं जलं यस्या अस्ति सा **मधुमती** नदीविशेषरूपा वा । **इरावती** मधुमतीत्यत्रैवोक्तेः । महत्पुण्यं यया सा **महापुण्या** महापुण्यस्वरूपा वा । **मुदाकरी** मुदो हर्षस्याकरी आश्रयभूता । टाबन्तत्वं क्वचित् ॥ १३३ ।

मुनिभिः स्तुता **मुनिस्तुता** । मुनिभिः पूजिता सर्वैरिति स्मृतेः ७७० । **मोहहन्त्री** अनाद्यज्ञानच्छेत्री । महान्ति तीर्थानि यस्यां सा **महातीर्था** । सर्वतीर्थमयी गङ्गेत्युक्तेः । महातीर्थरूपा वा । मधु मधुरमुदकं स्रवतीति **मधुस्रवा** । मा माया लक्ष्मीर्वा तयोर्नियन्त्री धवरूपा वा **माधवी** । तथा च हरिवंशे—

मायाऽविद्या हरे प्रोक्ता तस्या ईशो यतो भवान् ।
तस्मान्माधवनामाऽसि धवः स्वामीति शब्दितः ॥ इति ।

माधवस्येयं माधवी मधुवंशोद्भवा सुभद्रारूपा मधुविद्यावबोध्यत्वाद्वा । **'मननाद्ध्यानयोगाच्च विद्धि भारत माधवम्'** इति व्यासवचनात् । मानः पूजा

भञ्जितोपप्लवकुला, भक्ष्यभोज्यसुखप्रदा, भिक्षणीया, भिक्षुमाता, भावा (७६०), भावस्वरूपिणी ॥ १३२ ।

मन्दाकिनी, महानन्दा, माता, मुक्तितरङ्गिणी, महोदया, मधुमती, महापुण्या, मुदाकरी ॥ १३३।

मुनिस्तुता (७७०), मोहहंत्री, महातीर्था, मधुस्रवा, माधवी, मानिनी, मान्या, मनोरथपथातिगा ॥ १३४ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोक्षदा मतिदा मुख्या ७८० महाभाग्यजनाश्रिता ।
महावेगवती मेध्या महामहिमभूषणा ॥ १३५ ।
महाप्रभावा महती मीनचञ्चललोचना ।
महाकारुण्यसम्पूर्णा महर्द्धिश्च ७९० महोत्पला ॥ १३६ ।
मूर्तिमन्मुक्तिरमणी मणिमाणिक्यभूषणा ।
मुक्ताकलापनेपथ्या मनोनयननन्दिनी ॥ १३७ ।

वर्तते यस्याः सा **मानिनी** । प्रेमसंरम्भो वा मानः शान्तनुभार्यावस्थायां स वर्तते यस्या इति वा । **मान्या** पूज्या । मनोरथपथमतिक्रम्य गच्छतीति **मनोरथपथातिगा** सर्वव्यापिकेत्यर्थः ॥ १३४ ।

मोक्षं ददातीति भक्तेभ्योऽभक्तेभ्यः खण्डयतीति वा **मोक्षदा** । **मतिदा** ज्ञानदा । **मुख्या** श्रेष्ठा ७८० । महद्भाग्यं येषां तैर्जनैः सेविता **महाभाग्यजनाश्रिता** । महान् वेगो वर्तते यस्याः सा **महावेगवती** । **मेध्या** पवित्रा । पवित्राणां पवित्रं य इति स्मृतेः । **महा** उत्सवरूपा । 'मह उद्धव उत्सवः' इति वचनात् । महिमानो भूषणानि यस्याः सा महिम्नो वा भूषयतीति **महिमभूषणा** । महिमभिर्वा भूष्यत इति तथा ॥ १३५ ।

महान् प्रभावो यस्याः सा **महाप्रभावा** । **महती** अपरिच्छिन्ना । मीना इव मीना एव वा चञ्चलानि लोचनानि यस्याः सा **मीनचञ्चललोचना** । महता कारुण्येन करुणया सम्पूर्णा व्याप्ता **महाकारुण्यसम्पूर्णा** । महती ऋद्धिर्यस्याः सा **महर्द्धिः** ७९० । च महान्त्युत्पलानि यस्यां **सा महोत्पला** ॥ १३६ ।

मूर्तिमत् प्रत्यक्षशरीरवत् । पश्यध्वन्तदिमां गङ्गां प्रत्यक्षां पुरतः स्थितामित्युक्तेः । **मुक्तिरमणी** मुक्तिरूपा रमणी सुन्दरी स्त्री । मणयो माणिक्यानि च भूषणानि यस्यास्तेषां वा भूषणरूपा सा **मणिमाणिक्यभूषणा** । मुक्ता समूहैर्मुक्ता समूहा वा नेपथ्यमलङ्करणं यस्याः सा **मुक्ताकलापनेपथ्या** । मनांसि नयनानि च नन्दयितुं शीलं यस्याः **सा मनोनयननन्दिनी** ॥ १३७ ।

मोक्षदा, मतिदा, मुख्या (७८०), महाभाग्यजनाश्रिता, महावेगवती, मेध्या, महामहिमभूषणा ॥ १३५ ।

महाप्रभावा, महती, मीनचञ्चललोचना, महाकारुण्यसंपूर्णा, महर्द्धि (७९०), महोत्पला ॥ १३६ ।

मूर्तिमत्, मुक्तिरमणी, मणिमाणिक्यभूषणा, मुक्ताकलापनेपथ्या, मनोनयननन्दिनी ॥ १३७ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महापातकराशिघ्नी महादेवार्धहारिणी ।
महोर्मिमालिनी मुक्ता ८०० महादेवी मनोन्मनी ॥ १३८ ।
महापुण्योदयप्राप्या मायातिमिरचन्द्रिका ।
महाविद्या महामाया महामेधा महौषधम् ॥ १३९ ।
मालाधरी महोपाया ८१० महोरगविभूषणा ।
महामोहप्रशमनी महामङ्गलमङ्गलम् ॥ १४० ।

महापातकराशिघ्नी महापातकसमूहानां छेत्री । महादेवस्यार्धं शरीरं हर्तुं शीलं यस्याः सा **महादेवार्धहारिणी** । गौरीरूपेत्यर्थः । महती ऊर्मिमाला वर्तते यस्याः सा **महोर्मिमालिनी** । **मुक्ता** मुक्तस्वरूपा ८०० ।

गङ्गानामसहस्रेऽस्मिन् अष्टमे विवृते शते ।
यददृष्टमभूदत्र तद्विश्वेशे समर्पितम् ॥ ८ ॥

महती चासौ देवी चेति **महादेवी** । मनांसि उन्मन्यते उत्कृष्टज्ञानयुक्तानि करोतीति **मनोन्मनी** । सत्त्वशुद्धिकारिणीत्यर्थः । सन्धिरार्षः ॥ १३८ ।

महतां पुण्यानामुदयेन फलेन प्राप्या गम्या **महापुण्योदयप्राप्या** । मायैव तिमिर-मन्धकारस्तस्य चन्द्रिका नाशिका **मायातिमिरचन्द्रिका** । महती चासौ विद्या चेति **महाविद्या** ब्रह्मविद्यास्वरूपेत्यर्थः । महती चासौ माया चेति **महामाया** । स्वकार्यव्यापकत्वं महत्त्वम् । महती मेधा यस्याः सा **महामेधा** ब्रह्माकारबुद्धिरूपा वा । महच्च तदौषधं च **महौषधम्** । महामोहमहौषधमिति पाठे द्वन्द्वः । महान् मोहो यस्याः सा **महामोहा** । अत्रापि महत्त्वं स्वकार्यव्यापकत्वमेव । सा च महौषधं चेति तथा । अत्र महत्त्वं संसाररोगनिवर्तकत्वम् । अस्मिन् पक्षे नामद्वयमिदम् ॥ १३९ ।

मालां वैजयन्तीरूपां धरतीति **मालाधरी** मालाकारपत्नीरूपा वा । महानुपायः प्राप्तिसाधनश्रवणादिलक्षणो यस्याः सा **महोपाया** । पुरुषार्थचतुष्टये महोपायस्वरूपा वा ८१० । महान्त उरगा वासुकिप्रभृतयो विभूषणानि यस्याः सा **महोरगविभूषणा** । महामोहं प्रशमयतीति **महामोहप्रशमनी** । महामङ्गलानामपि मङ्गलं **महामङ्गलमङ्गलम्** । मङ्गलानां च मङ्गलमिति स्मृतेः ॥ १४० ।

महापातकराशिघ्नी, महादेवार्धहारिणी, महोर्मिमालिनी, मुक्ता (८००), महादेवी, महोन्मनी ॥ १३८ ।

महापुण्योदयप्राप्या, मायातिमिरचन्द्रिका, महाविद्या, महामाया, महामेधा, महोषधा ॥ १३९ ।

मालाधरी, महोपाया (८१०), महोरगविभूषणा, महामोहप्रशमनी, महामङ्गलमङ्गला ॥ १४० ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मार्तण्डमण्डलचरी महालक्ष्मीर्मदोज्झिता ।
यशस्विनी यशोदा च योग्या युक्तात्मसेविता८२० ॥ १४१ ।
योगसिद्धिप्रदा याज्या यज्ञेशपरिपूरिता ।
यज्ञेशी यज्ञफलदा यजनीया यशस्करी ॥ १४२ ।
यमिसेव्या योगयोनिर्योगिनी ८३० युक्तबुद्धिदा ।
योगज्ञानप्रदा युक्ता यमाद्यष्टाङ्गयोगयुक् ॥ १४३ ।

सूर्यमण्डले चरतीति **मार्तण्डमण्डलचरी**। आकाशगङ्गारूपेण सूर्यमण्डले चरतीति वा। महती चासौ लक्ष्मीश्चेति **महालक्ष्मीः**। महत्त्वं निरतिशयसाम्यत्वम्। मद उज्झितो यया मदेन वा उज्झिता **मदोज्झिता**। यशो ब्रह्महत्या विदारिणीति वर्तते यस्याः सा **यशस्विनी**। यशो ददातीति **यशोदा** नन्दपत्नीरूपा वा। च **योग्या** योगाय हिता योगगम्येति वा। युक्त आत्मा येषां तैः सेविता **युक्तात्मसेविता** ८२० ॥१४१।

योगानां षडङ्गादीनां सिद्धिप्रदा **योगसिद्धिप्रदा**। **याज्या** पूज्या यजमानस्वरूपा वा। यज्ञेशेन परिपूरिता व्याप्ताऽधिष्ठितेति यावत्। यज्ञेशपरिपूजितेति क्वचित्पाठः। तत्र यज्ञेशः परिपूजितो यया सा **यज्ञेशपरिपूजिता**। यद्वा यज्ञेशः श्रीकृष्णः तेन परिपूजितेति व्याख्येयम्। तथा च हरिवंशे पारिजातहरणे—

अथाययौ विष्णुपदी स्मृता कृष्णेन भारत।
सम्पूज्य तां ततः कृष्णः कृत्वा स्नानमधोक्षजः॥ इति।

यज्ञेशी यज्ञाधिष्ठात्री देवता। स्मृता यज्ञफलं ददातीति **यज्ञफलदा**। अभक्तानां खण्डयतीति वा। **यजनीया** पूजनीया। **यशस्करी** भक्तनां कीर्तिकरी ॥ १४२।

यमिसेव्या जितेन्द्रियैः सेवनीया। योगेन मायासम्बन्धेन योनिः कारणं **योगयोनिः**। योगस्य षडङ्गादेर्हेतुरिति वा। योगो जीवात्मनोरैक्यचिन्तनं वर्तते यस्याः सा **योगिनी** योगिनीगणरूपा वा ८३०। युक्ता बुद्धिर्ब्रह्मात्मैकत्वज्ञानं तद्ददातीति **युक्तबुद्धिदा**। युक्तेभ्यो जितेन्द्रियेभ्यो वा बुद्धिता। युक्तसिद्धिदेति पाठे जीवन्मुक्तिरूपसिद्धिदेत्यर्थः। योगश्च ज्ञानं च योगेन वा ज्ञानं तत्प्रददातीति **योगज्ञानप्रदा**। **युक्ता** संयता जितेन्द्रियेति यावत्।

पुंश्चल्यापहृतं चेतः को निवारयितुं क्षमः।
आत्मारामेश्वरमृते भगवन्तमधोक्षजम् ॥ इति वचनात्।

यमाद्यष्टाङ्गयोगं युनक्तीति **यमाद्यष्टाङ्गयोगयुक्** ॥ १४३।

मार्तण्डमण्डलचरी, महालक्ष्मी, मदोज्झिता, यशस्विनी, यशोदा, योग्या, युक्तात्मसेविता (८२०) ॥ १४१।

योगसिद्धिप्रदा, याज्या, यज्ञेशपरिपूरिता, यज्ञेशी, यज्ञफलदा, यजनीया, यशस्करी ॥ १४२।

यमिसेव्या, योगयोनि, योगिनी (८३०) युक्तबुद्धिदा, योगज्ञानप्रदा, युक्ता, यमाद्यष्टाङ्गयोगयुक् ॥ १४३।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यन्त्रिताघौघसञ्चारा यमलोकनिवारिणी ।
यातायातप्रशमनी यातनानामकृन्तनी ॥ १४४ ।
यामिनीशहिमाच्छोदा युगधर्मविवर्जिता ८४० ।
रेवतीरतिकृद्रम्या रत्नगर्भा रमा रतिः ॥ १४५ ।
रत्नाकरप्रेमपात्रं रसज्ञा रसरूपिणी ।
रत्नप्रासादगर्भा ८५० च रमणीयतरङ्गिणी ॥ १४६ ।

यन्त्रितो निराकृतोऽघौघानां पापसमूहानां सञ्चारो यया सा **यन्त्रिताघौघसञ्चारा** यमलोकं निवारयितुं शीलं यस्याः सा **यमलोकनिवारिणी** । यातायाते मरणजन्मनी प्रशमयतीति **यातायातप्रशमनी** । यातनानां नाममात्रं कृन्ततीति **यातनानामकृन्तनी** ।

यातनामूलकृन्तनीति पाठे यातनानां मूलं पापम् । यातनानां निकृन्तनीति क्वचित् ॥ १४४ ।

यामिनीशहिमाच्छोदा चन्द्ररश्मिवन्निर्मलोदका । युगधर्मैर्हिंसाऽनृतादिभिर्विवर्जिता **युगधर्मविवर्जिता** ८४० । **रेवती** ग्रहविशेषो वलदेवकान्ता वा नक्षत्रविशेषो वा तद्रूपा रेवती । रतिं रमणं तत्कर्त्री **रतिकृत्** । **रम्या** रमणीया । रत्नानि गर्भे यस्याः सा **रत्नगर्भा** समुद्ररूपा वा । **रमा** लक्ष्मीरूपा । **रतिः** रमणं कामाङ्गना वा ॥ १४५ ।

रत्नाकरप्रेमपात्रं समुद्रस्य स्नेहाश्रयः कान्तेत्यर्थः । रसं ब्रह्म रसं जानातीति **रसज्ञा** । **'रसो वै सः'** इति श्रुतेः, षड्रसज्ञा वा । **रसरूपिणी** ब्रह्मस्वरूपिणी षड्रसरूपा वा । रत्ननिर्मिता देवालया गर्भे यस्याः सा **रत्नप्रासादगर्भा** । प्रासादरत्नखचिताश्चिन्तामणिगणा अपि । गङ्गाजलान्तस्तिष्ठन्ति कलिकल्मषभीतित इत्यत्रैवोक्तेः । रत्नप्रसादगर्भेति पाठे उत्कृष्टप्रसादगर्भेत्यर्थः ८५० । च रमणीयास्तरङ्गा वर्तन्ते यस्याः सा **रमणीयतरङ्गिणी** ॥ १४६ ।

यन्त्रिताघौघसंचारा, यमलोकनिवारिणी, यातायातप्रशमनी, यातनानामकृन्तनी ॥ १४४ ।

यामिनीशहिमाच्छोदा, युगधर्मविवर्जिता (८४०), रेवती, रतिकृत्, रम्या, रत्नगर्भा, रमा, रति ॥ १४५ ।

रत्नाकरप्रेमपात्र, रसज्ञा, रसरूपिणी, रत्नप्रासादगर्भा (८५०) रमणीयतरङ्गिणी ॥ १४६ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रत्नार्चो रुद्ररमणी रागद्वेषविनाशिनी ।
रमा रामा रम्यरूपा रोगिजीवातुरूपिणी ॥ १४७ ।
रुचिकृद्रोचनी ८६० रम्या रुचिरा रोगहारिणी ।
राजहंसा रत्नवती राजत्कल्लोलराजिका ॥ १४८ ।

रत्नानामिवार्चिर्दीप्तिर्यस्याः सा **रत्नार्चिः** । रुद्रं रमयतीति **रुद्ररमणी** । **रागद्वेषविनाशिनी** रागद्वेषयोर्हन्त्री । रमयति नयनमनांसीति **रमा** । **रामा** उत्तमास्त्रीस्वरूपा । **साम्बपत्नी** कुम्भाण्डदुहिता वा । तथा च बाणासुरयुद्धे हरिवंशे—'**साम्बाय दीयतां रामा कुम्भाण्डदुहिता शुभेति**' । रमन्तेऽस्यां योगिन इति वा **रामा** । तदुक्तम्—

रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि ।
इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते ॥ इति ।

रम्यं मनोहरं रूपं यस्याः सा **रम्यरूपा** । **रोगिजीवातुरूपिणी** संसाररोगग्रस्तानां जीवनौषधिरूपिणी ॥ १४७ ।

रुचिं करोतीति **रुचिकृत्** । रोचयतीति **रोचनी** ८६० । रमा लक्ष्मीस्तस्यैहिता **रम्या** । रुचिं रातीति **रुचिरा** मनोहरा वा । रोगं संसाररोगमात्रं वा हर्तुं शीलं यस्याः सा **रोगहारिणी** । राजन्ते हंसा यस्यां सा **राजहंसा** । **रत्नवती** अनेकरत्नसंयुक्ता । **रववतीति** पाठे सरय्वाः संगमेन यो रवो ध्वनिः, स वर्तते यस्याः सा **रववतीति** व्याख्येयम् । तथा च बालकाण्डे—

ततार सरितं पुण्यां सरयूं सागरंगमाम् ।
राघवस्तु सरिन्मध्ये पप्रच्छ मुनिपुङ्गवम् ॥
वारीणां भिद्यमानानां किमेष विमलो ध्वनिः ।
राघवस्य तु तच्छ्रुत्वा जातकौतूहलः स च ॥
कथयामास धर्मात्मा तस्य शब्दस्य निश्चयम् ।
कैलासे पर्वते राम मनसा निर्मितं सरः ॥
ब्रह्मणा रघुशार्दूल मानसं नाम तेन तत् ।
तस्मात् प्रसूता सरयूः साऽयोध्यामभ्यभावयत् ॥
सरः प्रसूता सरयूः पुण्या ब्रह्मसरश्च्युता ।
शब्दोऽयं विपुलस्तस्या जाह्नव्यामभिवर्तते ॥
वारिसंघर्षजो राम प्रणामं प्रयतः कुरु ॥ इति ।

राजतां राजमानानां कल्लोलानां राजिर्यस्याः सा **राजत्कल्लोलराजिका** । राजकल्लोलेति पाठेऽपि स एवार्थः ॥ १४८ ।

रत्नार्ची, रुद्ररमणी, रागद्वेषविनाशिनी, रमा, रामा, रम्यरूपा, रोगिजीवातुरूपिणी ॥ १४७ ।

रुचिकृत्, रोचनी (८६०), रम्या, रुचिरा, रोगहारिणी, राजहंसा, रत्नवती, राजत्कल्लोलराजिका ॥ १४८ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामणीयकरेखा च रुजारी रोगरोषिणी ।
राका ८७० रङ्कार्तिशमनी रम्या रोलम्बराविणी ॥ १४९ ।
रागिणी रञ्जितशिवा रूपलावण्यशेवधिः ।
लोकप्रसूर्लोकवन्द्या लोलत्कल्लोलमालिनी ॥ १५० ।
लीलावती ८८० लोकभूमिर्लोकलोचनचन्द्रिका ।
लेखस्रवन्ती लटभा लघुवेगा लघुत्वहृत् ॥ १५१ ।

रमणीया एव रामणीयका रेखा जलधाराः सामुद्रोक्ता वा करचरणयोर्यस्याः सा **रामणीयकरेखा**। रामणीयकवेशा चेति क्वचित्पाठः। तत्र वेशः शोभा। च रुजां रोगाणां अरी **रुजारिः**। रोगे रोषो वर्तते यस्याः सा **रोगरोषिणी**। रोगशोषणीति क्वचित्पाठः। रोषशोषिणीति चान्यत्र। **राका** पूर्णचन्द्रा पौर्णमासीति तत्स्वरूपा ८७०। रङ्कानां दरिद्राणामार्तिं पीडां शमयतीति **रङ्कार्तिशमनी**। **रम्या** रमणीया। रम्यः रमणीयः। अः विष्णुः आश्रयत्वेन वर्तते यस्याः सेति वा। रोलम्बानां भ्रमराणां रावो वर्तते यस्याः सा **रोलम्बराविणी** ॥ १४९ ।

सृष्टिस्थितिसंहारेच्छारूपो रागोऽस्या अस्तीति **रागिणी**। रागमात्राश्रया वा। रञ्जितमभिव्यक्तीकृतं शिवं कैवल्यं रञ्जितोऽनुरञ्जितः शिव ईश्वरो वा यया सा **रञ्जितशिवा**। रूपलावण्ययोः सौन्दर्याङ्गसौष्ठवयोः शेवधिर्निधिराश्रय इत्यर्थः। **लोकप्रसूर्लोकानां** जनयित्री। **लोकवन्द्या** जनैः स्तव्याऽभिवाद्या वा। लोलतां लोलन्ती वा कल्लोलानां माला वर्तते यस्याः सा **लोलत्कल्लोलमालिनी** ॥ १५० ।

लीला सृष्टिस्थितिसंहाररूपा वर्तते यस्याः सा **लीलावती**। दिवोदासमहिषी वा। एकदाऽवसरं प्राप्य दिवोदासस्य भूभुजः। राज्ञी लीलावती नाम राज्ञे तं विन्यवेदय-दित्यत्रैवोक्तेः ८८०। **लोकभूमिर्भुवनानामधिष्ठानम्**। **लोकलोचनचन्द्रिका** जनमात्रनेत्राणामाह्लादयित्री। लेखं शास्त्रं स्रवन्ती उत्पादयन्ती **लेखस्रवन्ती**। तथा च पारमार्षं सूत्रम्। **'शास्त्रयोनित्वात्'** इति। देवनदीति वा। लटस्य लम्पटस्य, जनस्येव भा दीप्तिः प्रतीतिर्जह्नुब्रह्मसभाप्रतीपस्थानादौ यस्याः सा **लटभा**। लटभी-रिति पाठे लम्पटानां भीर्भयं यस्या इति व्याख्येयम्। सर्वनियन्तृत्वात्। लघुर्मन्थरो वेगो यस्याः सा **लघुवेगा**। लघुत्वहृत् भक्तानां लघुत्वहारिणी ॥ १५१ ।

रामणीयकरेखा, रुजारी, रोगरोषिणी, राका (८७०), रङ्कार्तिशमनी, रम्या रोलम्बराविणी ॥ १४९ ।

रागिणी, रञ्जितशिवा, रूपलावण्यशेवधि, लोकप्रसू, लोकवन्द्या, लोलत्कल्लोल-मालिनी ॥ १५० ।

लीलावती, (८८०) लोकभूमि, लोकलोचनचन्द्रिका, लेखस्रवन्ती, लटभा, लघु-वेगा, लघुत्वहृत् ॥ १५१ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लास्यत्तरङ्गहस्ता च ललिता लयभङ्गिगा ।
लोकबन्धुर्८९०र्लोकधात्री लोकोत्तरगुणोर्जिता ॥ १५२ ।
लोकत्रयहिता लोका लक्ष्मीर्लक्षणलक्षिता ।
लीला लक्षितनिर्वाणा लावण्यामृतवर्षिणी ॥ १५३ ।
वैश्वानरी ९०० वासवेड्या वन्ध्यत्वपरिहारिणी ।
वासुदेवाङ्घ्रिरेणुघ्नी वज्रिवज्रनिवारिणी ॥ १५४ ।

लास्यन्तो नृत्यन्तस्तरङ्गा एव हस्ता यस्याः सा **लास्यत्तरङ्गहस्ता**। च **ललिता** मनोहरा ललिताख्या काशीस्था देवी वा। लयभङ्ग्या गमनपरिपाट्या गच्छतीति **लयभङ्गिगा**। **लोकबन्धुर्लोक**मात्रहितैषिणी ८९०। **लोकधात्री** जनमात्रस्य पोष्ट्री। लोकोत्तरगुणोर्जिता **लोकातिक्रान्तगुणैरुद्रिक्ता** ॥ १५२।

लोकत्रयाणां हितं यया सा **लोकत्रयहिता**। लोक्यते आलोच्यते मुमुक्षुभिरिति **लोका** लोकस्वरूपा वा। **लक्ष्मीर्ल**क्ष्मीस्वरूपा। लक्षणैः सत्यज्ञानानन्दादिस्वरूपलक्षणैर्जगज्जन्मादितटस्थलक्षणैः करुणत्वादिगुणैः समीचीनैः सामुद्रिकोक्तस्त्रीलक्षणैर्वा लक्षिताऽन्विता **लक्षणलक्षिता**। **लीला** भगवत्क्रीडास्वरूपा पद्मराजमहिषीरूपा वा। तथा च वासिष्ठे—

आसीदस्मिन्महापीठे कुलपद्मो विकासवान्।
तस्यासीत्सुभगा भार्या लीलानामविलासिनी ॥ इति।

लक्षितं दर्शितं निर्वाणं यया सा **लक्षितनिर्वाणा**। लावण्यमेवामृतं तद्वर्षिणी **लावण्यामृतवर्षिणी**। यद्वा लवणार्णवस्य इदं लावण्यं रत्नादिसम्पदमृतं कैवल्यं ते वर्षितुं शीलं यस्याः सा तथा ॥ १५३।

वैश्वानरी आग्नेयी शक्तिः स्वाहा दाहिका वा तद्रूपा ॥ ९००।

गङ्गानामसहस्रेऽस्मिन् विवृते नवमे शते।
यददृष्टमभूदत्र तद्विश्वेशे समर्पितम् ॥ ९।

वासवेड्या इन्द्रस्य स्तुत्या। वन्ध्यत्वं परिहर्तुं शीलं यस्याः सा **वन्ध्यत्वपरिहारिणी**। वासुदेवस्यांघ्र्योः रेणून् हन्तुं हर्तुं शीलं यस्याः सा **वासुदेवांघ्रिरेणुघ्नी**। इन्द्रस्य कुलिशं निवारयितुं शीलं यस्याः सा **वज्रिवज्रनिवारिणी** च्यवनादिरूपेण ॥ १५४।

लास्यत्तरङ्गहस्ता, ललिता, लयभङ्गिगा, लोकबन्धु (८९०), लोकधात्री, लोकोत्तरगुणोर्जिता ॥ १५२।

लोकत्रयहिता, लोका, लक्ष्मी, लक्षणलक्षिता, लीला, लक्षितनिर्वाणा, लावण्यामृतवर्षिणी ॥ १५३।

वैश्वानरी (९००), वासवेड्या, वन्ध्यत्वपरिहारिणी, वासुदेवांघ्रिरेणुघ्नी, वज्रिवज्रनिवारिणी ॥ १५४।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुभावती शुभफला शान्तिः शान्तनुवल्लभा ।
शूलिनी शैशववयाः ९१० शीतलाऽमृतवाहिनी ।। १५५ ।

शोभावती शीलवती शोषिताशेषकिल्बिषा ।
शरण्या शिवदा शिष्टा शरजन्मप्रसूः शिवा ।। १५६ ।

शक्तिः ९२० शशाङ्कविमला शमनस्वसृसम्मता ।
शमा शमनमार्गघ्नी शितिकण्ठमहाप्रिया ।। १५७ ।

शुभानि आ समन्ताद्वर्तन्ते यस्याः सा **शुभावती**। शुभं फलं यस्याः शुभं वा फलतीति **शुभफला**। **शान्ति**र्नैष्कर्म्यस्वरूपा शमरूपा वा शान्तिकर्मरूपा वा। शान्तनोः समुद्रांशस्य वल्लभा भार्या **शान्तनुवल्लभा**। शन्तनुरिति पाश्चात्यादाक्षिणात्याश्च पठन्ति। शूलमस्त्रमस्या अस्तीति **शूलिनी**। शैशवं शिशुसम्बन्धिवयो यस्याः सा **शैशववयाः** ९१०। शीतलं यदमृतं जलं तद्वोढुं शीलं यस्याः सा **शीतलामृतवाहिनी** ।। १५५ ।

शोभा वर्तते यस्याः सा **शोभावती**। शीलं वर्तते यस्याः सा **शीलवती**। शोषितमशेषं किल्बिषं यया सा **शोषिताशेषकिल्बिषा**। **शरण्या** आश्रययोग्या। **शिवदा** शिवं कल्याणं मोक्षं वा ददातीति शिवदा। **शिष्टा** सदाचारा। **शिष्टा**वशिष्टाऽवधिभूता वा। **शरजन्मप्रसूः** कार्तिकेयजननी। **शिवा** कल्याणरूपा मोक्षरूपा ईश्वरीरूपा वा ।। १५६ ।

शक्तिर्मायाऽऽह्लादिनीवा ९२०। **शशाङ्कविमला** चन्द्रवदाह्लादकारिणी चन्द्रवन्निर्मलेति वा। शमनस्वसुर्यमुनायाः संमताऽभिमता **शमनस्वसृसंमता**। **शमयति** नाशयत्यज्ञानं तत्कार्यं चेति शमा। **शमनमार्गघ्नी** यममार्गनिवारिणी। **शितिकण्ठमहाप्रिया** रुद्रस्यात्यन्तवल्लभा ।। १५७ ।

शुभावती, शुभफला, शान्ति, शान्तनुवल्लभा, शूलिनी, शैशववया (९१०), शीतलामृतवाहिनी ।। १५५ ।

शोभावती, शीलवती, शोषिताशेषकिल्बिषा, शरण्या, शिवदा, शिष्टा, शरजन्मप्रसू, शिवा ।। १५६ ।

शक्ति, (९२०) शशांकविमला, शमनस्वसृसंमता, शमा, शमनमार्गघ्नी, शितिकण्ठमहाप्रिया ।। १५७ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुचिः शुचिकरी शेषा शेषशायिपदोद्भवा ।
श्रीनिवासश्रुतिः९३०श्रद्धा श्रीमती श्रीः शुभव्रता ।। १५८ ।
शुद्धविद्या शुभावर्ता श्रुतानन्दा श्रुतिस्तुतिः ।
शिवेतरघ्नी शबरी ९४० शाम्बरीरूपधारिणी ।। १५९ ।
श्मशानशोधनी शान्ता शश्वच्छतधृतिष्टुता' ।
शालिनी शालिशोभाढ्या शिखिवाहनगर्भभृत् ।। १६० ।

शुचिः पवित्रा । **शुचिकरी** पवित्रकरी । **शेषा** अवधिभूता अनन्तशक्तिर्मदिरा रेवतीति भावः । शुग्घ्नीति पाठे शोकनाशिनीत्यर्थः । **शेषशायिपदोद्भवा** अनन्तशायिचरणोत्पन्ना । श्रीनिवासो विष्णुस्तद्रूपेण श्रूयत इति **श्रीनिवासश्रुतिः** ९३० । **श्रद्धा** आस्तिक्यबुद्धिरूपा । श्रीर्वर्तते यस्याः सा **श्रीमती** । श्रयन्त्येतां योगिन इति **श्रीर्ब्रह्मविद्या** लक्ष्मी रूपा वा । शुभानि व्रतानि यस्याः सा **शुभव्रता** ।। १५८ ।

शुद्धा चासौ विद्या चेति **शुद्धविद्या** । शुभविद्येति क्वचित् । शुभ आवर्तोऽम्भसां भ्रमो यस्याः सा **शुभावर्ता** । श्रुतो ज्ञात आनन्दो यया सा **श्रुतानन्दा** । श्रुतिभिर्वेदैः स्तुतिर्यस्याः सा **श्रुतिस्तुतिः** । तथा च भागवते—**'जय जय जह्नुजामित्यादि'** । शिवेतरं पापं तन्नाशिनी **शिवेतरघ्नी** । **शबरी** शबराङ्गना किरातरूपधारिणी महेश्वरस्य पत्नीत्वेन ९४० । शंबरो मृगस्तत्पत्नी **शाम्बरी** । ब्रह्मणा कामितायाः सरस्वत्या मृगीरूपत्वेन तस्या रूपं धर्तुं शीलं यस्याः सा **शाम्बरीरूपधारिणी** ।। १५९ ।

श्मशानं शोधयतीति **श्मशानशोधनी** । यस्यां मृतानां पुनः श्मशानसम्बन्धो न भवतीत्यर्थः । श्मशानं महाश्मशानं काशी, तच्छोधनीति वा । तथा चात्रैवोक्तम्—**'गङ्गासङ्गात्ततोऽधिकेति'** । **शान्ता** शान्तस्वभावा । दशरथात्मजाया ऋष्यशृङ्गपत्नी तद्रूपा वा । तथा च हरिवंशे--

अथ चित्ररथस्यापि पुत्रो दशरथोऽभवत् ।
लोमपाद इति ख्यातो यस्य शान्ता सुताऽभवत् ।। इति ।

शश्वन्नित्या । **शतधृतिस्तुता** ब्रह्मणाऽभिवन्दिता । शालते शोभत इति **शालिनी** । शालिर्धान्याऽत्रान्तररूपं तेन या शोभा तयाऽऽढ्या व्याप्ता **शालिशोभाढ्या** । शिखिवाहनः कार्तिकेयस्तद्रूपं गर्भं बिभर्तीति **शिखिवाहनगर्भभृत्** ।। १६० ।

शुचि, शुचिकरी, शेषा, शेषशायिपदोद्भवा, श्रीनिवासश्रुति, (९३०) श्रद्धा, श्रीमती, श्री, शुभव्रता ।। १५८ ।

शुद्धविद्या, शुभावर्ता, श्रुतानन्दा, श्रुतिस्तुति, शिवेतरघ्नी, शबरी (९४०), शाम्बरीरूपधारिणी ।। १५९ ।

श्मशानशोधनी, शान्ता, शश्वत्, शतधृतिस्तुता, शालिनी, शालिशोभाढ्या, शिखिवाहनगर्भभृत् ।। १६० ।

८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शंसनीयचरित्रा च शातिताशेषपातका ९५० ।
षड्गुणैश्वर्यसम्पन्ना षडङ्गश्रुतिरूपिणी ॥ १६१ ।
षण्ढताहारिसलिला स्त्यायन्नदनदीशता ।
सरिद्वरा च सुरसा सुप्रभा सुरदीर्घिका ॥ १६२ ।
स्वः सिन्धुः सर्वदुःखघ्नी९६०सर्वव्याधिमहौषधम् ।
सेव्या सिद्धिः सती सूक्तिः स्कन्दसूश्च सरस्वती ॥ १६३ ।
सम्पत्तरङ्गिणी स्तुत्या स्थाणुमौलिकृतालया९७० ।
स्थैर्यदा सुभगा सौख्या स्त्रीषु सौभाग्यदायिनी ॥ १६४ ।

शंसनीयानि स्तुत्यर्हाणि चरित्राणि यस्याः सा **शंसनीयचरित्रा** । च शातितानि नाशितान्यशेषपातकानि यया सा **शातिताशेषपातका** ९५० । **षड्गुणैश्वर्यसम्पन्ना** ऐश्वर्यादिगुणषट्कान्विता । षडङ्गानि शिक्षादीनि च श्रुतिश्च तदुभयरूपिणी ॥ १६१ ।

षण्ढताऽवीर्यता तद्धारि सलिलं यस्याः सा **षण्ढताहारिसलिला** । **स्त्यायन्नदनदीशता** स्त्यायत्संघातं प्राप्नुवन्नदनदीनां शतं यस्यां सा तथा । ष्ट्यै स्त्यै शब्दसंघातयोरिति धातुः । **सरिद्वरा** नदीनां मध्ये श्रेष्ठा । **सुरसा** नागमातृरूपा ॥ यद्वा शोभनो रसो यस्याः सा शोभनब्रह्मरसरूपेत्यर्थः । शोभना प्रभा यस्याः सा **सुप्रभा** । **सुरदीर्घिका** देववापी ॥ १६२ ।

स्वः सिन्धुः स्वर्नदी । सर्वदुःखघ्नी तापत्रयोन्मूलिनी ९६० । सर्वव्याधिमहौषधं सर्वरोगाणां निवर्तकम् । **सेव्या** सेवनीया । **सिद्धिः** कैवल्याऽणिमादिसिद्धिस्वरूपा । **सती** पतिव्रता भवपत्नी दाक्षायणीति वा । **सूक्तिः** शोभनोक्तिस्वरूपा पुरुषसूक्तादिरूपा वा । **स्कन्दसूः** कार्तिकेयजननी । च **सरस्वती** वाणी तदधिष्ठात्री देवता वा ॥ १६३ ।

सुभगा शोभनकीर्तिमती प्रेयसीति वा । **सौख्या** सुखाय हिता । स्त्रीषु सौभाग्यं दातुं शीलं यस्याः सा स्त्रीषु **सौभाग्यदायिनी** ॥ १६४ ।

शंसनीयचरित्रा, शातिताशेषपातका, (९५०) षड्गुणैश्वर्यसंपन्ना, षडङ्गश्रुतिरूपिणी ॥ १६१ ।

षण्डिताहारिसलिला, स्त्यायन्नदनदीशता, सरिद्वरा, सुरसा, सुप्रभा, सुरदीर्घिका ॥ १६२ ।

स्वः सिन्धु, सर्वदुःखघ्नी, (९६०) सर्वव्याधिमहौषधा, सेव्या, सिद्धि, सती, सूक्ती, स्कन्दसू, सरस्वती ॥ १६३ ।

सम्पत्तरङ्गिणी, स्तुत्या, स्थाणुमौलिकृतालया, (९७०) स्थैर्यदा, सुभगा, सौख्या, स्त्रीषु सौभाग्यदायिनी ॥ १६४ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वर्गनिःश्रेणिका सूक्ष्मा स्वधा स्वाहा सुधाजला ।
समुद्ररूपिणी ९८० स्वर्ग्या सर्वपातकवैरिणी ॥ १६५ ।

स्मृताघहारिणी सीता संसाराब्धितरण्डिका ।
सौभाग्यसुन्दरी सन्ध्या सर्वसारसमन्विता ॥ १६६ ।

हरप्रिया हृषीकेशी ९९० हंसरूपा हिरण्मयी ।
हृताघसंघा हितकृद् हेलाहेलाघगर्वहृत् ॥ १६७ ।

स्वर्गनिःश्रेणिका स्वर्गैकसोपाना । तदुक्तं काशीसारे—'या ह्येषा सर्वजन्तूनां या स्वर्गसरणिर्नृणाम्' इति । सूक्ष्मा इन्द्रियाद्यगोचरा । स्वधा पितृपत्नी मन्त्ररूपा वा । स्वाहाऽग्निभार्या मन्त्ररूपा वा । सुधाऽमृतं तत्तुल्यं जलं यस्याः सा सुधाजला । समुद्ररूपिणी समुद्रपत्नी तद्रूपा वा । समुद्रपूरणीति क्वचित्पाठः । ९८० । स्वर्ग्या स्वर्गाय हिता । सर्वपातकवैरिणी ब्रह्महत्यादिनाशिनी ॥ १६५ ।

स्मृता सती स्मृतानां वाऽघहारिणी स्मृताघहारिणी । सीता लाङ्गलपद्धतिः गङ्गाप्रभेदो विष्णोर्माया जानकीति वा । संसाराब्धितरण्डिका भवसमुद्रे तरण्डिका । तरण्डकमिति क्वचित् । सौभाग्यरूपा चासौ सुन्दरी च सौभाग्येन वा सुन्दरी सौभाग्यसुन्दरी । सम्यग् ध्या सन्ध्या ब्रह्मज्ञानस्वरूपा सन्ध्यारूपा वा । सर्वसारसमन्विता सर्वशक्तियुक्तेत्यर्थः ॥ १६६ ।

हरप्रिया शिवकान्ता । हृषीकेशी इन्द्रियाणां नियन्त्री हृषीकेशपत्नीति वा ९९० । हंसरूपा शुद्धस्वरूपा हंसरूपधारिणीति वा । 'तस्याऽहं हंसरूपेण सकाशमगमं तदेति' भागवतोक्तेः । हिरण्मयी ज्ञानस्वरूपा स्वर्णमयीति वा । हृताघसंघा क्षपितपापसमूहा । हितकृद्धितैषिणी । हेला श्रृङ्गारभावरूपा । ह ईश्वर इला भूमिराश्रयो यस्याः सेति वा । हेलाघ गर्वहृत् लीलया पापमदनाशिनी । अघं च गर्वश्चाघगर्वौ हेलया तौ हरतीति वा ॥ १६७ ।

स्वर्गनिःश्रेणिका, सूक्ष्मा, स्वधा, स्वाहा, सुधाजला, समुद्ररूपिणी, (९८०) स्वर्ग्या, सर्वपातकवैरिणी ॥ १६५ ।

स्मृताघहारिणी, सीता, संसाराब्धितरंडिका, सौभाग्यसुन्दरी, सन्ध्या, सर्वसारसमन्विता ॥ १६६ ।

हरप्रिया, हृषीकेशी, (९९०) हंसरूपा, हिरण्मयी, हृताघसंघा, हितकृत्, हेला, हेलाघगर्वहृत् ॥ १६७ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्षेमदा क्षालिताघौघा क्षुद्रविद्राविणी क्षमा१००० ।
इति नामसहस्रं हि गङ्गायाः कलशोद्भव ।
कीर्तयित्वा नरः सम्यग्गङ्गास्नानफलं लभेत् ।। १६८ ।
सर्वपापप्रशमनं सर्वविघ्नविनाशनम् ।
सर्वस्तोत्रजपाच्छ्रेष्ठं सर्वपावनपावनम् ।। १६९ ।
श्रद्धयाऽभीष्टफलदं चतुर्वर्गसमृद्धिकृत् ।
सकृज्जपादवाप्नोति ह्येकक्रतुफलं मुने ।। १७० ।
सर्वतीर्थेषु यः स्नातः सर्वयज्ञेषु दीक्षितः ।
तस्य यत्फलमुद्दिष्टं त्रिकालपठनाच्च तत् ।। १७१ ।
सर्वव्रतेषु यत्पुण्यं सम्यक् चीर्णेषु वाडव ।
तत्फलं समवाप्नोति त्रिसन्ध्यं नियतः पठन् ।। १७२ ।

क्षेमदा कल्याणदा । क्षालिताघौघा नाशितपापसञ्चया । क्षुद्रविद्राविणी दुष्टानां विघातिनी । क्षमा पृथ्वीरूपा सहनस्वभावा वा १००० ।

गङ्गानामसहस्रेऽस्मिन् विवृते दशमे शते ।
यददृष्टमभूदत्र तद्विश्वेशे समर्पितम् ।। १० ।। १६८ ।

श्रद्धया पठितं सदिति शेषः ।। १७० ।

वाडव ब्राह्मण हे तत्त्वज्ञेत्यर्थः । स ब्राह्मणः केन स्यादिति श्रुतेः ।। १७२ ।

क्षेमदा, क्षालिताघौघा, क्षुद्रविद्राविणी, क्षमा (१०००)[1] ।

हे कलशोद्भव ! गंगा के इस सहस्रनाम का कीर्तन करने से नर गंगास्नान के सम्यक् फल को प्राप्त कर लेता है ।। १६८ ।

यह सहस्रनाम सर्वपापविनाशक, समस्त विघ्ननिवारक, समग्र स्तोत्रपाठ से श्रेष्ठ एवं अशेष पवित्रों का भी पावन है ।। १६९ ।

श्रद्धापूर्वक पाठ करने से यह अभीष्टफल का दायक और चतुर्वर्ग के समृद्धि का कारक है। हे मुने ! इसका एक बार पाठ करने से एक यज्ञफल प्राप्त होता है ।। १७० ।

जो सब तीर्थों में स्नात हो और सब यज्ञों में दीक्षित हो, उसके लिये जो फल निर्दिष्ट है, वही फल इस स्तोत्र के त्रिकाल पढ़ने से प्राप्त होता है ।। १७१ ।

ब्रह्मन् ! समस्त व्रतों के पूर्णरूप से आचरण करने में जो फल होता है, नियमपूर्वक इस स्तोत्र के त्रिसन्ध्य पठन से भी वही फल मिल जाता है ।। १७२ ।

---

१. इस गङ्गासहस्रनाम-स्तोत्र की यह विशेषता है कि इसमें (सहस्रनाम में) प्रायः वर्णमाला के वर्ण क्रमानुसार हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्नानकाले पठेद्यस्तु यत्र कुत्र जलाशये ।
तत्र सन्निहिता नूनं गङ्गा त्रिपथगा मुने ॥ १७३ ।
श्रेयोऽर्थी लभते श्रेयो धनार्थी लभते धनम् ।
कामी कामानवाप्नोति मोक्षार्थी मोक्षमाप्नुयात् ॥ १७४ ।
वर्षं त्रिकालपठनाच्छ्रद्धया शुचिमानसः ।
ऋतुकालाभिगमनादपुत्रः पुत्रवान् भवेत् ॥ १७५ ।
नाऽकालमरणं तस्य नाऽग्निचोराहिसाध्वसम् ।
नाम्नां सहस्रं गङ्गाया यो जपेच्छ्रद्धया मुने ॥ १७६ ।
गङ्गानामसहस्रन्तु जप्त्वा ग्रामान्तरं व्रजेत् ।
कार्यसिद्धिमवाप्नोति निर्विघ्नो गेहमाविशेत् ॥ १७७ ।
तिथिवारर्क्षयोगानां न दोषः प्रभवेत्तदा ।
यदा जप्त्वा व्रजेदेतत्स्तोत्रं ग्रामान्तरं नरः ॥ १७८ ।
आयुरारोग्यजननं सर्वोपद्रवनाशनम् ।
सर्वसिद्धिकरं पुंसां गङ्गानामसहस्रकम् ॥ १७९ ।
जन्मान्तरसहस्रेषु यत्पापं सम्यगर्जितम् ।
गङ्गानामसहस्रस्य जपनात्तत्क्षयं व्रजेत् ॥ १८० ।

मुने ! कहीं किसी भी जलाशय में स्नान करने के समय यदि कोई इसे पढ़े, तो त्रिपथगा गंगा वहाँ पर अवश्य ही प्राप्त हो जाती हैं ॥ १७३ ।

इस स्तोत्र के पाठ से कल्याणेच्छु जन को कल्याण, धनार्थी को धन, कामनावाले को मनोरथ और मुमुक्षु को मोक्ष का लाभ होता ॥ १७४ ।

पवित्रचित्त होकर श्रद्धापूर्वक एक वर्ष त्रिकाल पाठ से अपुत्र जन भी ऋतुकाल में संगम करने से पुत्रवान् हो जाता है ॥ १७५ ।

ऋषे ! जो कोई श्रद्धा से इस गंगासहस्रनाम का जप करे, उसे न अकाल मृत्यु होवे, न अग्नि-चोर और सर्पादि का भय प्राप्त होवे ॥ १७६ ।

गंगा के सहस्रनाम का जप करके ग्रामान्तर में यात्रा करने से वहाँ पर यात्री की कार्यसिद्धि होती है और निर्विघ्नतापूर्वक अपने घर को लौट आता है ॥ १७७ ।

जब मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करके किसी दूसरे स्थान को जावे तो तिथि, वार, नक्षत्र और योग कोई दोष कुछ भी हानि नहीं कर सकता ॥ १७८ ।

यह गंगा का सहस्रनाम, पुरुषों का आयुष्यवर्द्धक, आरोग्यजनक, सर्वोपद्रवनाशक एवं समस्त सिद्धिकारक है ॥ १७९ ।

सहस्रजन्मान्तरों के उपार्जित पाप, गंगा के सहस्रनाम जपने से ही क्षय हो जाते हैं ॥ १८० ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब्रह्मघ्नो मद्यपः स्वर्णस्तेयी च गुरुतल्पगः।
तत्संयोगी भ्रूणहन्ता मातृहा पितृहा मुने ॥ १८१ ।
विश्वासघाती गरदः कृतघ्नो मित्रघातकः।
अग्निदो गोवधकरो गुरुद्रव्यापहारकः ॥ १८२ ।
महापातकयुक्तोऽपि संयुक्तोऽप्युपपातकैः।
मुच्यते श्रद्धया जप्त्वा गङ्गानामसहस्रकम् ॥ १८३ ।

उपपातकैर्गोवधादिभिः इत्यादि बहुवचनान्ताः शब्दा गणस्य संसूचका भवन्तीति न्यायाद् बहुवचनेन जातिभ्रंशकरणसंकलीकरणापात्रीकरणमलिनीकरणानि गृह्यन्ते। तानि च मनुनोक्तानि—

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः।
महान्ति पातकान्याहुः संसर्गश्चापि तैः सह ॥
गोवधोऽयाज्यसंयाज्यं पारदार्यात्मविक्रयौ।
गुरुमातृपितृत्यागः स्वाध्यायाग्न्योः सुतस्य च ॥
परिवित्तिताऽनुजेन परिवेदनमेव च।
तयोर्दानं च कन्यायास्तयोरेव च याजनम् ॥
कन्याया दूषणं चैव वार्धुषित्वं व्रताच्च्युतिः।
तडागारामदाराणामपत्यस्य च विक्रयः ॥
व्रात्यताबान्धवत्यागो भृतकाध्यापनं तथा।
भृताद‌ध्ययनं दानमपत्यानां च विक्रयः ॥
सर्वाकरेष्वधीकारो महायन्त्रप्रवर्तनम्।
हिंसौषधीनां स्त्रीजीवोऽभिचारो मूलकर्म च ॥
इन्धनार्थमशुष्काणां द्रुमाणामवपातनम्।
आत्मार्थं च क्रियारम्भो निन्दितान्नादनं तथा ॥
अनाहिताग्नितास्तैन्यमृणानामनपक्रिया।
धान्यकुप्यपशुस्तेयमपत्यस्त्रीनिषेवणम् ॥
स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधो नास्तिक्यं चोपपातकम्।
ब्राह्मणस्य रुजः कृत्या घ्रातिरघ्रेयमद्ययोः ॥

मुने! ब्रह्मघाती, मद्यप, सुवर्णचोर, गुरुदाराभिगामी, इन चारों पापियों का संसर्गी, भ्रूण (बाल) हंता, मातृघाती, पितृहा, विश्वासघाती, विषदाता, कृतघ्न, मित्रघाती, आग लगाने वाला, गोवधकर्ता, गुरुद्रव्यतस्कर, कोई भी सब महापातकों से युक्त अथवा उपपातकों से परिपूर्ण क्यों न हो; परन्तु श्रद्धापूर्वक इस गंगासहस्रनाम के पाठ करने से उन सब से मुक्त हो जाता है ॥ १८१-१८३।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आधिव्याधिपरिक्षिप्तो घोरतापपरिप्लुतः ।
मुच्यते सर्वदुःखेभ्यः स्तवस्याऽस्याऽनुकीर्तनात् ॥ १८४ ।
संवत्सरेण युक्तात्मा पठन् भक्तिपरायणः ।
अभीप्सितां लभेत्सिद्धिं सर्वैः पापैः प्रमुच्यते ॥ १८५ ।
संशयाविष्टचित्तस्य धर्मविद्वेषिणोऽपि च ।
दाम्भिकस्याऽपि हिंस्रस्य चेतो धर्मपरं भवेत् ॥ १८६ ।
वर्णाश्रमपथीनस्तु कामक्रोधविवर्जितः ।
यत्फलं लभते ज्ञानी तदाप्नोत्यस्य कीर्तनात् ॥ १८७ ।
गायत्र्ययुतजप्येन यत्फलं समुपार्जितम् ।
सकृत्पठनतः सम्यक् तदशेषमवाप्नुयात् ॥ १८८ ।
गां दत्वा वेदविदुषे यत्फलं लभते कृती ।
तत्पुण्यं सम्यगाख्यातं स्तवराजसकृज्जपात् ॥ १८९ ।

जैह्म्यं पुंसि च मैथुन्यं जातिभ्रंशकरं स्मृतम् ।
खराश्वोष्ट्रमृगेभानामजाविकवधस्तथा ॥
संकलीकरणं ज्ञेयं मीनाहिमहिषस्य च ।
निन्दितेभ्यो धनादानं वाणिज्यं शूद्रसेवनम् ।
अपात्रीकरणं ज्ञेयमसत्यस्य च भाषणम् ॥
कृमिकीटवयोहत्या मद्यानुगतभोजनम् ।
फलैधः कुसुमस्तेयमधैर्यं च मलावहम् ॥ इति ॥ १८३ ।

आधि-व्याधियों से प्रपीड़ित, घोर ताप से ग्रस्त भी मनुष्य इस स्तव के कीर्तन करने से समग्र दुःखों से छूट जाता है ॥ १८४ ।

एकाग्रचित्त और भक्तितत्पर होकर वर्षमात्र इस स्तोत्र के पाठ करने से अभीष्ट सिद्धि को पाता है और समस्त पापों से भी छूट जाता है ॥ १८५ ।

(इस सहस्रनामस्तोत्र के पाठ से) सन्देहग्रस्तचित्त, धर्मविद्वेषी, दांभिक और हिंसक जन का भी अन्तःकरण से धर्मपरायण हो जाता है ॥ १८६ ।

वर्णाश्रमपथाचारी और काम-क्रोध से रहित ज्ञानी नर जो फललाभ करता है, इस स्तोत्र के कीर्तन करने से भी वही फल प्राप्त होता है ॥ १८७ ।

दशसहस्र गायत्री जप करने में जो फल मिलता है, इस स्तोत्र के सम्यक् प्रकार से एक बार पढ़ने ही में वह सब फल प्राप्त हो जाता है ॥ १८८ ।

सुकृती जन वेदवेत्ता को गोदान करके जो पुण्य प्राप्त करते हैं, वह समस्त पुण्य इस स्तवराज के एक बार मात्र जप करने से प्राप्त होता है, ऐसा (शास्त्रों में) कहा गया है ॥ १८९ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरुशुश्रूषणं कुर्वन् यावज्जीवं नरोत्तमः ।
यत्पुण्यमर्जयेत्तद्भाग्वर्षं त्रिषवणं जपन् ॥ १९० ॥
वेदपारायणात्पुण्यं यदत्र परिपठ्यते ।
तत् षण्मासेन लभते त्रिसन्ध्यं परिकीर्तनात् ॥ १९१ ॥
गङ्गायाः स्तवराजस्य प्रत्यहं परिशीलनात् ।
शिवभक्तिमवाप्नोति विष्णुभक्तोऽथवा भवेत् ॥ १९२ ॥
यः कीर्तयेदनुदिनं गङ्गानामसहस्रकम् ।
तत्समीपे सहचरी गङ्गादेवी सदा भवेत् ॥ १९३ ॥
सर्वत्र पूज्यो भवति सर्वत्र विजयो भवेत् ।
सर्वत्र सुखमाप्नोति जाह्नवीस्तोत्रपाठतः ॥ १९४ ॥
सदाचारी स विज्ञेयः स शुचिस्तु सदैव हि ।
कृतसर्वसुरार्चः स कीर्तयेद्य इमां स्तुतिम् ॥ १९५ ॥
तस्मिंस्तृप्ते भवेत्तृप्ता जाह्नवी नात्र संशयः ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गङ्गाभक्तं समर्चयेत् ॥ १९६ ॥

वेदपारायणाद् उपवासपूर्वकं समग्रायाः स्वशाखायाः पाठात् । अत्र जगति ॥ १९१ ।

सहचरी सखी । तन्निकटे कृतवासेत्यर्थः ॥ १९३ ।

पुरुषश्रेष्ठ, यावज्जीवन गुरु की शुश्रूषा करके जो पुण्य उपार्जन करता है, वर्ष भर त्रिकाल इस स्तोत्र के जप से भी उसी पुण्य का भागी होता है ॥ १९० ।

वेदपारायण करने का जो पुण्य शास्त्रों में कहा जाता है, वही पुण्य छः मास-पर्यन्त त्रिसन्ध्य इस स्तोत्र के परिकीर्तन से प्राप्त होता है ॥ १९१ ।

प्रतिदिन इस गंगास्तवराज के अनुशीलन करने से शिव की भक्ति मिलती है अथवा विष्णु का भक्त हो जाता है ॥ १९२ ।

जो कोई प्रत्यह गंगा के सहस्रनाम का पाठ करता है, तो गंगादेवी सर्वदा उसके समीप में सहचरी होकर रहती हैं ॥ १९३ ।

इस जाह्नवीस्तोत्र के पाठ करने से (मनुष्य) सर्वत्र पूज्य, सर्वत्र विजयी और सर्वत्र सुखभोगी होता है ॥ १९४ ।

जो व्यक्ति इस स्तुति का कीर्तन करे, उसे सदाचारी, सर्वदा पवित्र और समस्त देवताओं का पूजक समझना चाहिए ॥ १९५ ।

उस जन की तृप्ति कर देने से जाह्नवी स्वयं तृप्त हो जाती हैं, इसमें सन्देह नहीं है, अतएव सब प्रकार से गंगा के भक्त का समर्चन करना चाहिए ॥ १९६ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्तवराजमिमं गाङ्गं शृणुयाद्यश्च वै पठेत् ।
श्रावयेदथ तद्भक्तान् दम्भलोभविवर्जितः ॥ १९७ ।
मुच्यते त्रिविधैः पापैर्मनोवाक्कायसम्भवैः ।
क्षणान्निष्पापतामेति पितॄणां च प्रियो भवेत् ॥ १९८ ।
सर्वदेवप्रियश्चापि सर्वर्षिगणसम्मतः ।
अन्ते विमानमारुह्य दिव्यस्त्रीशतसंवृतः ॥ १९९ ।
दिव्याभरणसम्पन्नो दिव्यभोगसमन्वितः ।
नन्दनादिवने स्वैरं देववत् स प्रमोदते ॥ २०० ।
भुज्यमानेषु विप्रेषु श्राद्धकाले विशेषतः ।
जपन्निदं महास्तोत्रं पितॄणां तृप्तिकारकम् ॥ २०१ ।
यावन्ति तत्र सिक्थानि यावन्तोऽम्बुकणाः स्थिताः ।
तावन्त्येव हि वर्षाणि मोदन्ते स्वः पितामहाः ॥ २०२ ।

स्वैरं स्वेच्छया ॥ २०० ।

भुज्यमानेष्विति । इदं सहस्रनाम यो जपन् भवति तस्य पितॄणामिदं स्तोत्रं तृप्तिकारकं भवतीत्यर्थः ॥ २०१ ।

सिक्थानि अन्नलेशाः कणा इति यावत् ॥ २०२ ।

जो कोई इस गंगास्तवराज को श्रवण करे, किं वा पाठ करे, अथवा दंभ-लोभ से रहित होकर गंगा के सेवकों को सुनावे, वह कायिक, वाचिक, मानसिक इन त्रिविध पापों से छूटकर तुरन्त निष्पाप हो जाता है और पितृगण का प्रेमपात्र होता है ॥ १९७-१९८ ।

और भी समस्त देवताओं का प्रिय होता है, एवं सब ऋषिगण उसे मानने लगते हैं। अन्त में वह विमान पर चढ़ स्वर्गीय शतशः स्त्रियों से परिवृत्त होकर दिव्य भूषणों को पहन एवं दिव्य भोगों से सम्पन्न होकर नन्दन प्रभृति वनों में स्वेच्छानुसार देवताओं के समान प्रमुदित होता है ॥ १९९-२०० ।

विशेषतः श्राद्ध के समय जब पात्रीय ब्राह्मण भोजन करने लगें, तब पितरों के तृप्तिकारक इस महास्तोत्र के जप करते रहने से पात्र में जितने ही अन्नकण एवं जलकण स्थित रहते हैं, उतने वर्षपर्यन्त स्वर्गलोक में पितर लोग आनन्द करते हैं। ॥ २०१-२०२ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा प्रीणन्ति पितरो गङ्गायां पिण्डदानतः ।
तथैव तृप्नुयुः श्राद्धे स्तवस्याऽस्याऽनुसंश्रवात् ॥ २०३ ।
एतत्स्तोत्रं गृहे यस्य लिखितं परिपूज्यते ।
तत्र पापभयं नास्ति शुचि तद्भवनं सदा ॥ २०४ ।
अगस्ते ! किं बहूक्तेन श्रृणु मे निश्चितं वचः ।
संशयो नाऽत्र कर्तव्यः सन्देग्धरि फलं न हि ॥ २०५ ।
यावन्ति मर्त्ये स्तोत्राणि मन्त्रजालान्यनेकशः ।
तावन्ति स्तवराजस्य गाङ्गेयस्य समानि न ॥ २०६ ।
यावज्जन्म जपेद्यस्तु नाम्नामेतत्सहस्रकम् ।
स कीकटेष्वपि मृतो न पुनर्गर्भमाविशेत् ॥ २०७ ।
नित्यं नियमवानेतद्यो जपेत्स्तोत्रमुत्तमम् ।
अन्यत्राऽपि विपन्नः स गङ्गातीरे मृतो भवेत् ॥ २०८ ।

कीकटेषु गयाप्रदेशेषु ॥ २०७ ।

गंगा में पिण्डदान करने से पितृगण जैसे तृप्त होते हैं, श्राद्ध में इस स्तोत्र के श्रवण से भी वैसे ही तृप्ति-लाभ करते हैं ॥ २०३ ।

जिसके गृह में यह स्तोत्र लिखित होकर पूजा जाता है, वहाँ पर पाप का भय नहीं रहता और वह भवन सर्वदैव पवित्र रहता है ॥ २०४ ।

अगस्त्य जी ! बहुत कहाँ तक कहें, मेरा यह निश्चित वचन सुनो, इस विषय में सन्देह नहीं करना चाहिए; क्योंकि सन्देहयुक्त मनुष्य को फल नहीं मिलता ॥ २०५ ।

पृथिवी में जो सब नाना प्रकार के स्तोत्र और मन्त्रजाल हैं, वे सभी इस गंगास्तवराज के समान (कदापि) नहीं हैं ॥ २०६ ।

जो कोई जन्म भर इस गंगासहस्रनाम का पाठ करे, तो वह मगधदेश में भी मरने पर फिर गर्भ में प्रवेश नहीं करे ॥ २०७ ।

जो व्यक्ति नित्य नियमपूर्वक इस उत्तम स्तोत्र का पाठ करता है, वह अन्यत्र कहीं भी मृत्यु पाने पर गंगातीर में मृत्युगत (प्राणी) के समान होता है ॥ २०८ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एतत्स्तोत्रवरं रम्यं पुरा प्रोक्तं पिनाकिना।
विष्णवे निजभक्ताय मुक्तिबीजाक्षरास्पदम् ॥ २०९ ।

गङ्गास्नानप्रतिनिधिः स्तोत्रमेतन्मयेरितम् ।
सिस्नासुर्जाह्नवीं तस्मादेतत्स्तोत्रं जपेत्सुधीः ॥ २१० ।

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे काशीखण्डे गङ्गासहस्रनामकथनं नामैकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ।

मुक्तीति । मुक्तेः कैवल्यस्य बीजभूतानि यान्यक्षराणि तेषामास्पदमाश्रयः, मोक्ष-कारणभूतब्रह्मास्पदं वा मुक्तिबीजं च तदक्षरस्य ब्रह्मणा आस्पदं चेति वा ॥ २०९ ।

प्रतिनिधिस्तुल्यम् । सिस्नासुर्गङ्गायां मज्जनस्नानमन्तरेणाऽपि गङ्गास्नानेच्छुः ।

माताऽपि सन्त्यजेत्पुत्रमिति शास्त्रप्रमाणतः ।
त्राहि मां त्रिजगन्मातर्गङ्गे विष्णुपदोद्भवे ॥ २१० ।

॥ इति श्रीरामानन्दकृतायां काशीखण्डटीकायामेकोनत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ २९ ।

पूर्व काल में भगवान् शिव ने निज-भक्त विष्णु से मुक्ति के बीजरूप अक्षरों के आश्रय इस रमणीय स्तोत्रराज को कहा था । (भगवती भागीरथी) गंगा के स्नान का प्रतिनिधि वही स्तोत्र मैंने (आज तुमसे) कहा, अतएव जो बुद्धिमान् जन गंगास्नान की अभिलाषा रखता हो, वह इसी स्तोत्र का पाठ करे ॥ २०९-२१० ।

चौ०—अति पवित्र गंगा के नामा । हैं सहस्र जे पूरक कामा ॥
अकारादि क्रमते ते वरने । कहत सुनत सब पातक हरने ॥ १ ॥

दोहा—सहस नाम नहिं लखि पड़े, कतहुँ पुरानन माहिं ।
गंगा के हैं जो कहे, जेहि सुनि पाप पराहिं ॥ २ ॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे चतुर्थे काशीखण्डे पूर्वार्धे भाषायां गंगासहस्रनामस्तोत्र-वर्णनं नामैकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः
श्रुतम् मे गोपाय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi